असली अक्सी

# मीलादे अकबर

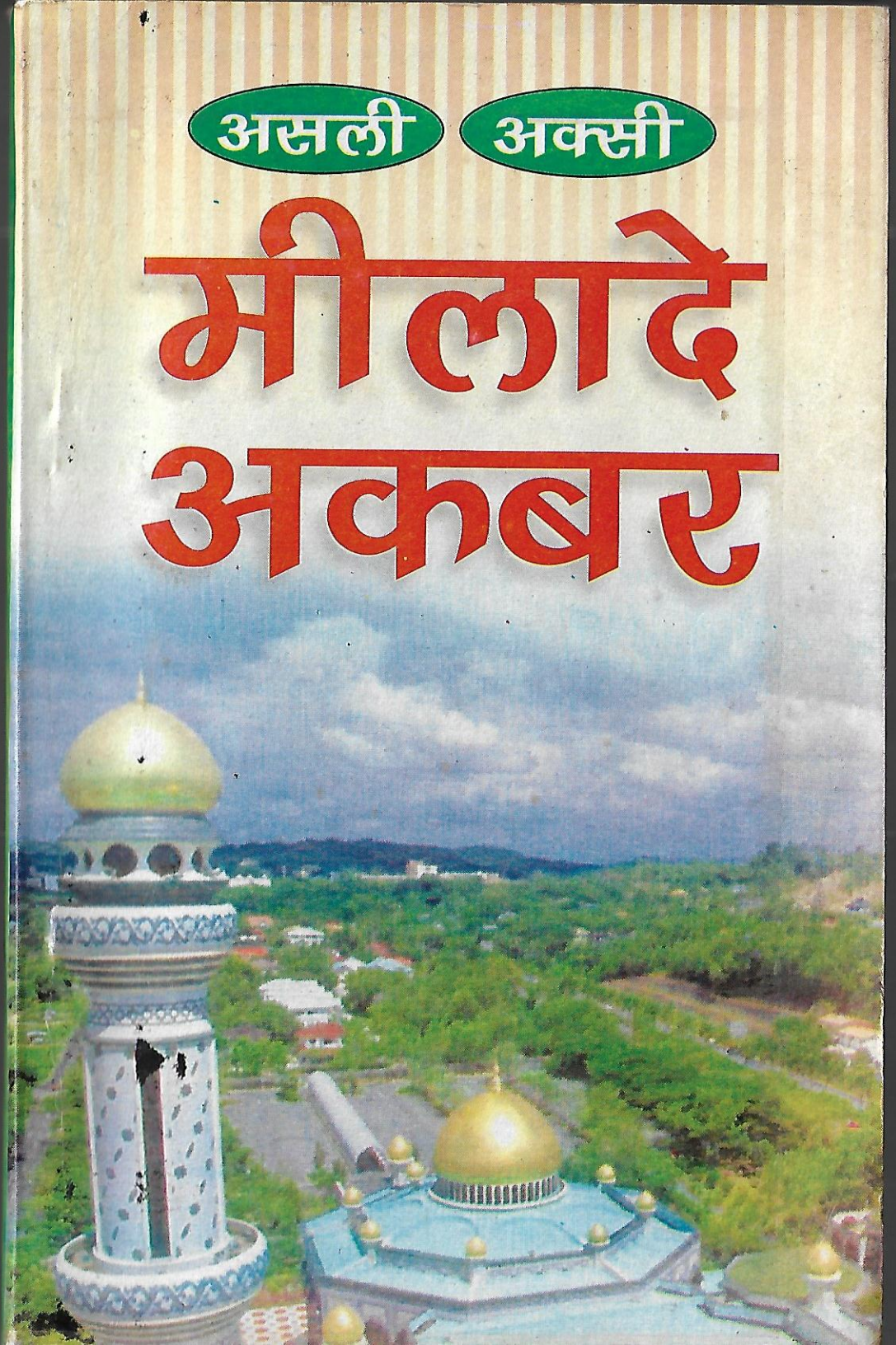

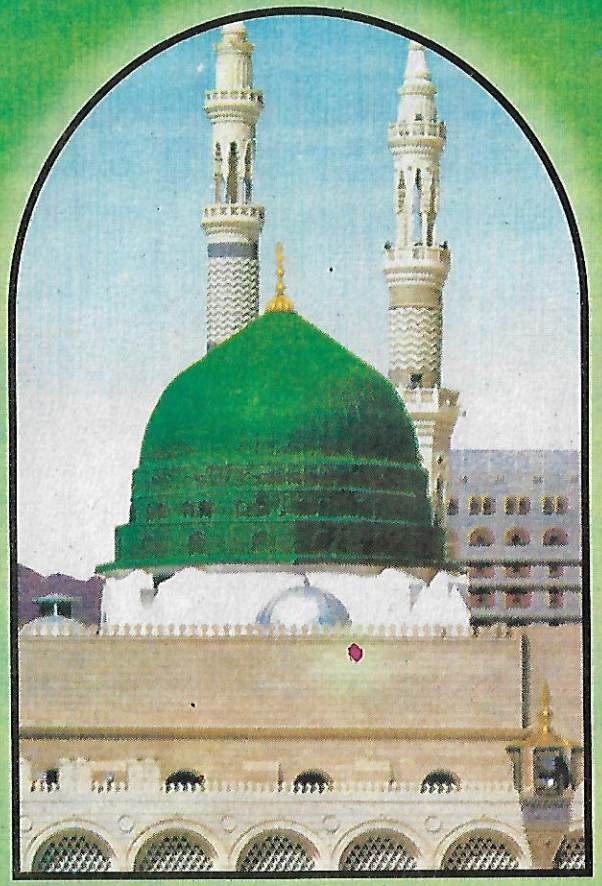

अब्दुल मोईद बुकसेलर
मूलगंज कानपूर

Rs. 25/-

असली अक्सी

# मिलादे अकबर

## "वारसी"

इज़ाफ़ागुदा मय नातिया कलाम

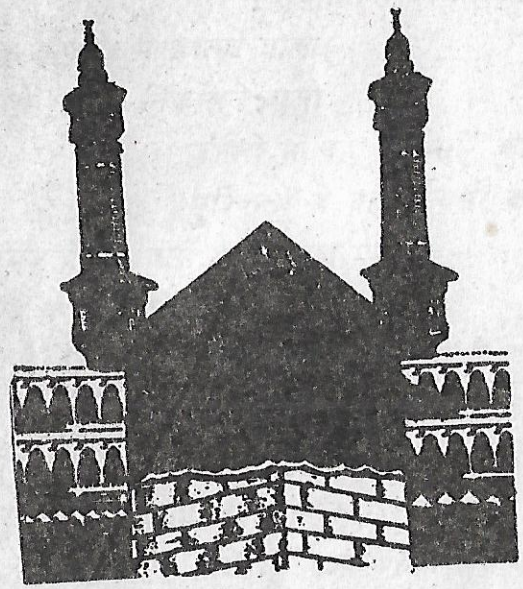

लेखक :

ख़्वाजा मुहम्मद अकबर "वारसी" (मेरठी)

# दुरूदे ताज

## बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह हुम्म सल्लेअला सैयदेना व मौलाना मुहम्मदिन साहेबित ताजे वल मेअराजे वल बुराक़े वल अंलम दाफ़े इल बलाए वल वबाए वल क़हते वल मरादे वल अलम इस मुहू मक्तु बूस मरफ़ूउम मशफ़ूउम मन कुशु फ़िल लौहे वल कलम। सैयेदिल अरबे वल अजम जिस्मुहू मुक़द दसु मुअत तरूम मुतह हरूम ० मुनव्वरून फ़िल बैते वल हरम शमशुद दुह बदरूद दुजा सदरिल उला नूरिल हुदा कहफ़िल वरा मिस बाहिज़ ज़ुलम ० जमीलिशशी यम शफ़ीइल उमम साहे बिल जूदे वल करम वल्लाह आसे मुहू ० व जिब्रईलु ख़ादेमुहू वल बुराकु मर कबुहू ० वल मेअराजु सफ़रूहू व सिद रतुल मुनतहा मका मुहू व काब कव सैने मत लूबुह वल मत लूबु मक सूदुहू वल मक सूद मौजूदुहू लेयदिल मर सलीना ख़ाते मिन नबय्यीना शफ़ीइल मुजनबीन अनासिल ग़रीबीन रहमतल लिल आलमीन राहतिल आशेक़ीन मुरादिल मुशताक़ीन शमसिल आरेफ़ीन सिरा जिस सालेकीन मिस बाहिल मुकर रबीन ० मुहि बबिल फ़ुक़ रा वल गुरबाए वल मसाकीन सैयेदिस सक़ लैने नबीयिल हर मैने इमामित क़िब ल तैन वसीलतेना फ़िद दारैन साहिबे काब कव सैने मह बूबे रब्बित मशरेक़ैने वल मग़रेबैने जददिल हसने वल हुसैने मौलाना व मौलस सक़ लैने अबिल क़ासिम मुहम्मद इब्ने अबदिल्लाहे नूरिम मिन नूरिल्लाहे य अइयु हल मुशताक़ुन बे नूरे जमाले ही सल्लू अलैहे व आलेही व सल्लेमू तस्लीमा।

*पढ़ो दुरूद पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ो*
*दुरूद से कभी ग़ाफ़िल न हो दुरूद पढ़ो।*

## फ़ज़ाएले दुरूद शरीफ़

इन्नल्लाह व मलाए क-त-हू यू सल्लुन अलन नबी या अय्युहल लज़ी



आमनू सल्लू अलैहे वसल्लेमू तस्लीमा। यानी (तहक़ीक़ अल्लाह तआला जल्लशानुहू और फ़रिश्ते उसके दुरूद भेजते हैं नबी पर ऐ ईमान वालो! तुम भी दुरूद भेजो उन पर और सलाम) अब इसमें और कौन सी फ़ज़ीलत होगी कि यह ख़ुद ख़ुदा का फ़ेल है, और हमारे लिये हुक्म नातीक है, एक तो तक़लीदे ख़ुदा। दूसरे तामीले हुक्मे ख़ुदा। जो शख़्स एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़े उस पर दस रहमतें नाज़िल हों, दस गुनाह धुल जाएं, दस नेकियां आमाल नामे में लिखी जाएं, दस मुरातिब बुलन्द हों, इस आयतं शरीफ़ से ज़ाहिर है कि अल्लाह पाक जल्लशानुहू अपने प्यारे महबूब हज़रत अहमद मुजतबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल० की शाने अज़मत व रफ़अत क़द्र व मनज़िलत से मोमिन को आगाह फ़रमाता है कि, दुरूद भेजता हूं मैं अपने मलाएका के साथ और मोमीनों को हुक्म करता हूं कि तुम भी दुरूद भेजो, इससे किस क़द्र तौक़ीर व ताज़ीम व एज़ाज़ व तकरीम रसूले करीम (सल्ल०) का पता मिलता है, न किसी नबी के लिये ऐसा हुक्म आया है, न किसी फ़रिश्ते ने एज़ाज़ पाया है, चाहिए कि कोई बात भूल जाए या कोई चीज़ खोई जाए तो दुरूद शरीफ़ पढ़े, बात याद आ जायेगी और गुमशुदा चीज़ मिल जायेगी घर से निकलने के वक़्त सवारी पर सवार होने के वक़्त बाज़ार जाने और आने पर और ख़रीदो फ़रोख़्त में और किसी चीज़ की ज़रूरत पेश आने में ख़ादिम ग़ुलाम के भाग जाने में, और हर दु:ख दर्द में वबाई इमराज़ में हर क़िस्म के रंजो ग़म में हर तरह की तकलीफ़ व मुसीबत में आग से जल जाने या पानी में डूब जाने के ख़ौफ़ में भूक प्यास में कोई चीज़ अल्लाह पाक से मांगने में खाना खाने पानी पीने मुसाफ़ा करने में किसी नेक महफ़िल में शरीक होने के वक़्त कला मुल्लाह के शुरू में और ख़त्म में अहादीस पढ़ाने और पढ़ने और वह इल्म जो शरअ में जाइज़ हो उस के पढ़ने या पढ़ाने और वह चीज़ जो शरअन देखनी जाइज़ हो और भली मालूम हो बूए गुल व इतर व उम्दा ख़ुशबू पर और औरादे आमाल व वज़ाएफ़ के अव्वल व आख़िर में हर नेक काम में दुरूद शरीफ़

पढ़ना हज़ारों सदक़ात और हसनात और बख़शिश व नजात का ज़रिया इससे अच्छा और कोई नहीं है।

*पढ़ो दुरूंद पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ो*
*दुरूद से कभी ग़ाफ़िल न हो दुरूद पढ़ो*

## कसीदा

*हर दर्द की दवा है सल्ले अला मुहम्मद*
*तावीज़े हर बला है सल्ले अला मुहम्मद*
*महबूबे किबरिया है सल्ले अला मुहम्मद*
*क्या नक़्श ख़ुशनुमा है सल्ले अला मुहम्मद*
*क़ुर्बे ख़ुदा हो हासिल जन्नत में हो वह दाख़िल*
*जिसने लिखा पढ़ा है सल्ले अला मुहम्मद*
*जन्नत मक़ाम होगा दोज़ख़ हराम होगा*
*गर दिलपे लिख लिया है सल्ले अला मुहम्मद*
*उसकी नजात होगी रहमत भी साथ होगी*
*जो पढ़ के मर गया है सल्ले अला मुहम्मद*
*जो दर्द ला दवा हो यह घोल कर पिला दो*
*क्या नुस्ख़ए शिफ़ा है सल्ले अला मुहम्मद*
*कांधा बदलने वालो हमराह चलने वालो*
*पढ़ते चलो रवाहे सल्ले अला मुहम्मद*
*जाने भी दे इरम को रिज़वां न रोक हम को*
*सीने पे लिख रखा है सल्ले अला मुहम्मद*
*मन्ज़िल का है भरोसा अकबर बग़ल में तोशा*
*क्या ख़ूब ले चला है सल्ले अला मुहम्मद*

## हिकायत

मुहम्मद बिन सअदबिन मुतरब का मामूल था कि सोते वक़्त तीन



सौ मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़ा करते थे एक रात ख़्वाब में देखा कि रसूले करीम सल्ल० तशरीफ़ लाए, और फ़रमाया कि "ऐ मुहम्मद बिन सअद जिस मुंह से तू दुरूद पढ़ता है, मेरे पास लाओ कि मैं बोसा लेलूं" उनको शरम आई कि ऐसे पाक मुंह के सामने ऐसा गन्दा मुंह किस मुंह से लाऊं लेकिन चूंकि हुक्म अदब पर फ़ौक़ियत रखता है नाचार अपना रुख़सार सामने किया हुज़ूर ने कमाले मुहब्बत से बोसे के शरफ़ से मुशर्रफ़ फ़रमाया, जिस वक़्त ख़्वाब से बेदार हुआ तो मेरा मकान ख़ुशबू से मुअत्तर व मुअम्बर था, और आठ रोज़ तक रुख़सार व मकान उसकी ख़ुशबू से महकता रहा।

## कसीदा

*जो ख़्याल आया तो ख़्वाब में वह जमाल अपना दिखा गये*
*यह महक महकती लिबास में कि मकान सारा बसा गये*
*हमें दामे ग़म से छुड़ा गये हमें मासियत से बचा गये*
*वह नबी मुहम्मद मुस्तफ़ा कि जो सूए अर्श उला गये*
*यह हलीमा भेद खुला नहीं यह मक़ाम चूनो चरा नहीं*
*तू ख़ुदा से पूछ वह कौन थे तेरी बकरियां जो चरा गये*
*कहीं हुस्न बनके क़बूल में कहीं रंग बनके वह फूल में*
*कहीं नूर बनके रसूलों में वह जमाल अपना दिखा गये*
*हो दुरूद तुमपे हज़ार हा मेरे रहनुमा मेरे नाख़ुदा*
*मेरा पार बेड़ा लगा गये मेरी डूबी कश्ती तिरा गये*
*तेरी झुंटी कुटी बची कुंची जो मिली तो अकबर वारसी*
*वह भरे निशे की तरंग में कि कहीं कहीं की सुना गये*

## हदीस

हज़रत ने फ़रमाया है कि "जो कोई मुझ पर दुरूद भेजे सुबह शाम

तो मेरी शफ़ाअत खुद क़ियामत में उसे ढूंढ लेगी।''

हज़रत ने फ़रमाया है कि "जिस शख़्स ने जुमे के दिन मुझ पर सौ मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ा उसके अस्सी बरस के गुनाह बख़्शे गये''

**हदीस :-** हज़रत ने फ़रमाया है कि "मुझसे जिब्रईल अलै० ने कहा कि जो आप पर दुरूद पढ़ता है उस पर हज़ार फ़रिश्ते सलवात भेजते हैं वह जन्नती हो जाता है''

हज़रत ने फ़रमाया है, 'मन ज़ुकिरतु इनदहू वलम युसल्ले अलैइय फ़क़द जफ़ानी' यानी (जिसके सामने मैं ज़िक्र किया जाऊं और वह दुरूद न पढ़े तो उसने मुझपर बड़ा ज़ुल्म किया) और फ़रमाया व शकेया अबदुन ज़ुकिरत इनदहू फ़लम युसल्ले अलैया' यानी (बदबख़्त हुआ वह बन्दा जिसके सामने ज़िक्र किया जाऊं और ने दुरूद भेजे वह मुझ पर) ग़रज़ कि अक़वाले सादिक़ा और अहादिस सहीह से साबित है कि दुरूद व सलाम दुनिया में वसीला ख़ैरो बरकते उक़बा ज़रीया वख़्शिश व नजात है शिफ़ा देता है बीमारों को और छुड़ा देता है ग़म ग़िरफ़तारों को इस की कसरत से माल में बरकत औलाद में तरक़्क़ी होती है और सबसे से अच्छी बात तो यह है कि इसके पढने वाले को मुहब्बते कामिल जनाबे रसूले अकरम सल्ल० की हो जाती है और आपकी मुहब्बत अल्लाह पाक की मुहब्बत है पस यही ईमान और मदारे इस्लाम है,

## दुरूद

*पढ़ो दुरूद पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ो*
*दुरूद से कभी ग़ाफ़िल न हो दुरूद पढ़ो*
*दुरूदो सलाम ऐ ख़ुदा भेज बेहद*
*बरूहे मुहम्मद व आले मुहम्मद*



## कसीदा

*मोमिन है जिसने रब्त है डाला दुरूद का*
*मदफ़न में उसके होगा उजाला दुरूद का*
*वल लैल जिसकी ज़ुल्फ़ है वश शम्स जिसका रुख़*
*हो ऐसे चांद के लिये हाला दुरूद का*
*दिल ख़ानए ख़ुदा है उसके लिए ज़रुर*
*कुंजी नबी के नामकी ताला दुरूद का*
*है अल्लाह हुम्म सल्लेअला मुस्तफ़ा की धूम*
*इस अंजुमन में है यह उजाला दुरूद का*
*लिख लिख के जाबजा ख़ते सुग़रा से दोस्तो*
*मेरा कफ़न बना दो दोशाला दुरूद का*
*चलकर हुज़ूर क़िबलए कौनेन सब पढ़ें*
*बख़्शिश के वास्ते है कबाला दुरूद का*
*अकबर ग़रीक रहमते रहेमां हो तू कि है*
*आशिक़ नबी का चाहने वाला दुरूद का*

## दुरूद

*दुरूदो सलाम ऐ ख़ुदा भेज बेहद*
*बरूहे मुहम्मद व आले मुहम्मद*
*पढ़ो दुरूद पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ो*
*दुरूद से कभी ग़ाफ़िल न हो दुरूद पढ़ो*

## (2) आदाब महफ़िले मिलाद शरीफ़ #

जगह पाक हो पैसा हलाल कमाई का सर्फ़ किया जाए ख़ुशबू नुज़ूरात अतरयात और फूल वग़ैरह जिस क़दर मुमकिन हो बेहतर है, नमूद रियाको बिल्कुल दख़ल न हो मिमबर या चौकी ऊँची हो उसपर मसनद

या कोई कपड़ा पाक हो आराइश ज़ेबो ज़ीनत का इज़हार मुसर्रत के वास्ते जितनी बन पड़े एहतिमाम करे, ग़ुरबा व मसाकीन वग़ैरह के वास्ते मुयस्सर हो तो खाने का भी इन्तेज़ाम करें फ़ातिहा के वास्ते मुसलमान हलवाई के यहां की बनी हुई शीरीनी हो और रोशनी के वास्ते मोमबत्ती होतो अच्छा है क्योंकि मिट्टी के तेल वग़ैरह की बदबू से भी यह मजलिसे मुबारक पाक होनी चाहिये सामईन व हाज़रीन पाक व साफ़ बा वुज़ू हों और अदबसे बैठें मिलाद शरीफ़ के पढ़ने वाले मुत्तबे शरीअत हों, दुरूद ख़्वानी की बार-बार ताकीद हो।

## ③ फ़ज़ाइल मिलाद शरीफ़ #

ज़िक्र सालेहीनके वक़्त अल्लाह तआला की रहमत का नुज़ूल होता है, चे जाएकि तमाम सालेहीन और मुरसलीन के पेशवा हज़रत अहमद मुजतबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल० का ज़िकरे ख़ैर हो और उस पर यह भी ख़ूबी कि दुरूद शरीफ़ की सदायें बुलंद हों वहां के हाज़रीन पर क्यों न रहमत का नुज़ूल होसामईन को क्यों न नक़द मुददुआ वसूल हो मनक़ूल है कि जिस मकान में यह महफ़िले मुबारक होती है उसपर साल भरतक रहमत का मेंह बरसता है और उस मकान के रहने वाले हिफ़्ज़ व अमान में रहते हैं और बे इन्तेहा ख़ैरो बरकत शामिले हाल रहती है, और मक्का मुअज़्ज़मा व मदीना मुनव्वरा में तो यह हाल है कि जब किसी के यहां लड़का पैदा होता है या ख़त्ना या शादी या नया मकान बने, या सफ़र से कोई वापस आये या बीमारी से सेहत पाए, हर क़िस्म की तक़रीबों में महफ़िले मिलाद शरीफ़ ज़रूर होती है। अल्लाह पाक हम लोगों को भी ऐसी ही तौफ़ीक़ दे कि अपने घरों को और मजलिस को ज़िक्रे मुहम्मदी से मुनव्वर और मुशर्रफ़ किया करें, और तमाम रुसूमाते ख़ुराफ़ात मिस्ले नाच गाना रंग या बाजा वग़ैरह से बचते रहें। आमीन या रब्बिल आलमीन।



## हदीस

एक बुज़ुर्ग ने ख़्वाब में हज़रत को देखा और दरयाफ़्त किया कि "यह मौलूद शरीफ़ की महफ़िल कैसी है? क्यों कि बाज़ लोग इस में कलाम करते हैं" तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि "जो हम से मुहब्बत करता है हम भी उससे मुहब्बत करते हैं" क़ुरबान इन प्यारे अल्फ़ाज़ के साबित हुवा कि यह मुहब्बत के सामान हैं और वाक़ई बग़ैर मुहब्बत के कौन अपना जानो माल फ़िदा करता है।

## ❋ क़सीदा ❋

*मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ले अला की आज महफ़िल है*
*हबीबे किबरिया सल्ले अला की आज महफ़िल है*
*पढ़ो सल्ले अला सल्ले अलां सल्ले अला हरदम*
*कि महबूबे ख़ुदा सल्ले अला की आज महफ़िल है*
*वुज़ू से आएं, बैठें बा अदब भेजें दुरूद उन पर*
*जहां के रहनुमा सल्ले अला की आज महफ़िल है*
*फ़रिश्ते आलमे बाला से सुन सुन कर यह कहते हैं*
*चलो नूरे ख़ुदा सल्ले अला की आज महफ़िल है*
*करम के फूल नेकी के समर रहमत के गुलदस्ते*
*बटेंगे मुस्तफ़ा सल्ले अला की आज महफ़िल है*
*है जिस के नूर से रंगो बहारे गुलशने हस्ती*
*उसी रंगीं अदा सल्ले अला की आज महफ़िल है*
*हुज़ूरी में करें सब पेश सल्लल्लाह की नज़रें*
*कि कुलके पेशवा सल्ले अला की आज महफ़िल है*
*हुए हैं जिसके फ़ैज़े नूर से दोनों जहां पैदा*
*उसी शमशुददुहा सल्ले अला की आज महफ़िल है*

*हुआ है जिस के रुख़ से दाग़े दिल में माहे कामिल को*
*उसी बदरुददुजा सल्ले अला की आज महफ़िल है*
*है अदना मरतबा कौनैन का दरगाह में जिस की*
*उसी शाहेदना सल्ले अला की आज महफ़िल है*
*निकाला जिसने चश्मा आब का उंगली से जंगल में*
*उसी बहरे सख़ा सल्ले अला की आज महफ़िल है*
*दुआयें मांगले जो मांगनी हो हक से ऐ अक्बर*
*तेरे मुश्किल कुशा सल्ले अला की आज महफ़िल है*

हिजाज़ के शहरों में से एक मुक़ाम पर महफ़िल मिलाद शरीफ़ थी। और आलिम बा अमल बयान फ़रमा रहे थे, कि एक साइल ने आकर सवाल किया कि "मैं आले रसूल ग़रीबुल वतन हूं अल्लाह के वास्ते मुझे भी कुछ मिले।" वह साहब जो बयान फ़रमा रहे थे उन्होंने हाज़रीन से कहा कि जो सैयद साइल को एक रुपया दे ख़ुदा उसकी एक बड़ी मुराद पूरी करे" उस वक़्त महफ़िले मुक़द्दस में एक यहूदी का ग़ुलाम भी हाज़िर था, जल्दी से खड़े होकर आलिम साहब से कहने लगा "कि मेरे पास तीन रुपये हैं लीजिए और सैयद साहब को देकर मेरी तीन मुरादें ख़ुदा पाक से पूरी करा दीजिए आलिम साहब ने उससे तीन रुपये लेकर सैयद साहब की ख़िदमत में पेश किए और उस ग़ुलाम से कहा कि "हां भाई बयान करो कि तुम्हारी क्या क्या मुरादें हैं ग़ुलाम ने कहा अव्वल मुराद तो यह है कि मैं एक यहूदी का ग़ुलाम हूं वह मुझे आज़ाद कर दे।" यह सुन कर आलिम साहब ने हाथ उठाया और दुआ मांगी और हाज़रीन से कहा कि "भाईयो! सब दुआ करो कि अल्लाह तआला जल्लशानहू इस ज़िकरे ख़ैर की बरकत से इस ग़ुलाम को आज़ाद कर दे" सब ने दुआ की फिर आलिम साहब ने उस ग़ुलाम से पूछा कि "भाई तुम्हारी दूसरी मुराद क्या है" उस ने कहा "मेरा आक़ा काफ़िर है और मैं मुसलमान हूं कियामत के दिन मैं जन्नत की तरफ़ और मेरा आक़ा दोज़ख़ की तरफ़ रवाना हो इसका मलाल है मैं चाहता हूं कि वह भी



मुसलमान हो जाये" आलिम साहब ने सब हाज़रीन से यह दुआ कराई और ख़ुद भी की और फिर फ़रमाया कि "अब बयान करो कि तीसरी मुराद क्या है" ग़ुलाम ने कहा "तीसरी मुराद यह है कि मेरे आक़ा के गुनाह बख़्शे जायें फिर आलिम साहब ने ख़ुद भी दुआ की और सब हाज़रीन से दुआ करवाई। फिर मौलूद शरीफ़ ख़त्म हुई और सब लोग हिस्से लेकर अपने अपने घर गये, वह ग़ुलाम भी अपने आक़ा के पास हाज़िर हुआ। उसने ग़ुलाम से दरियाफ़्त किया कि "तू कहां गया था बड़ी देर में आया ? ग़ुलाम ने कहा "जनाब ! मैं आज बड़ी भारी सौदागरी में था आज मैं ने बड़े अनमोल सौदे ख़रीदे हैं। इस वजह से देर हो गई।" यहूदी को ग़ुलाम की बातों से सख़्त हैरत हुई कि यह एक मुफ़लिस आदमी था इसने कहां से ऐसी तिजारत की, ख़ैर भाई! फिर हमें भी तो बताओ कि क्या क्या क़ीमती माल ख़रीदा है। फिर तो उस ग़ुलाम ने उससे महफ़िले मिलाद शरीफ़ का हाल और सैयद साहब का आना और आलिम साहब का वह फ़रमान बयान किया और कहा कि "मेरे पास उस वक़्त तीन रुपये थे वह तीनों मुरादें पूरी होने के लिये दे दिये यहूदी ने पूछा "अच्छा बताओ वह क्या-क्या मुरादें तुमने मांगी "ग़ुलाम ने कहा "अव्वल मुराद तो यह थी कि तू मेरा आक़ा है और मैं तेरा ग़ुलाम हूं, तेरी ख़िदमत करना ज़रूरी है और ख़ुदाए तआला मेरा ख़ालिक़ व मालिक है उस की इबादत भी लाज़िम है इस लिये चाहता हूं कि उस आक़ाए हक़ीक़ी का ग़ुलाम बन जाऊं और तू मुझे आज़ाद कर दे चूंकि वह मक़बूल वक़्त में दुआ मांगी थी उसके असर का तीर पहले ही निशानए इजाबत पर पहुंच चुका था, यहूदी ने कहा "ले भाई जा मैं ने तुझे आज़ाद किया अब अपनी दूसरी मुराद बता क्या है।" ग़ुलाम ने सलाम अर्ज़ किया और अर्ज़ की "ऐ आक़ाए नामदार, दूसरी मुराद मेरी यह कि मैंने मुद्दतों तक हुज़ूर का नमक खाया है और मैं मोमिन हूं और तू काफ़िर है क़ियामत के दिन मैं जन्नत की तरफ़ और तू दोज़ख़ की तरफ़ रवाना होगा इस लिये मैं ने दूसरा रुपया दिया कि

दुआ कीजिए कि मेरा आक़ा भी मुसलमान हो जाये। मैं और मेरा आक़ा दोनों जन्नत की तरफ़ साथ-साथ जायें'' यहूदी ने कहा "भई! अगर तेरी यह मुराद है तो मैं ख़ुशी से इस्लाम क़बूल करता हूं और पढ़ता हूं लाइलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' अब बयान करो कि वह तीसरी मुराद क्या है? ग़ुलाम ने कहा कि तीसरी मुराद यह है कि मेरे और आप के गुनाह अल्लाह पाक जल्लशानुहू बख़्श दे। यह सुनकर आक़ा ख़ुश हुआ। फिर रातको वह नौ मुस्लिम ख़्वाब में क्या देखता है कि अल्लाह पाक जल्लजलालुहू व अम्मानवालुहू इरशाद फ़रमाता है कि शाबाश तुझको। जो बात तेरे इख़तियार में थी, यानी ग़ुलाम आज़ाद करना और ख़ुद मुसलमान होना वह तूने किया। और तीसरी मुराद ग़ुलाम की यह है कि तेरे और मेरे ग़ुलाम के गुनाह बख़्शे जायें वह मेरे इख़तियार में है ले यह तीसरी मुराद भी ग़ुलाम की पूरी हुई कि मैंने अपने हबीब कि ज़िक्रे ख़ैर की बरकत से तुझको और तेरे ग़ुलाम को और उस आलिम साहब को और सैयदसाहब साइल को और तमाम हाज़रीन को बख़शा और जन्नतुल फ़िरदौस अता फ़रमाई, "यहूदी जब ख़्वाब से बेदार हुआ तो ग़ुलाम के हमराह आलिम साहब की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और तमाम माजरा ख़्वाब का बयान किया। और अपने ईमान में ख़ूब मुस्तहकम हो गया।

*पढ़ो दुरूद पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ो*
*दुरूद से कभी ग़ाफ़िल न हो दुरूद पढ़ो*

## ❁ क़सीदा ❁

*है महशर में काफ़ी वसीला तुम्हारा*
*तुम आक़ा हो मेरे मैं बंदा तुम्हारा*
*समाए नज़र में खींचे मेरे दिल में*
*यह सूरत तुम्हारी यह नक़्शा तुम्हारा*



*हराम उसपे हो जाए नारे जहन्नम*
*पढ़े सिदक़ दिल से जो कलिमा तुम्हारा*
*क़ियामत में छुटेंगे सस्ते वह ताजिर*
*ख़रीदा है जिस जिसने सौदा तुम्हारा*
*तुम आक़ा हो किसके हमारे हमारे*
*हमें ज़ोम किसका तुम्हारा तुम्हारा*
*ख़बर तुम न लोगे तो फिर कौन लेगा*
*मैं आख़िर भी हूं नामलेवा तुम्हारा*
*जो तुमसे न मांगे यह उसकी ख़ता है*
*सख़ावत का बहता है दरिया तुम्हारा*
*जो कुछ मांगना है तो मांगो उसी से*
*बड़ा देने वाला है दाता तुम्हारा*
*सियाह कारियों से न घबराओ यारो*
*कि हामी है एक कमलीवाला तुम्हारा*
*मकां को है ज़ीनत मकीं के क़दम से*
*है मक्के से अफ़ज़ल मदीना तुम्हारा*
*तमन्ना है 'अक्बर' की रोज़े क़ियामत*
*उठूं पढ़ के मदफ़न से कलिमा तुम्हारा*

**वह कलिमा यह है** "इसरारे अफ़ज़लुज़्ज़िकर लाइलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाहे सल्लल्लाहु अलैहे व सल्लम। इसमें बड़ी ख़ूबियां हैं, सच तो यह है :-

*मुहम्मद से सिफ़त पूछो ख़ुदा की*
*ख़ुदा से पूछ लो शाने मुहम्मद*

अल्लाह जल्लजलालुहू का जो मुहम्मद सल्ल० के साथ लगाव और निस्बत है वह कौन समझ सकता है, हर शख़्स अपनी समझ के मुवाफ़िक़

कह जाता है, यह वह जुमले हैं, एक लाइलाह इल्लल्लाह दूसरा मुहम्मदुर रसूलुल्लाह सल्ल० अव्वल तो यह कि अल्लाह तआला जल्लजलालुहू ने मुहम्मदुर रसूलुल्लाह सल्ल० के नाम को अने नाम के साथ मिलाकर इस कलिमे का तमाम कायनात में डंका बज दिया, दूसरे यह कि इस्लाम में दाख़िल होने का पहला सबक़ यही है तीसरे यूं तो इस कलिमए तैयबा के फ़ज़ाइल में बेइन्तेहा किताबें भी पड़ी हैं जिनका ज़िक्र बख़ौफ़े तवालत। (दराज़गी) नहीं किया जाता, अब इस पर बहस है कि पहले लाइलाह इल्लल्लाह क्यों है, यह इस लिये कि इसके पढ़ने से क़ल्ब साफ़ होता है, मशीयते इलाही यह चाहती है कि पहले इससे अपने दिलों को साफ़ कर लो उस वक़्त मेरे महबूबे पाक सल्ल० का नाम मुहम्मदुर रसूलुल्लाह दिलनशीन करो, ताकि अनवार व तजल्लियाते इलाही दिलों के पाक व साफ़ हुजरों में क़मा हक़-क़हू जलवागर हों, चौथे यह कि अपने दो नामों के दरमियान में अपने महबूब सल्ल० का नाम रखा है, यानी अव्वल जुमला लाइलाह इल्लल्लाह में मौजूद हैं, और दूसरे जुमले मुहम्मदुर रसूलुल्लाह में मौजूद हैं, और बीच में जनाब मुहम्मद सल्ल० रौनक़ अफ़रोज़ हैं, सुबहानल्लाह ! पांचवां यह कि अव्वल जुमले में अगर शुमार में बारह हर्फ़ हैं तो दूसरे अपने महबूबे पाक के जुमले में भी बारह हर्फ़ हैं, छटे यह कि अपने जुमले के तमाम हर्फ़ ग़ैर मनक़ूता यानी बिला नुक़्ते के रखे हैं, तो महबूब के भी तमाम हुरुफ़ ग़ैर मनक़ूता ही रखे हैं, सावतां यह कि कितना ही लाइलाह इल्लल्लाह कहे जाओ जब तक मुहम्मदुर रसूलुल्लाह सल्ल० न कहोगे इस्लाम में दाख़िल न होगे।

*दुरूदो सलाम ऐ ख़ुदा भेज बेहद*
*बरुहे मुहम्मद व आले मुहम्मद*
*पढ़ो दुरूद पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ो*
*दुरूद से कभी ग़ाफ़िन न हो दुरूद पढ़ो*
*अस्सलातु वस्सलामु अलैका या रसुलल्लाह*



*अस्सलातु वस्सलामु अलैक या हबीबल्लाह*

## ❋ कसीदा ❋

*साये तेरा कौनैन की किशवर में नहीं है*
*बस हद है कि साया भी बराबर में नहीं है*
*हो जलवए महबूब के क्या माहे मुक़ाबिल*
*इस चांद के धब्बा रुख़े अनवर में नहीं है*
*कुल ख़ूबियां अल्लाह ने हज़रत को अता की*
*यह बात किसी और पयम्बर में नहीं है*
*हो क्यों न ख़ुदाई को ग़दाई की तमन्ना*
*क्या चीज़ है जो उनके भरे घर में नहीं है*
*आमाल बुरे हैं मेरी इमदाद को आओ*
*हामी कोई जुज़ आपके महशर में नहीं है*
*मैं हूं वह गुनहगार जिसे कहते हैं नेकी*
*यह लफ़्ज़ मेरे जुर्म के दफ़्तर में नहीं है*
*हैं ऐब हज़ारों तू जिसे चाहे बना दे*
*अल्लाह ! हुनर एक भी अक्बर में नहीं है*

आठवां यह कि अल्लाह जल्ल जलालुहू और मुहम्मद सल्ल० इन दो ही नाम से यह कलिमा तैयबा है, यूं तो अल्लाह के बहुत से नाम हैं लेकिन अल्लाह तआला जैसे इस्मे ज़ात है इसी तरह मुहम्मद सल्ल० भी इस्मेज़ात है, नवीं अब हर इस्म की ख़ूबियां मुलाहिज़ा हों, अल्लाह में चार हर्फ़ हैं, अलिफ़, लाम, लाम, हे इन चारों हरफ़ों में से एक को अलग कर दें, देखिये बे मानी न होगा कुछ न कुछ अच्छे मानी

ज़रूर होंगे अलिफ़ को अलग कीजिए तो लाम, लाम, हे, रह गये, इनके लफ्ज़ बनाईये लिल्लाहे रहा बा मानी हैं लिल्लाहे माफ़िस समवते वमा फ़िल अर्ज़े, अब एक लाम भी अलग कीजिए, बाक़ी लाम, हे इन का लफ़्ज़ लहू हुआ अब भी बामानी यानी लहू मुलकुस समावाते व अर्ज़े, अब फिर दूसरा लाम भी अलग कर दीजिए। बाक़ी रहा सिर्फ़ (हे) इसको यूं लीजिए कि इसको मज़मून कीजिए हे हुवा बामानी हे यानी इसके मानी हैं (वह) अब भी इशारा अल्लाह ही की तरफ़ है और यह एक मोख़फ़्फ़फ़ है। हुवल अव्वल हुवल आख़िर हुवल ज़ाहिर ० हुवल बातिन, का जो अल्लाह पाक की ही सिफ़त है। और उसके वास्ते शायां और मौज़ूं है।

## ❁ कसीदा ❁

*अयां तू ही तू है निहां तू ही तू है*
*यहां तू ही तू है वहां तू ही तू है*
*तेरा रंग हर रंग में है नुमायां*
*यह नैरंग कौनो मकां तू ही तू है*
*है तू माय ए शादमानी सरापा*
*वहां ग़म कहां है जहां तू ही तू है*
*चमन में चहक कर यह कहती हैं बुलबुल*
*कि फूलों में अल्लाह मियां तू ही तू है*
*शरीअत तरीक़त है सब तेरी मौजें*
*हक़ीक़त में बहरे रवां तू ही तू है*
*अज़ल तू अबद तू अहद तू समद तू*
*इस अकबर की गोया ज़ुबां तू ही तू है*

मुहम्मद सल्ल० इस्मे ज़ात हैं। इसी तरह इस नाम में भी ख़ूबियां मुलाहीज़ा हों, इसके मानी हैं तारीफ़ किया गया। इस में भी चार हर्फ़



हैं अल्लह के नाम से एक तो हमतादाद हर्फ़ होने की दूसरे निस्बत चारों हर्फ़ ग़ैर मनकूत के हैं, की है यानी अल्लाह में जैसे चारों हर्फ़ बे नुक़्ते के हैं ऐसे ही मुहम्मद (सल्ल०) में चार हर्फ़ बेनुक़्ते के हैं अगर अल्लाह के नाम में एक हर्फ़ मुशददद है, मुहम्मद के हर्फ़ जुदा करने पर भी मानी रहते हैं यानी मीम, हे, मीम, दाल अब पहले मीम को अलग कीजिए, हे, मीम, दाल, बाक़ी रहे इनका लफ़्ज़ बनाया जो हम्द हुआ बामानी हैं इसके मानी तारीफ़ के हैं जो अल्लाह ही के लिए शायां है। अलहम्दु लिल्लाहे रब्बिल आलमीन० ऐसे ही हे को अलग कीजिए, मीम, दाल, बाक़ी रहा उनका लफ़्ज़ बनाया तो मद हुआ यानी हमेशा और फ़ैलाव। यह भी अल्लाह की ज़ात को ज़ेबा है। अब दाल बाक़ी रहा इसके चार हर्फ़ बहिसाब हुरुफ़े अबजद होते हैं और चार ही लफ़्ज़ से हुवल अव्वल हुवल आख़िर। हुवज़्ज़ाहिर, हुवल बातिन है, यह चारों सिफ़ात भी अल्लाह तआला शानुहू की ज़ात पाक के लिए ही मौज़ूं हैं, जिस का मशरिक़ व मग़रिब जुनूब व शुमाल चार दह आलम में ज़हूर है। और चार हर्फ़ ही हुज़ूर के नामे पाक में है और चार ही अल्लाह के हैं और यह तमाम फ़ज़ाइल क़ुदरती तौर पर वाक़ेअ हुए हैं और इसका मुवाज़िना हर शख़्स इस सूरत में कर सकता है कि दिगर मज़ाहिब के माबूदों और अवतारों के नामों से ज़रा कोई हर्फ़ कम व बेश कर के देखो क्या-क्या ख़ूबियां पैदा होती हैं और कैसे-कैसे मानी साबित होंगे उनके नाम लिखकर बताना मसलेहत नहीं समझता न मेरा यह मशरब है। अब फिर उसी हर्फ़ दाल के चार अदद ब हिसाब हर्फ़ अबजद लीजिए यह नाम मुहम्मद सल्ल० का आख़िर हर्फ़ है इन चार अददों को इस में अल्लाह के पहले हर्फ़ से मिलाइये जो (अलिफ़) है और इसकाएक अदद है एक और चार को मिलाइये तो पांच हुए और पांच अदद ही हैं कि जो अल्लाह के आख़िर में हैं। साबित हुआ कि मुहम्मद सल्ल० का आख़िर हर्फ़ है और अल्लाह जल्लजलालुहू का

इबतिदाई हर्फ़ दोनों के मिलकर पांच अदद होते हैं, लफ़्ज़ जो अल्लाह के आख़िर में हे है जिससे हुवल अव्वल आख़िर की मज़हरियत का पूरा और काफ़ी सुबूत मिलता है और शाने पंजतन पाक का पता चलता है।

*दुरूदो सलाम ऐ ख़ुदा भेज बेहद*
*बरूहे मुहम्मद व आले मुहम्मद*

## ❁ कसीदा ❁

*ताज़ीम से लेता है ख़ुदा नामे मुहम्मद*
*क्या नाम है ऐ सल्लेअला नामे मुहम्मद*

*क़ुरआन में जन्नत में सरे अर्श सरे तौह*
*किस शान से ख़ालिक़ ने लिखा नामे मुहम्मद*

*मुज़्ज़म्मिलु व मुदस्सिरू कह कह के पुकारा*
*किस प्यार से लेता है ख़ुदा नामे मुहम्मद*

*डरता था गुनाहों से मैं रहमत ने निदा दी*
*ग़ाफ़िल तू कहीं भूल गया नामे मुहम्मद*

*अल्लाह करे उसपे हराम आतिशे दोज़ख़*
*जिस शख़्स के हो दिल पे लिखा नामे मुहम्मद*

*इन नामों से इन्आम में मिल जाती है हर शै*
*लो सुबह शाम नामे ख़ुदा नामे मुहम्मद*

*क्या डर है अगर क़ब्र में हो अफ़इ व कज़दुम*
*है उम्मते आसी का असा नामे मुहम्मद*

*आंखों में बसे दिल में रहे होंटों पे आये*
*तैबा की फ़िज़ा यादें ख़ुदा नामे मुहम्मद*

*अक्बर तू बचा चाहे अगर नारे सकर से*
*सीने के नगीने पे खुदा नामे मुहम्मद*



*पढ़ो दुरूद पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ो*
*दुरूद से कभी ग़ाफ़िल न हो दुरूद पढ़ो*

मुहम्मद सल्ल० के नामे पाक में नुकात मुलाहिज़ा हों, मीम से इशारा है इस बात की तरफ़ कि नबुवत का ख़ात्मा आप की ज़ात पर हुआ। क़ुदरती दलील इसकी यह है, जिस तरह मख़रजे मीम कालब हैं और लब ख़ातिमा हर्फ़ का है, यानी लब से पहले हरकत मीम की ज़ाहिर होती है इस से पहले किसी हर्फ़ से यह हरकत इबतिदाई सिवाए मीम के ज़ाहिर नहीं होती, दूसरे यह कि मीम के चालीस अदद हैं, इससे यह ज़ाहिर हुआ कि आप को नबुव्वत चालीसवें बरस होगी, हाय! क्या प्यारा नाम है जिसका हर हर्फ़ ज़ौक़ शौक़ वालों को मज़ा देता है।

*मुहब्बत देखिये एक दूसरे को चूम लेता है*
*लबों पर जब यह प्यारा नाम आता है मुहम्मद का*

और यह कि जिस तरह लफ़्ज़ मुहम्मद सल्ल० की इबतिदा मीम से है और मीम इबतिदाई मख़रजे हुरुफ़ है उसी तरह हुज़ूर की ज़ाते अक़दस से इबतिदाई आफ़रीनश है। और लफ़्ज़ अल्लाहु जल्लजलालुहू के आख़िर में (हे) है और हाए हव्वज़ इनतेहाई मख़रज हुरुफ़ हैं लिहाज़ा हर शै की इनतेहा ज़ाते वहदहू ला शरीक पर है कुल्लु मन अलैहा फ़ानींव व यबक वजहु रब्बेक ज़ुल जलाले वल इकराम, चूंकि इबतेदा से इन्तेहा जुदा नहीं होती फ़रक़ एतिबारी है, इसलिए यह मज़मून अना अहमद बिला मीम है, ज़ौक़ बख़्श इर्फ़ान है बशरकी शक्ल में आया तकल्लुफ़ की ज़रूरत थी अहद से हो गया अहमद जो बांधा मीम का पटक। अब मीम मुहम्मद सल्ल० और लाम अल्लाह के अदद गीजिए तो सत्तर होते हैं जिससे इशारा है कि चेहर-ए-महबूब मुहम्मद सल्ल० पर चूंकि महबूब हैं, इसलिए सत्तर हज़ार परदे डालकर

दुनिया में भेजा वरना बे परदा हुस्न मुहम्मदी का सिवाये ख़ुदाए पा
के कोई नज़ारा नहीं कर सकता तमाम आलम पर मूसा अलै० से ज़्याद
ग़शी हो जाती और आलम फ़ना हो जाता इसी सबब से सत्तर हज़ा
हिजाब डालकर माशूक की असल फ़बन अहले दुनिया को दिखला
कुरबान हो जाऊं।

# कसीदा

*इस चांद सी सूरत पर मर जाऊं फ़िदा होकर*
*हसरत है कि दम निकले दीदारे ख़ुदा होकर*
*उन नरगीसी आंखों को बीमार ही रहने द*
*क्या लोगे दवा देकर क्या होगा शिफ़ा होक*

*हूं ख़ाक तो निकलेगी यह हसरते पा बोसी*
*बिछ जाऊंगा क़दमों में नक़्शे कफ़े पा होकर*
*तौसीफ़ में है जिनकी वल लैले इज़ा यग़श*
*मर जाऊं मैं उन काली ज़ुल्फ़ों पे फ़िदा होकर*

*ज़ुल्फ़ों को जो खोला है ख़ुश्बू भी सुंघा दीजिए*
*क्या लुत्फ़ जो बे बरसे खुलजाए घटा होकर*
*अब मौज में लहराता फिरता है हवा खात*
*मिल जाएगा यह क़तरा दरिया में फ़ना होकर*

*ईमान की कहता हूं तुम जान हो अक्बर की*
*रह सकता नहीं ज़िन्दा अब तुम से जुदा होकर*

फिर हे. मुहम्मदी और लाम अल्लाह को लो और उनके अदद मिलाओ
तो 38 होंगे जिससे मतलब यह है सात तबक़ आसमान और सात ज़मी
और सात दोज़ख़ और आठ जन्नत और तीन कुर्रए आग हवा, पान
और कुरसी व अर्श मलाएका, जिन्नात, इन्स, हैवानात यह अड़तीस
मौजूदाते अलवी व सिफ़ली सब नूरे मुहम्मदी से पैदा हुये अगर ऐस



होता तो कुछ भी न होता, चुनांचे यही लाम अल्लाह का लौकाल लमा ख़लक़ तुल अफ़लाक के सर पर ताज बन कर चमक रहा है फिर मिमे मुहम्मद सल्ल० और (हे) अल्लाह जल्लशानहू के अदद मिलाओ तो 45 होंगे इससे यह दलील रोशन है कि ब मुजिब क़ाइदा हिकमत के ख़लक़त की इनतिहाई मुद्दत तकमील सूरते इन्सानी का बाइस और ख़ात्मा हर्फ़ अल्लाह जल्लशानहू और आग़ाज़ हुरूफ़ मुहम्मद सल्ल० है।

और मीम के चालीस अदद हैं और पीर तरीक़त तालिबे हक़ीक़त व मारेफ़त को जब एक अरबईन यानी चिल्ला पूरा करता है। तब कमाले इन्सानी उस में पैदा होता है।

फिर अल्लाह पाक ने मख़लूक़ को मुहम्मद की सूरत में पैदा किया और इसका इज़हार उस वक़्त होता है, जब इन्सान करवट पर सरके और रुख़सार के नीचे हाथ रख कर लेटता है। जब उसकी शकल से लफ़्ज़ मुहम्मद सल्ल० अयां होता है वरना इसी में निहां रहता है और यह कि मीम बरुए इल्म तबाउल हुरूफ़ के आतशी है, और दाल ख़ाकी है, पस इबतिदाई हर्फ़ मुहम्मद सल्ल० आतशी है और इनतिहाई हर्फ़ ख़ाकी है चुनांचे आगका शोअला माइले ऊरूज रहता है, और ख़ाक की ख़ासियत है कि पसती की तरफ़ माइल रहती है, इससे साबित है कि हुज़ूर वह बहरे आज़मे क़ुदरत हैं, कि हज़ारों मदकी हर दो शाने आप में मौजूद हैं, या यूं कहिये कि

*उधर अल्लाह से वासिल इधर मख़लूक़ में शामिल*
*ख़्वास इस बरजस्वे कुबरा में हैं हर्फ़े मुशद्दद का*

और बरुए इल्म व हिकमत व फ़लसफ़ा मिज़ाज आग का गरम व ख़ुश्क है जिसकी क़ुव्वत बहुत ज़बरदस्त है उलू की जानिब और मिज़ाजे ख़ाक का सर्द व ख़ुश्क है जिसकी क़ुव्वत बहुत क़वी है पसती की तरफ़। पस आप आलमे अलवी व सिफ़ली दोनों को अपनी तरफ़ खींचने वाले हैं कि दोनों आलम आप पर बरुए इश्क़ व मुहब्बत झुके और खिंचे

आते हैं, और शेफ़ता व फ़रेफ़ता हैं, और यह कि हुज़ूर सल्ल० मरकज़ हैं आफ़रीनश के (पैदा करना) क्योंकि हर ख़त जो दाएरे से शुरू हो जाये वह मरकज़ ही पर रुजू-ए-मुनतहा होता है इसलिये आंहज़रत सल्ल० की तरफ़ कौनैन रुजू हैं और यह कि आपकी विलादत शरीफ़ उस वक़्त में हुई जबकि आफ़ताब बुर्जे हमल में था और बुर्जे हमल आतशी मिज़ाज है और उसीसे इबतिदाई उरुज आग़ाज़े साल व मौसमे बहार होती है, लिहाज़ा हर्फ़ अव्वल जो मीम और आतशी है उसकी निसबत बुर्ज हमल से है और आप की ज़ाते आली से इबतिदाए आफ़रीनश है।

*दुरूदो सलाम ऐ ख़ुदा भेज बेहद*
*बरुहे मुहम्मद व आले मुहम्मद*
*पढ़ो दुरूद पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ा*
*दुरूद से कभी ग़ाफ़िल न हो दुरूद पढ़ो*

## ❁ कसीदा ❁

*ख़ातिमुल अंबिया हक़ का प्यारा नबी*
*सारे नबियों से अफ़ज़ल हमारा नबी*
*अशरफ़ुल अंबिया है हमारा नबी*
*वह नबी कौन उम्मत का प्यारा नबी*
*रोशनी दीने इस्लाम की हो गई*
*जब जहां से हुए आशकारा नबी*
*बुलबुलों ने जो देखी मलाहत तेरी*
*गुल को सदक़े में तुझ पर उतारा नबी*
*तुम हो वह हुस्न वाले कि अल्लाह ने*
*अपना महबूब कह कर पुकारा नबी*
*और नबियों की मख़सूस थीं उम्मतें*



*दोनों आलम का हादी हमारा नबी*
*आज यूसुफ़ भी उनकी ग़ुलामी में हैं*
*तू ने देखा ! ज़ुलेख़ा हमारा नबी*
*है शफ़आत के सेहरे की सर पर फ़बन*
*आज दुल्हा बना है हमारा नबी*
*आस्मानों ही पर सब नबी रह गये*
*अर्शे आज़म पे पहुंचा हमारा नबी*
*शाफ़ेउल मुजनबीं है लक़ब आप का*
*कीजिए दर्दे इसयां का चारा नबी*
*बहरे इसयां के गरदाब में नाव है*
*डूबा डूबा मुझे दो सहारा नबी*
*मुझ गुनह गार का पर्दा ढक लीजिये*
*ऐब मेरे नहीं आशकारा नबी*
*कूच अक्बर का जिस वक़्त दुनिया से हो*
*लब पे जारी हो कलिमा तुम्हारा नबी*

## ⑤ तमहीद पैदाइशे नूरे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहे व सल्लम

जब इस माशूक़ हक़ीक़ी ने जो बहुत से बे नामो निशां हिजाबों में परदा नशीन और बे इन्तिहा अदमनुमा पर्दो में हुजला गुज़ीं था यह चाहा कि कोई ऐसा आईना हो कि जिसमें अपने हुस्नो जमाल क़ुदरत के गूनागूं जल्वे और कमाले अदा व नाज़ वअज़मत के करिशमे देखे और उस वक़्त यह नूरानी ख़्याल बशकले आईना रूबरू हुआ यानी।

*आईना ज़ाते हक़ ने रखा रूबरू*
*तू उसी शक्ल का दूसरा हो गया*
*अक्स ज़ाते इलाही था आईने में*
*नाम उस अक्स का मुस्तफ़ा हो गया*

*ऐसी सूरत न पैदा हुई है न होगी*
*आप पर हुस्न का ख़ात्मा हो गया*
*हैं उसी एक मशअल से सब मशअलें*
*जिससे रौशन समा का समा हो गया*

तफ़सील उसकी अरबाबे ख़ैर और असहाबे मारेफ़त यूं बयान करते हैं कि, अल्लाह जल्लशानहू का सबसे पहला जल्वा नूरे मुहम्मद सल्ल० है। यानी ख़ल्लाक़े मुतलक़ ने तमाम कायनात और जुमला मौजूदात से एक करोड़ छः लाख सत्तर हज़ार बरस पहले नूरे मुहम्मद सल्ल० पैदा किया हज़रत इब्ने अलजोज़ी फ़रमाते हैं कि उस नूर से अल्लाह पाक ने फ़रमाया "कूनी मुहम्मदन फ़सारत ओमूदन मिन नुरिइला आख़ेरेही" यानी उस नूर से फ़रमाया कि "मुहम्मद सल्ल० होजा" यानी बस वह एक नूर का सुतून हो गया और इतना बुलंद हुआ कि हिजाबे अज़मत तक पहुंच गया, फिर सिज्दा किया और अलहम्दु लिल्लाह कहा तो अल्लाह पाक ने फ़रमाया कि "इसी वास्ते मैं ने तुझे पैदा किया और तेरा नाम मुहम्मद सल्ल० रखा है। और तुझसे ख़ल्क़ की इब्तेदा और पैग़ंबरों की इन्तिहा करूंगा," फिर उस नूर को चार हिस्सों पर बांट दिया, बाज़ ने लिखा है कि उसके दस हिस्से किये हैं जिनसे अर्श व कुर्सी, लौह व क़लम चांद सूरज सितारे फ़रिश्ते जन्नत दोज़ख़ ज़मीन आसमान, शजर हजर, जमीए मख़लूक़ात और तमाम मौजूदात बने, और एक हदीस शरीफ़ में आया है कि "कूनी हबीबी मुहम्मद" यानी होजा ऐ मुहम्मद सल्ल० हबीब मेरा, यह सुन कर नूरे मुहम्मदी शाद हुआ। और यह भी लिखा है कि नूरे मुहम्मदी सल्ल० को ताऊस की शक्ल में पैदा किया हरी ज़मुर्रद की क़न्दील में रखकर शज-र-तुल यक़ीन में लटका दिया, तो सत्तर हज़ार बरस तक बइबादत मअबूदे आलम तजर्रुद (तनहाई) में मशग़ूल रहा, फिर हक़ तआला ने आईनए हया पैदा करके उस ताऊस के मुक़ाबिल किया, जिस वक़्त उस ताऊस



ने अपनी बेमिसाल सूरत उस आईने में देखी निहायत शकील व जमील थी, इतना ख़ुश हुआ कि वज्द में आ गया, और सर सिज्दए माबूदमें रखकर सुबहान रब्बेयल आला कहा इसी वजह से पांच वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ की गई, अल्लाह जल्ल जलालहू ने नूरे मुहम्मदी सल्ल० को इस इबादत में मशग़ूल फ़रमाया कि "फ़ताफ़ नूरू मुहम्मदिन बिल अर्शे क़बल आदम बे ख़मसीन अलफ़ अतिंव वहुव यक़ूलुल हम्दु लिल्लाहे।"

यानी नूरे मुहम्मदी सल्ल० आदम से पचास हज़ार बरस पहले अर्शे मजीद के तवाफ़ों में मशग़ूल रहा, और अलहम्दु लिल्लाह कहता था, हक़ सुबहानहू तआला निहायत ख़ुश हुआ और फ़रमाया कि "ऐ हबीब! जिस तरह और सब रसूलों पर तुम को फ़ज़ीलत और बुज़ुर्गी है इसी तरह तुम्हारी उम्मत को तमाम उम्मतों पर फ़ज़ीलत और बुज़ुर्गी दूंगा और सब से बेहतर बनाऊंगा और तरह तरह की नेअमतों से माला माल करूंगा।" और फ़रमाया हज़रत सल्ल० ने कि अल्लाह पाक ने हज़रत मूसा अलै० पर वही भेजी कि कह दो बनी इसराईल से कि जो कोई मुझ से अहमद का मुन्किर होकर मुलाक़ात करेगा तो मैं उसको दोज़ख़ में डालूंगा, मूसा अलै० ने अर्ज़ की कि या अल्लाह! अहमद सल्ल० कौन हैं, इर्शाद हुआ कि "ऐ मूसा ! अपने नज़दीक मैं ने अहमद सल्ल० से ज़्यादा कोई बुज़ुर्ग पैदा नहीं किया और ज़मीन व आसमान के पैदा करने से पहले उसका नाम अपने नाम से मिलाकर अर्श पर लिखा और उसकी उम्मत के बहिश्त में दाख़िल होने से पहले और मख़लूक़ात पर बहिश्त को हराम किया," मूसा ने पूछा कि इस की उम्मत कौन है? फ़रमाया वह बड़े हम्द करने वाले होंगे दिन को रोज़ा रखेंगे रात को इबादत करेंगे। और मैं इनसे थोड़ासा अमल बहुत क़बूल करूंगा और उनको जन्नत में दाख़िल करूंगा, तो मूसा अलै० ने अर्ज़ किया कि "ख़ुदावंदा उस उम्मत का तू मुझे नबी बना दे" फ़रमाया कि ऐ मूसा ! उस उम्मत का नबी तो मेरा प्यारा मुहम्मद सल्ल० होगा, जब यह अर्ज़ क़बूल न हुई तो दरख़्वास्त की अच्छा तो मुझे नबी की उम्मत में पैदा कर।

*अल्लाह से कहते थे शामिल मुझे कर इसमें*
*मूसा से कोई पूछे रूतबे तेरी उम्मत के*

फ़रमाया अल्लाह पाक ने, यह भी न होगा लेकिन ऐ मूसा ! मैं तुम को और मुहम्मद सल्ल० को जन्नत में इकट्ठा करूंगा, ज़ाहिर है कि

## ख़मसा

*किसी का बुलंद ऐसा रुतबा नहीं है*
*सरे अर्श यूं कोई पहुंचा नहीं है*
*यहां लनतरानी का झगड़ा नहीं है*
*दरे मुस्तफ़ा संगे मूसा नहीं है*
*यहां अर्श है तूरे सीना नहीं है*
*अता में सख़ा में नअम में करम में*
*गुलिस्तां में सहरा में जन्नत में यम में*
*कलीसा में आतिश कदे में हरम में*
*ज़मीं पर फ़लक पर अरब में अजम में*
*कहां आपका बोल बाला नहीं है*
*कुजा लनतरानी कुजा शाने असरा*
*कुजा दश्त ऐमन कुजा तूरे अदना*
*कुजा तूरे सीना कुजा अर्शे आला*
*कुज़ा सैर अहमद कुजा सैर मूसा*
*यहां चर्ख नीली है दरिया नहीं है*
*तुझे हक़ ने क़ुरआन में है सराहा*
*किया भी वही तूने दिलसे जो चाहा*
*इस अक्बर को भी इन्तिहा तक निभाया*
*रखे किस से उम्मीदे अलताफ़ शाहा*
*बयां का कोई और मौला नहीं है*



रिवायत है कि अल्लाह पाक ने मूसा अलै० से फरमाया कि उम्मते मुहम्मदीया सल्ल० को दो नूर अता करूंगा एक नूर क़ुरआन का और दूसरा माहे रमज़ानुल मुबारक का और दो तारीकियों से महफ़ूज़ रखूंगा, एक तारीकिये क़ब्र और दूसरी तारीकिये क़ियामत और हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने फ़रमाया कि अल्लाह पाक ने मुझको तीन चीज़ें अता कीं, अव्वल मेरी उम्मत की जन्नत मुश्ताक़ होगी और कहेगी अल्ला हुम्म असकुन अय्यामी, दूसरे मेरी उम्मत से दोज़ख़ पनाह मांगेगी, और कहेगी अल्ला हुम्म नज्जेनी मिन हाजर रज़ुले; तीसरे जो दुरूद भेजेगा मुझ पर उस को फ़रिश्ते मेरे पास पहुंचाते रहेंगे, हदीस शरीफ़ में फ़रमाया हज़रत रसूले अकरम सल्ल० ने कि वह उम्मत क्यों कर ख़राब होगी जिसके अव्वल मैं हूं और बीच में मेहदी अलै० और आख़िर में ईसा अलै० ग़रज़ कि इस उम्मत ने बड़े बड़े मरतबे बड़ी बड़ी बुज़ुर्गियां पाई हैं, ख़ुद ख़ुदावन्द तआला का इरशाद है " कुनतुम ख़ैर उम्मतिन " और यह किस का सदक़ा है ? उसी प्यारे मुहम्मद सल्ल० का जैसा कि अल्लाह पाक शरीफ़ रहीम व करीम है वैसा ही उस का हबीब शफ़ीक़ रहीम व करीम है और फिर कैसा करीम । कि जिसके करमे आम ने अज़ाबों को भी सवाब बना दिया।

## ❋ क़सीदा ❋

*तेरे करम का रिसालत मआब क्या कहना*
*सवाब होगये सारे अज़ाब क्या कहना*
*तमाम अगले सहीफ़ों को कर दिया मनसूख़*
*रसूले पाक तुम्हारी किताब क्या कहना*
*मिले ख़ुदा से तो ऐसे मिले कि मिल ही गये*
*तुम्हारे क़ुर्ब का आली जनाब क्या कहना*
*ख़ुदा भी चाहे ख़ुदाकी ख़ुदाई भी चाहे*

*तुम्हारी चाह का रहमत मआब क्या कहना*
*ख़ुदाकी मान के कहना क्या है कहने में*
*तुम्हारे कहने का आली जनाब क्या कहना*
*शफ़ीए हश्र, रसूले करीम ख़त्मे रसूल*
*हबीबे पाक तुम्हारे ख़िताब क्या कहना*
*हसीन ऐसे कि अल्लाह के हबीब हुए*
*तुम्हारा हुस्न है वह इन्तेख़ाब क्या कहना*
*गुनहगारों ने जब रोके या ग़फ़ूर कहा*
*बरस पड़ा है करम का सहाब क्या कहना*
*तकेंगे और नबी उनका मुंह जो उम्मत को*
*वह बख़्श वाएंगे रोज़े हिसाब क्या कहना*
*सुना के नात नकीरैन को किया ख़ामोश*
*तुम्हारा अकबरे हाज़िर जवाब क्या कहना*

## ❋ रिवायत ❋

जिस वक़्त अल्लाह पाक ने चाहा कि मुहम्मद सल्ल0 को पैदा करे तो हज़रत जिब्रईल(अलै०) को हुक्म दिया कि मेरे पास वह मिट्टी लाओ जो कि ज़मीन का नूरानी दिल है, पस जिब्रईल (अलै०) ब मुजिब इरशाद में फ़रिश्तगाने जन्नतुल फ़िरदौस ज़मीन पर आये और एक मुश्तेख़ाक मदीना मुनव्वरा के उस मुक़ाम से ली कि जिस मुक़ाम में अब मज़ारे हुज़ूरे अक़दस है, और मिट्टी निहायत रोशन चमकीली थी। इसमें नूरे मुहम्मदी सल्ल० को मिलाया और अतरयात व तसनीम जन्नत के पानी में इसका ख़मीर किया और बड़े मोती की तरह बनाकर बहिश्त की नहरों में गोता दिया और फिर ज़मीनो आसमान दरियाओं पहाड़ों पर पुकारा गया "हाज़ा तैयबन हबीबे रब्बिल आलमीन व ख़ातमन नबीय्यीन" ताकि पैदा होने से पहले ही आप को सब पहचान लें, फिर



अर्शो कुर्सी के मलाएक ने उसको पहचाना और उसका तवाफ़ किया और तमाम फ़रिश्तगाने ज़मीनो आसमान ने भी पहचाना फिर महबूबे हक़ीक़ी ने उसको रियाज़त के वास्ते मामूर फ़रमाया तो वह नूरे मुहम्मद सल्ल० कभी क़याम कभी रूकूअ सुजूदकभी क़ुऊद में अल्लाह जल्लजलालुहू व अम्मा नवालुहू की तसबीह करता रहा और यहां तक रियाज़त में मशग़ूल रहा कि अर्क़ अर्क़ हो गया और उससे क़तरे टपकने लगे अल्लाह तआला ने इन क़तरों के एक एक क़तरे से एक एक नबी आदम अलै० से हज़रत ईसा अलै० तक पैदा किये अब फ़रिश्तों ने पुकारा कि ऐ ज़मीन वालो ख़ुश हो यह माह नूरानी महबूब रब्बील आलमीन शफ़ीउल मुजनबीन रहमतुल लिलआलमीन मशहूरुन फ़िल अव्वलीन व मज़ कूरुन फ़िल आख़रीन है और पहाड़ों और ज़मीनो आसमान में यह सदा बुलंद हुई कि जो कोई इस अमानत के लेने की लियाक़त रखता हो वह बारगाहे रब्बुल जलील में दरख़्वास्त दे।

*इस अमानत का तलबगार कोई बोले तो*
*कौन लेने को है तैयार कोई बोले तो*
*इसकी क़ीमत से है कम दोनों जहां की क़ीमत*
*कौन है उंसका ख़रीदार कोई बोले तो*

जब इस अमानत बा करामत के लेने की किसी ने अपने में लियाक़त न पाई तो सब ख़ामोश हुए और हज़रत आदम अलै० ने इस तरह अर्ज़ की:-

*बोले आदम यह अमानत तो मुझे मिल जाए*
*है बड़ी चीज़ यह दौलत तो मुझे मिल जाए*
*बे बहा है जो उसे कोई नहीं ले सकता*
*इसकी कुछ भी नहीं क़ीमत तो मुझे मिल जाए*

हुक्म हुआ आदम अलै० की पुश्त में इस अमानत को रखो, यह दौलते उज़्मा व नेमते कुबरा हज़रत आदम अलै० के जिस्मे ख़ाकी को अता

की गई।

रिवायत है कि जब आदम अलै० का पुतला अमानत की ख़िलअत से मुमताज़ हुआ तो रूह को इर्शाद हुआ कि क़ालिबे आदम में दाख़िल हो रुह चूंकि निहायत नाज़ुक और लतीफ़ है, बदन के अन्दर अंधेरे को देखकर घबराई और दाख़िल होने में कुछ तआम्मुल किया तो हुक्म हुआ कि ऐ रुह ! आदम की पेशानी की तरफ़ देख तो नूरे मुहम्मदी सल्ल० पर शेफ़्ता और फ़रेफ़्ता हो गई और बेइख़्तियार आशिक़े ज़ार की तरह हज़ार दिलो जान से क़ालिब में दाख़िल हुई। रुह के दाख़िल होते ही आंखें आदम अलै० ने खोल दीं और अर्श पर जन्नत के दरवाज़ों पर और सुतूनों और क़ुर्ब पर देखा लिखा है कि, "लाइलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह" फिर जिस्म आदम अलै० का उस नूर से रोशन हो गया फ़रिश्ते ताज़ीम करने लगे और अल्लाह पाक ने हज़रत आदम अलै० को सुर्ख़ याक़ूत के तख़्त पर बिठाया, जिस के सात सौ पाए थे और उस तख़्त को जिब्रईल व मिकाईल व इसराफ़ील व इज़राईल और मुकर्रब फ़रिश्तों ने अपने कांधों पर उठाया और आसमान और अजायबाते जन्नत की सैर कराते फिरे और सबसे बढ़कर यह तौक़ीर की कि अल्लाह तआला ने सब फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम अलै० को सिज्दा करो लेकिन इबलीस ने सिज्दा नहीं किया और सर झुकाने से इन्कार किया उस पर अल्लाह को ग़ुस्सा आया तो,

*उस जगह से उसे निकाल दिया*
*तौक़े लानत गले में डाल दिया*

और जिन्होंने सिज्दा ताज़ीमी किया उन को जुदागाना इन्आम व इकराम मरहमत फ़रमाया उन मुकर्रबीन फ़रिश्तों ने बड़े-बड़े मरातिब पाये यानी कुछ उस तख़्त के हामिल हुए। जिब्रईल अलै० को वही पहुंचाने की ख़िदमत अता हुई इसराईल अलै० को लौहे महफ़ूज़ की ख़सूसियत का इन्आम मिला ग़रज़ जो कुछ आदम का पासे अदब था



फ़रमाबरदारों पर इन्आमे इलाही और नाफ़रमानों पर ग़ज़ब था वह सब ताज़ीमे नूरे मुहम्मदी सल्ल० का सबब था।

रिवायत है कि जन्नत में आदम अलै० ने तनहाई से घबराकर किसी अनीस व हमजलीस की जनाबे बारी में यह ख़्वाहिश की कि मेरा कोई जोड़ा पैदा कर ताकि यह तनहाई की वहशत दूर हो, फ़रिश्तों ने बहुक्मे ख़ुदावंदे तआला जब आदम अलै० सोए तो उनकी बांई पसली चाक की ख़ुदा की क़ुदरते कामिल से एक औरत ख़ूब सूरत पैदा हुई और एक लमहे में सब क़दो क़ामत उसका दुरुस्त हो गया फिर उस पसली को फ़रिश्तों ने ऐसे मिलाया कि आदम अलै०.सोते कि सोते ही रहे ज़रा ख़बर न हुई जब आदम अलै० बेदार हुए तो देखा कि एक निहायत ख़ूबसूरत उनकी जिन्स से पहलू में बैठी हैं; देखकर बहुत ख़ुश हुए और पूछा कि "तुम कौन हो?" अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि हमारी लौंडी है और इसका नाम 'हव्वा है यह तुम्हारी वहशत दूर करने के लिए पैदा की है ऐ आदम! इसको हाथ न लगाना जबतक इस का महर न अदा कर लो आदम अलै० ने अर्ज़ किया कि इलाहुल आलमीन इसका महर क्या है? इर्शाद हुआ कि इसका महर यह है कि मेरे हबीब सल्ल० पर दुरूद पढ़ो।

*पढ़ो दुरूद पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ो*
*दुरूद से कभी ग़ाफ़िल न हो दुरूद पढ़ो*

अल्लाहुम्म सल्ले अला मुहम्मदिंव व अला आले मुहम्मदिंव व बारिक व सल्लिम० आदम अलै० ने दस बार दुरूद पढ़ा, फ़रिश्ते शाहिद और गवाह बने और बीबी हव्वा का आदम अलै०, से निकाह अल्लाह तआला ने मुनअक़िद किया।

मदारेजुल नबुव्वत में लिखा है कि जिस वक़्त हज़रत रब्बुल इज़्ज़त ने आदम अलै० का निकाह हव्वा के साथ किया और ख़ुत्बा कलामे क़ुदरत से पढ़ा तो शैतान को दुश्मनी हुई और आदम के दिल में

वसवसा डाला आख़िर बहिश्त से बाहर निकाला ज़मीन पर लाकर तरह-तरह की मुशक्कतों में मुबतिला हुए।

रिवायत है कि जब आदम अलै० ज़मीन पर आए और तीन सौ बरस तक सर नीचे डाले रहे और शरमिन्दगी से सर ऊपर न उठाया, और आसमान की तरफ़ न देखा और इस क़दर रोते थे कि आंसू आंखों से बन्द न होते थे अगर अश्क (आंसू) तमाम ज़मीन के जमा किये जाएं तो भी आदम अलै० के अश्क उनसे ज़्यादा हों ग़रज़ कि इस क़दर आदम अलै० ने गिरया व ज़ारी की कि उनके आंसूओं से एक नदी जारी हो गई और तमाम चरिन्द व परिन्द उनको पी-पी कर कहते थे कि "क्या ही मीठा पानी है," आदम, अलै० यह सुनकर ज़्यादा रोते थे कि मेरे रोने पर भी जानवर हंसते हैं। निदा आई बारगाहे एज़दी से कि "ऐ आदम यह जानवर सच कहते हैं जो कोई हम से डर कर और अपने गुनाहों से नादिम होकर रोता है उसके आंसू वाक़ई शीरीन होते हैं। इसी वास्ते हज़रत ने फरमाया है:-

**रिवायत :-** तीन आंखें ऐसी हैं कि अल्लाह तआला दोज़ख़ से उन्हें नजात देगा एक वह आंख जो खुदा से डर कर रोए दूसरी वह आंख जो गुनाह की चीज़ों को न देखे। तीसरी वह आंख जो खुदा की इबादत के लिए बेदार रहे, जब आदम अलै० तीन सौ बरस तक रोए और आह व ज़ारी हद से ज़्यादा गुज़री तो दरियाए फ़ज़लो करम जोश में आया और जिब्रईल को हुक्म हुआ कि पास जाओ और अज़ान कहो पस जिब्रईल आये और जहां वह सर झुकाए रो रहे थे अज़ान कहना शुरू की जिस वक़्त इस कलिमे पर पहुंचे अशहदु अन्न मुहम्मदर रसूलुल्लाह, आदम अलै० ने आंखें खोलीं और उस नाम के सुनने से वहशत दूर हुई और इत्मीनान हासिल हुआ, और याद आ गया कि मुहम्मद सल्ल० का नाम अर्शे बरीं पर भी लिखा हुआ है उस नाम के तुफ़ैल से दुआ करना चाहिये, उसी वक़्त आदम अलै० ने यह अर्ज़ किया "अल्लाह हुम्म असअलकु बे हक़्क़ि मुहम्मदिन अन तग़ फ़िरली" यानी (सवाल करता



हूं तुझ से मुहम्मद सल्ल० के तुफ़ैल से मुझे बख़्श दे) उसी वक़्त फ़रिश्तों को हुक्म हुआ कि ऐ फ़रिश्तों आदम हमारी दरगाह में बड़ा शफ़ी लाया है अब ताज़ीम करो उसकी, और कह दो कि हमने नामे मुहम्मद सल्ल० की बदौलत तुम्हारी ख़ता माफ़ की, लिखा है कि बेशुमार फ़रिश्ते उस वक़्त आदम अलै० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन के जिस्म से गरदो ग़ुबार झाड़ते थे और कहते थे ला तह जन या आदम, यानी अब कुछ ग़म न करो ऐ आदम। फिर अल्लाह पाक ने फ़रमाया "ऐ आदम तुमने मुहम्मद सल्ल० को कहां से जाना अभी तो हमने उनको पैदा भी नहीं किया है।" आदम अलै० ने अर्ज़ किया कि ख़ुदा वन्दा जिस वक़्त तूने मुझे पैदा करके मुझ में रूह डाली थी सर उठाकर अर्श की तरफ़ देखा कि अर्श के पायूं पर लिखा था, "लाइलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह" पस मैंने जान लिया था कि यह अल्लाह ने अपने नाम से इसका नाम मिलाकर लिखा है जो उसे सबसे प्यारा है" इर्शाद हुआ कि ऐ आदम तूने सच कहा वाक़ई में मुहम्मद सल्ल० मेरा हबीब है और जो कुछ मैंने पैदा किया है सब उसी के तुफ़ैल से है अगर उसको पैदा करना मनज़ूर न होता तो कुछ भी पैदा करने की ज़रुरत न थी यहां तक कि तुझको भी पैदा न करता अब हमने उसके तुफ़ैल से तेरा क़ुसूर माफ़ किया और क़सम है अपनी इज़्ज़तो जलाल की कि जो कोई तेरी औलाद से मुहम्मद सल्ल० का वसीला पकड़ेगा उस की ख़ताएं हम माफ़ करेंगे और उसकी मुरादें पूरी करेंगे,

*आदम की ख़ता बख़्शी गई दममें दम आया*
*जिस दमकि लिया पेशे ख़ुदा नामे मुहम्मद*
*पढ़ो दुरूद पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ो*
*दुरूद से कभी ग़ाफ़िल न हो दुरूद पढ़ो*

# रिवायत

जब आदम, अलै० का क़ुसूर माफ़ हुआ तो पैदाइश का सिलसिला जारी हुआ, आदते इलाही इस तरह हव्वा के शिकमे मुबारक से हर बार एक बेटा और एक बेटी साथ पैदा होते रहे लेकिन जब हज़रत शीस पैदा हुए तो वह अकेले पैदा हुए इसमें नुकता यह है कि नूरे मुहम्मद सल्ल० अपने और ग़ैर के दरमियान मुश्तरक न हो, देखिये ग़ैरते ख़ुदावन्दी ने इतनी शिरकत भी गवारा न फ़रमाई, दूसरे यह कि हुज़ूर सल्ल० का साया न था, रिवायत है कि हज़रत आदम अलै० से नूरे मुहम्मदी सल्ल० के लिए कि जो उनकी पुश्त में था अहद लिया गया था कि इसकी ताज़ीमो तौक़ीर करते रहे, और पाक औरतों में मुन्तक़िल करे, हज़रत आदम अलै० ने इक़रार किया और फ़रिश्ते गवाह हुए और जब आदम अलै० की वफ़ात का ज़माना क़रीब आया तो उन्होंने अपने बेटे शीस अलै० को वसीयत की कि जो तुम्हारी पुश्त में नूर है उसकी मुहाफ़िज़त ज़रूरी है इस नूरे मुतहर की ताज़ीम व तकरीम में क़ुसूर न होने पाए, अरहामे तैयबा व ताहिरामे नूरे पाक तफ़बीज़ किया जाये, चुनांचे वह नूरे मुबारक नेक मरदों और नेक औरतों में मुन्तक़िल होता रहा आदम से शीस और इदरीस और नूह, और इब्राहीम, और इस्माईल अलै० को मुमताज़ हुआ, अब्दुल मुत्तलिब फिर उन से अबदुल्लाह में आया, जिस पुश्त में यह नूरे मुहम्मदी आता था, एक नया जल्वा दिखाता था यानी आदम अलै० की ख़ता इसी नूर की बरकत से माफ़ हुई। हज़रत शीस अलै० के जिस्म से मुश्क की ख़ुशबू इसी नूरे पाक की बाइस से आई, हज़रत नूह अलै० की किश्ती उसी के तसर्रुफ़ ने तिराई अल्लाह पाक ने इब्राहीम अलै० पर आग को गुलज़ार इसी नूर की मुहब्बत से बनाया, इस्माईल की जगह जन्नत से दुम्बा इसी नूरी की बदौलत आया और बग़ैर ज़बह ज़बीहुल्लाह इसी के सबब से कहलाये, अब्दुल मुत्तलिब की दुआ ने इसी नूर के बाइस क़बूलियत के दरजे पाये हज़रत अब्दुल्लाह को देख कर तमाम बुत मुंह



गिरते थे और पुकारते थे कि ऐ अब्दुल्लाह हमारे क़रीब न आना क्योंकि हमारे मिटाने वाले का नूर तुझ में चमक रहा है वह यही नूर था, और अब्दुल्लाह जो हर शजर व हजर से सलाम की आवाज़ सुनते थे वह फ़िल हक़ीक़त इसी नूर का ज़हूर था।

# क़सीदा

*नैरंगियां अजब थीं मुहम्मद के नूर की*
*हर जानए अदा थी करम के ज़हूर की*
*आंखों में रौशनी है मुहम्मद के नूर की*
*बिजली चमक रही है निगाहों से तूर की*
*हर गुल है जल्वागाह मुहम्मद के नूर की*
*बुल-बुल चहक रही है सना में हुज़ूर की*
*गुन्चों में इतर बेज़ है ख़ुशबू हुज़ूर की*
*नैरंगियां हैं गुल में मुहम्मद के नूर की*
*हम आसियों को बख़्श गई पाक कर गई*
*मौज आ गई जो रहमते रब्बे ग़फ़ूर की*
*रहमत ने आके जोश में की ग़र्क कश्तियां*
*ऐबों की मासियत की ख़ता की क़ुसूर की*
*बुत कह रहे थे वक़्त हलाकत का आ गया*
*आमद है अब तो शाफ़िए यौमुन नशूर की*
*अक्बर ख़ुदा के फ़ज़्ल से जन्नत को साथ-साथ*
*पढ़ता हुआ चलूंगा मैं नातें हुज़ूर की*

रिवायत है कि हज़रत अब्दुल्लाह के बारह भाई थे और सब शुजाअत व क़ुव्वत और हुस्नो जमाल में मशहूर नज़दीको दूर थे, लेकिन हज़रत अब्दुल्लाह इन सबमें मुमताज़ और यकताए ज़माना थे, और तमाम

बिलादों में उनके हुस्नो जमाल का चर्चा और सूरत व सीरत की धूम थी तमाम अहले अरब उनकी मुहब्बत का दम भरते थे और वालदैन भी सब बेटों से ज़्यादा हज़रत अब्दुल्लाह ही को चाहते थे जिस वक़्त अब्दुल्लाह, मक्के के बाज़ारों में गुज़रते थे तमाम औरतें शहर की जो हसीनों जमील थीं वह सब हज़रत अब्दुल्लाह पर जानो माल से फ़िदा होती थीं, और हर एक उनसे निकाह की आरज़ू रखती थीं जब हज़रत अब्दुल मुत्तलिब को यह बात मालूम हुई तो हमातन उनके निकाह की फ़िकर में मसरुफ़ हो गये और ज़्यादा जुस्तजू थी कि जो लड़की क़ुरैश के हस्बो नसब सूरत व सीरत में ख़ूबतर हो वह इनके निकाह में लाई जाए, चुनांचे वहब ज़हरी की लड़की बीबी आमिना ख़ातून सूरत व सीरत में लासानी और आसारे सआदत उनके नूरानी चेहरे से अयां थे, अहले तहक़ीक़ लिखते हैं कि अल्लाह पाक ने उस वक़्त इन्तेज़ाम व एहतेराम फ़रमाया कि मक्के में जितने मर्द थे उनमें से हज़रत अब्दुल्लाह को और जितनी लड़कियां थीं उन में से बीबी आमिना ख़ातून को इन्तेख़ाब फ़रमाया था, कि यही दोनों मेरे महबूब के मां बाप बनें।

## रिवायत

अब्दुल मुत्तलिब ने हज़रत अब्दुल्लाह के निकाह का पैग़ाम बाज़ अहबाब के हाथ वहब ज़हरी के घर भेजा, वहब ज़हरी बहुत ख़ुश हुए और ब दिल मन्ज़ूर किया अब महर वग़ैरह की शरतें बाहम ख़ुशी तरफ़ैन ने मन्ज़ूर कीं ग़रज़ कि यह रिश्ता दोनों तरफ़ पसंद हुआ फ़रीक़ैन का दिल बहुत ख़ुश हुआ अब्दुल मुत्तलिब ने वक़्त मुक़र्रर पर अहबाब दोस्त वग़ैरह को ज़मा किया और निकाह किया और बीबी आमिना ख़ातून को बियाह कर घर लाए पहले एक चांद रोशन था अब घर में दो चांद रोशन हो गये, अब्दुल्लाह के मां बाप कभी अपने बेटे



की सूरत देखते थे, और कभी अपनी बहू को देखकर अल्लाह तआला का शुक्रिया बजा लाते थे ख़ुदा ने जैसा बेटा अता किया था वैसी ही बहू भी इनायत की।

## रिवायत

जिस दिन वह नूरे मुहम्मदी (सल्ल०) हज़रत आमिना ख़ातून को इनायत हुआ बारहवीं जमादिउल आख़िर शबे जुमा थी उस शब को जो नूरे मुहम्मदी (सल्ल०,) ने शर्फ़ बुज़ुर्गी बख़्शी वह बे इन्तिहा अल्लाह पाक ने तरह तरह की ख़ैरो बरकत अहले आलम पर नाज़िल फ़रमाई कि शबे क़द्र से उसको बेहतर समझो और अफ़ज़ल जानो तो ज़ेबा है, इस रात को जन्नत के मुहतमिम को हुक्म हुआ कि तमाम जन्नत के दरवाज़े खोलदे कि हमारा हबीब मां के शिकमे मुबारक में आया है आलमे मलकूत व जबरुत में यह हुक्म सुनाया गया कि तमाम मुक़द्दस मुक़ामों को मुअत्तर करो और अतराफ़ समावात में ख़ुशबू बसाओ चारों तरफ़ नूर की शमें रौशन हों सारा जहां ख़ुशबू से महक जाए। अर्श व कुर्सी यह ख़ुश ख़बरी सुनकर मारे ख़ुशी के झूमने लगे और फ़रिश्तों में मुबारक बाद होने लगी।

## कसीदा

*मुबारक हो कि पैदा शाहे वाला होने वाला है*
*कि जिसके नूर से घर-घर उजाला होने वाला है*
*बजेगा शश जहत में दीन और इस्लाम का डंका*
*मुहम्मद का जहां में बोल बाला होने वाला है*
*मिटेगी बुत परस्ती तख़्त उलटेंगे शयातीं के*
*बुतों के मुल्क में अल्लाह वाला होने वाला है*

*खुलेंगे ख़ल्क़ पर जो दो नवाले हक़ के दरवाज़*
*कि कुफ़र इस्लाम के मुंह का निवाला होने वाला है*
*घटायें रहमतों की गुल्शने आलम में छाएंगी*
*कि पैदा काली-काली ज़ुल्फ़ों वाला होने वाला है*
*अरब में चांद निकलेगा जहां में रौशनी होगी*
*अंधेरे में रिसालत का उजाला होने वाला है*
*न डालें कुमरियां क्यों गरदनों में तौक़ उलफ़त के*
*कि पैदा इस चमन में सर्व बाला होने वाला है*
*पिलाएगा जो भर भर के साग़रे तौहीद मस्तों को*
*वह साक़िए शराबे हक़ तआला होने वाला है*
*शराबे ईश्क़े अहमद पी यहां दिल खोल कर अक्बर*
*वहां भी नज़र कौसर का प्याला होने वाला है*

मौलाना बरजनजी अपने "मौलूद शरीफ़" में लिखते हैं उनका तरजुमा यह कि ज़मीनो आसमान में ख़ुशख़बरी सुनाई गई अनवारे ज़ातिया मुहम्मदिया से आमिना ख़ातून के हामिला होने की और बोल उठे आमिना ख़ातून के हमल की ख़बर सुनकर तमाम चौपाए क़ुरैश के अरबी ज़बान में बड़ी फ़साहत के साथ, और उंधे हो गए तख़्त बादशाहों के, और गिर पड़े बुत मुंह के बल उलटे और बशारत दी मशरिक़ और मग़रिब के वहशी जानवरों चरिन्द व परिन्द ने दरियाई जानवरों को और बशारत दी जिन्होंने आपके ज़माने की पैदाइश के क़रीब होने की और सुस्त हो गई कहानत और मिट गया जोगियों का जोगी पन, और आपकी वालिदा को ख़्वाब में ख़ुश ख़बरी दी गई कि कोई उनसे कहता था तेरे पेट में सरदार तमाम आलम के और बेहतर है सारी ख़ल्क़त में और जब यह पैदा हों तो नाम इन का मुहम्मद सल्ल० रखना इसलिए कि अनजाम नेक है, और फिर हुक्म हुआ जिब्रईल अलै० को फ़रिश्तों की जमाअत के साथ एक अलम सब्ज़ मुहम्मदी सल्ल० लेकर दुनिया में जाओ और इस अलम को काबे की छत पर



खड़ा करो और मुनादी करो कि आज की रात नूरे मुहम्मदी (सल्ल०) से हज़रत आमिना मुशर्रफ़ हुई हैं और ऐ अहले ज़मीन ख़ुश हो और फ़ख़्र करो कि दोनों जहां के सरदार हबीब अल्लाह मुहम्मद रसूल (सल्ल०) तशरीफ़ लाए हैं। ख़ुश क़िस्मत उस उम्मत की कि मुहम्मद (सल्ल०) पैग़म्बर पाए ज़हे तक़दीर उस शख़्स की कि जो ईमान लाए मुहम्मद (सल्ल०) पर और पढ़े लाइलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह

*दुरूदो सलाम ऐ ख़ुदा भेज बेहद*
*बरूहे मुहम्मद व आले मुहम्मद*
*पढ़ो दुरूद पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ो*
*दुरूद से कभी ग़ाफ़िल न हो दुरूद पढ़ो*

लिखा है कि हज़रत आमिना ख़ातून के हामिला होने से पहले अहले क़ुरैश ब सबब ख़ुश्क साली के (क़हत) की मुसीबत में मुबतिला थे। तमाम दरख़्त सूख गये थे सबज़ा तक ज़मीन पर न दिखाई देता था, सब आदमी और जानवर दुबले हो गए थे परेशानी ही परेशानी थी, जिस वक़्त हुज़ूर वालिदा के शिकम में रौनक़ अफ़रोज़ हुए तो अल्लाह तआला ने ख़ूब पानी बरसाया तमाम दरख़्त ख़ुश्क सर सब्ज़ो शादाब हो गए और क़िस्म क़िस्म के अनाज की फ़सल निहायत उमदा हुई जानवर सब मोटे ताज़े हो गए दूध देने वाले जानवर बकसरत दूध देने लगे उस साल ऐसा चैन अहले अरब को हुआ कि उस बरस का नाम सेनतुल फ़रहेवलइब तेहाज रखा। यानी फ़रहत और ख़ुशी का साल

# कसीदा

*आदमे मुस्तफ़ा से है फूला फला चमन चमन*
*आई बहार हर तरफ़खिलने लगा चमन चमन*
*शादी है हर मुक़ाम में नख़्ल है सब क़याम में*
*डालियां हैं सलाम में सर है झुका चमन चमन*
*कलियां तमाम खिल गईं शाख़ें खुशी से हिल गई*
*बुलबुलें गुलसे मिल गईं हंसने लगा चमन चमन*
*झूमता है शजर शजर ताज़ा हुआ है फूल फल*
*सब्ज़ हुई रविश रविश गुल से भरा चमन चमन*
*ठंडी हवाएं आती हैं कलियां भी मुस्कुराती हैं*
*बुलबुलें चह चहाती हैं सल्ले अला चमन चमन*
*बादे ख़िज़ां को छांटती ख़ुश्बू से सबको आटती*
*फिरती इतर बांटती बादे सबा चमन चमन*
*सब्ज़ी की बस्ती बस गई ख़ुश्की तरस तरस गई*
*आके बरस बरस गई काली घटा चमन चमन*
*नात में कीलो काल हो मिंदहते ज़ुलजलाल हो*
*अक्बरे ख़ुश मकाल हो नग़मा सरा चमन चमन*

मुहद्दिस इब्ने अल जोज़ी बयाने "मिलादुन नबी" में लिखते हैं कि जिस शब को नूरे मुहम्मदी सल्ल० हज़रत आमिना को इनायत हुआ अल्लाह तआला का इर्शाद हुआ कि ऐ अर्श अनवार के बुरक़े पहन लो। ऐ कुरसी फ़ख़र की चादरें ओढ़ लो। ऐ जन्नत की हूरो खिड़कियों में आरास्ता हो जाओ, ऐ फ़रिश्तो नूर के पटके बांधकर अर्श के गिर्द खड़े हो जाओ ऐ बहिश्त के दरोग़ा जन्नत के दरवाज़े खोल दो ऐ दोज़ख़ के मालिक जहन्नम के दरवाज़े बंद करदे, कि हमारे महबूब अपनी वालिदा के शिकम में जलवा अफ़रोज़ हुए हैं।



हज़रत बीबी आमिना फ़रमाती हैं कि हमल के शुरू से छ: महीने तक मुझे कोई अलामत हमल की ज़ाहिर नहीं हुई, उमूमन और औरतों को इस हालत में गिरानी या बार मालूम हुआ करता है बल्कि जिस क़द्र विलादत शरीफ़ का ज़माना क़रीब आता जाता था आसारे सुरूर व फ़रहत बढ़ते जाते थे, और तबीयत को मईविसात व शगुफ़तगी होती थी और सबसे ज़्यादा मेरी इज़्ज़त व तौक़ीर यह हुई कि हर महीने में एक एक पैग़म्बर आते थे, और मुझे ख़ुशख़बरी सुनाते थे। यानी पहले हज़रत आदम अलै० तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि आमिना तुम्हारे शिकमे मुबारक में वह साहबे ताज़ीम है जो सारे आलम का बुज़ुर्ग है और दूसरे महीने में हज़रत नूह अलै० तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि तुम्हारे शिकम में वह फ़रज़न्द है जो साहबे नुसरत व फ़ुतूह है; तीसरे महीने में हज़रत इद्रीस अलै० और चौथे में हज़रत इब्राहीम अलै० और पांचवे में हज़रत इस्माईल अलै० और छट्टे में हज़रत मूसा अलै० और सातवें में हज़रत सुलैमान अलै० और नव्वे में हज़रत ईसा अलै० तशरीफ़ लाए और सबने तरह तरह के फ़ज़ाएल के साथ ख़ुशख़बरी सुनाई।

# रिवायत

जब चांद के हिसाब से नौ महीने पूरे हुए और वक़्त आप की पैदाइश का क़रीब आया तो आप की वालिदा के पास हज़रत बीबी आसिया और हज़रत बीबी मरियम अलै० हाज़िर हुई और बहुत सी जन्नत की हूरें उनके साथ थीं, आपकी वालिदा फ़रमाती हैं, कि उनसे मेरा सारा घर भर गया वह सब कहती थीं कि अल्लाह तआला ने आपकी ख़िदमत के लिए हमें भेजा है आपकी वालिदा फ़रमाती हैं कि उस वक़्त मुझे प्यास मालूम हुई उसी वक़्त एक नूरानी फ़रिश्ता मेरे पास आया उसके हाथ में एक शरबत का गिलास भरा हुआ था, जो दूध से ज़्यादा सफ़ेद

और उस में शहद से ज़्यादा मीठा और बरफ़ से ज़्यादा ठंडा और इसमें गुलाब की ख़ुशबू आ रही थी मेरे हाथ में दिया और कहा कि पी लो यह जन्नत से तुम्हारे लिए शर्बत आया है चुंनाचे ख़ूब सेर होकर पिया, फिर कहा और पियो मैंने और पीया, उस वक़्त तिशनगी रफ़ा हुई और सुकून हासिल हुआ।

## ⑤ मुसद्दस #

*निदा थी कि सरकार तशरीफ़ लाओ*
*शहनशाहे अबरार तशरीफ़ लाओ*
*रसूलों के सरदार तशरीफ़ लाओ*
*दो आलम के मुख़्तार तशरीफ़ लाओ*
*ज़मीं को भी इज़्ज़त हो अर्शे अला की*
*दिखा जाओ बन्दों को सूरत ख़ुदा की*
*खड़े थे मलक वही तक़लीद अब हो*
*कि ख़ुश जिससे रूहे रसूले अरब हो*
*निकल जाए महफ़िल से जो बे अदब हो*
*उठो ताकि तअज़ीमे महबूबे रब हो*
*फ़जाअ मुहम्मद बशीरुन नज़ीरा*
*फ़सल्लु अलैहे कसीरन कसीरा*



## ⑥ दुरूद-व-सलाम #

### (जो खड़े होकर पढ़ते हैं)

*या नबी सलाम अलैका या रसूल सलाम अलैका*
*या हबीब सलाम अलैका सलवा तुल्लाह अलैका*
*फ़ख़रे आदम फ़ख़रे हव्वा फ़ख़रे नूह फ़ख़रे यहया*
*फ़ख़रे इब्राहीमो मूसा फ़ख़रे इस्माईलो ईसा*
*या नबी सलाम अलैका या रसूल सलामं अलैका*
*या हबीब सलाम अलैका सलवा तुल्लाह अलैका*
*रहमतों के ताज वाले दो जहां के राज वाले*
*अर्श के मेराजं वाले आसियों की लाज वाले*
*या नबी सलाम अलैका या रसूल सलाम अलैका*
*या हबीब सलाम अलैका सलवा तुल्लाह अलैका*
*है यह हसरत दरपे आयें अश्क के दरिया बहायें*
*दाग़ सीने के दिखायें सामने हो कर सुनायें*
*या नबी सलाम अलैका या रसूल सलाम अलैका*
*या हबीब सलाम अलैका सलवा तुल्लाह अलैका*
*यारब यह दुआ करें हम दरे मौला पे जाकर*
*पहले कुछ नातें सुनाकर यह पढ़ें सर को झुका कर*
*या नबी सलाम अलैका या रसूल सलाम अलैका*
*या हबीब सलाम अलैका सलवा तुल्लाह अलैका*
*बख़्श दो जो चीज़ चाहो क्योंकि महबूबे ख़ुदा हो*
*अब तो बाबे अबा हो हां जवाब इसका अता हो*
*या नबी सलाम अलैका या रसूल सलाम अलैका*
*या हबीब सलाम अलैका सलवा तुल्लाह अलैका*

या नबी सलाम अलैका या रसूल सलाम अलैका
या हबीब सलाम अलैका सलवा तुल्लाह अलैका

रंजो ग़म खाये हुए हैं दूर से आये हुए हैं
तुम पे इतराए हुए हैं हाथ फैलाए हुए हैं

या नबी सलाम अलैका या रसूल सलाम अलैका
या हबीब सलाम अलैका सलवा तुल्लाह अलैका

जान कर काफ़ी सहारा ले लिया है दर तुम्हारा
ख़ल्क़ के वारिस ख़ुदारा लो सलाम अब तो हमारा

या नबी सलाम अलैका या रसूल सलाम अलैका
या हबीब सलाम अलैका सलवा तुल्लाह अलैका

हां यह पूरा मुद्दआ हो हम हों दर बारे ख़ुदा हो
तुम उधर जल्वा नुमां हो इस तरफ़ से यह सदा हो

या नबी सलाम अलैका या रसूल सलाम अलैका
या हबीब सलाम अलैका सलवा तुल्लाह अलैका

अक्बरे शैदा तुम्हारा फिर रहा है मारा मारा
जाबजा तुम को पुकारा उसकी अब सुनलो ख़ुदारा

या नबी सलाम अलैका या रसूल सलाम अलैका
या हबीब सलाम अलैका सलवा तुल्लाह अलैका

आशिक़े माइल की सुन लो बानिये महफ़िल की सुन लो
सामई के दिल की सुन लो अक्बरे बिस्मिल की सुनलो

या नबी सलाम अलैका या रसूल सलाम अलैका
या हबीब सलाम अलैका सलवा तुल्लाह अलैका

आप शहे इन्सो जाँ हैं वारिसे कौनों मकां हैं
रहनुमाए दो जहां हैं पेशवाए मुरसलां हैं

या नबी सलाम अलैका या रसूल सलाम अलैका
अलैका सलवा तुल्लाह अलैका



नूरे रब्बुल आलमीं हो जल्वए हक्कुल यक़ीं हो
सरवरे दुनिया व दीं हो दिल में आंखों में मकीं हो

या नबी सलाम अलैका या रसूल सलाम अलैका
या हबीब सलाम अलैका सलवा तुल्लाह अलैका

बादशाहे अंबिया हो नूर जाते किब्रिया हो
हामिए रोज़े जज़ा हो ख़ल्क़ के मुश्किलकुशा हो

या नबी सलाम अलैका या रसूल सलाम अलैका
या हबीब सलाम अलैका सलवा तुल्लाह अलैका

अर्शे आज़म पर तुम ही हो ख़ल्क़ के रहबर तुम ही हो
साकिए कौसर तुम ही हो शाफ़ए महशर तुम ही हो

या नबी सलाम अलैका या रसूल सलाम अलैका
या हबीब सलाम अलैका सलवा तुल्लाह अलैका

क़ाबिले मदहो सना हो जो लिखूं उससे सिवा हो
आपकी तौसीफ़ क्या हो यानी महबूबे ख़ुदा हो

या नबी सलाम अलैका या रसूल सलाम अलैका
या हबीब सलाम अलैका सलवा तुल्लाह अलैका

दूर हो ग़म का किनारा सरवरे आलम ख़ुदारा
दीजिए जल्दी सहारा पार हो बेड़ा हमारा

या नबी सलाम अलैका या रसूल सलाम अलैका
या हबीब सलाम अलैका सलवा तुल्लाह अलैका

मेरे मौला मेरे सरवर है यही अरमाने अक्बर
पहले क़दमों पर रखे सर फिर कहे यह सर उठा कर

या नबी सलाम अलैका या रसूल सलाम अलैका
या हबीब सलाम अलैका सलवा तुल्लाह अलैका

## क़सीदा

जब कि पैदा वह शाहे जमन हो गया
एक जहां गैरते सद चमन हो गया

वक़्ते मिलाद हर गुन्चा गुलज़ार में
ख़न्दाज़न ख़न्दाज़न ख़न्दाज़न हो गया
तख़्त उंधे हुए और इबलीस भी
बे वतन बे वतन बे वतन हो गया
बुत शिकश्ता हुए और ख़िताब आपका
बुत शिकन बुत शिकन बुत शिकन हो गया
आप के रुए रौशन पे ख़ुद शेफ़्ता
ज़ुलमनन ज़ुलमनन ज़ुलमनन हो गया
आप के फ़ैज़ से बहरे फ़ज़्ले ख़ुदा
मोजज़न मोजज़न मोजज़न हो गया
चाक उश्शाक़ का आप के हिज्र में
पैरहन पैरहन पैरहन हो गया
तुम पे क़ुरबान हमारा शहे अम्बिया
जानोतन जानोतन जानोतन हो गया
आप के हिज्र में अक्बरे नीम जां
ख़सता तन ख़सता तन ख़सता तन होगया

## ७ मुसद्दस

लो वह फ़ख़रे अय्यूब तशरीफ़ लाए
लो वह जाने याक़ूब तशरीफ़ लाए
लो वह कुल मतलूब तशरीफ़ लाए
लो वह हक़्के महबूब तशरीफ़ लाए
सलामी ख़ुदा है सलामी बशर हो
दुरूदो सलाम उन पे आठों पहर हो
मुबारक हो सरकार तशरीफ़ लाए
ग़रीबों के ग़मख़्वार तशरीफ़ लाए



शफ़िए गुनहगार तशरीफ़ लाए
वह कुल के मददगार तशरीफ़ लाए
कि नबी सब बराती दुल्हा यही हैं
कि बांधे शफ़ाअत का सेहरा यही हैं
शहनशाहे आलम हुआ जल्वा फ़रमा
मुफ़स्सल मुअज़्ज़म हुआ जल्वा फ़रमा
शयातीं को है ग़म हुआ जल्वा फ़रमा
रसूले मुकर्रम हुआ जल्वा फ़रमा
कि वह सुलतान कौनैन पैदा हुआ है
कि अल्लाह भी जिसपे शैदा हुआ है
बयां कर सके कौन तौसीफ़ उनकी
कि तारीफ़ ख़ालिक़ है तारीफ़ उनकी
गवारा न थी हक़ को तकलीफ़ इनकी
हसीनों की कुल ख़ूबियां लेके आए
हबीबों की महबूबियां लेके आए
किसी ने कहा यह तो सरदारे कुल हैं
किसी की सदा थी यह ख़त्मे रसूल हैं
कोई बोला गुलज़ारे वहदत के गुल हैं
जो पूछा गया ऐ ख़ुदा कौन हैं यह
निदा आई मुख़तियारे कौनैन हैं यह
है जिनका बड़ा बोल बाला वह यह हैं
है सारे जगत का उजाला वह यह हैं
जो नबियों में हैं सब से आला वह यह हैं
रसूल इनका अकसामे ख़ुतबा पढ़ेंगे
मलक इनका गरदोंपे कलिमा पढ़ेंगे
यह बचपन में भी कारे पीरी करेंगे
फ़क़ीरों की यह दस्तगीरी करेंगे

अमीरों से ऊंची अमीरी करेंगे
शहनशाह इनकी फ़क़ीरी करेंगे
बहुत ख़ूब थे ख़ूब हैं ख़ूब होंगे
ख़ुदा इनको चाहेगा महबूब होंगे

यह कुलमें हुकूमत है किसकी इन्हीं की
भली सब से उम्मत है किसकी इन्हीं की
बड़ी सबसे उम्मत है किसकी इन्हीं की
ख़ुदा को मुहब्बत है किसकी इन्हीं की
ख़ुदाई भी इनकी ख़ुदा भी इन्हीं का
है सबसे बड़ा मर्तबा भी इन्हीं का

नबी दीने इस्लाम वाले यही हैं
बड़े नेक अन्जाम वाले यही हैं
हक़ीक़त में अहकाम वाले यही हैं
है इनका निशां नाम वाले यही हैं
यही अर्श पर होंगे मेराज वाले
क़दम इनके चूमेंगे सब ताज वाले

ख़बरदारे आशेफ़्ता हाली ख़बरले
गदा की शहनशाहे आली ख़बरले
भिखारी चला हाथ ख़ाली ख़बरले
ख़बरले ग़रीबों के वाली ख़बरले
ख़बरले कि है हर बलाने ख़बर ली
जो तूने ख़बरली ख़ुदाने ख़बर ली

हुई है न होगी ख़ुशी ऐसी अक्बर
हों ईदें फ़िदा ईदे मिलाद शह पर
हुए फ़र्श से अर्श तक कुल मुअत्तर
यह आलम मुनव्वर वह आलम मुनव्वर



दो आलम किये एक जलवे में रोशन
मकां आमिना का बना दश्ते ऐमन

लाखों फ़रहतें इस घड़ी की फ़रहत पर क़ुरबान जिस घड़ी में हुज़ूरे अनवर ने इस दुनियां के ज़ुलमत कदे को रौशन फ़रमाया और करोड़ों मुसर्रतें उस साअत की मुसर्रत के सदक़े कि इस साअत में सरकारे अतहर ने इस जहां के वीराने को रश्के गुलशन बनाया। अज़लसे अबद तक की सब शादी मौलूद पर फ़िदा। और अव्वल से आख़िर तक की कुल ईदें इस ईदे मिलाद के निसार हों, और क्यों कर न हों यह सब इन ही की तो तुफ़ैल हैं।

## कसीदा

ईदे मिलाद पे तेरी हों फ़िदा कुल ईदें
यह बने ईदका गुल गुलकी हों बुलबुल ईदें
ईद मिलाद मुहम्मद से नहीं बढ़ सकतीं
लाख दिखलाया करे शाने तजम्मुल ईदें

यह बहारें यह फ़बन इन में कहां से आती
गर न पाती मेरे प्यारे का तवस्सुल ईदें
ईद मिलाद न होती तो न होती यह भी
अपनी हस्ती पे करे ग़ौर तहम्मुल ईदें

पढ़ो दुरूद पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ो
दुरूद से कभी ग़ाफ़िल न हो दुरूद पढ़ो
दुरूदो सलाम ऐ ख़ुदा भेज बेहद
बरूहे मुहम्मद व आले मुहम्मद

आप की वालिदा माजिदा फ़रमाती हैं कि, पैदाइश के वक़्त तमाम घर में उजाला हो गया हर दरो दीवार पर नूर ही नूर नज़र आता

था, एक नूरानी चादर ज़मीन से आसमान तक नज़र आती थी। तीन अलम मशरिक़ व मग़रिब बामे काबा पर मालूम हुए और जिस वक़्त आप पैदा हुए चार औरतें आसमान से उतरीं एक बीबी हव्वा दूसरी बीबी आसिया तीसरी बीबी सारा, चौथी बीबी हाजरा, एक के पास सोने का तबक़ और दूसरी के पास ज़ुमुर्रद का लोटा तीसरी के पास सफ़ेद हरीर (रेशमी कपड़ा) चौथी के पास बिहिश्ती अतरदान। चारों ने हज़रत मुहम्मद सल्ल० को नहला धुलाकर हरीर सफ़ेद पहनाया और बिहिश्ती ईतर लगाया जिससे सारा मकान महक गया, और यह ज़बाने हाल से फ़रमाया।

## कसीदा

*बुवा इस महे लक़ा को गोद में लो*
*चहिते मुस्तफ़ा को गोद में लो*
*उजाला हो गया दोनों जहां में*
*अब इस बदरूददुजाको गोद में लो*
*जो चाहो फ़रहते दिल राहते रुह*
*तो इंस राहत फ़िज़ाको गोद में लो*
*निगाहें इस के जल्वों पर फ़िदा हैं*
*लो इस यूसुफ़ लक़ा को गोद में लो*
*हमारे दिल हुए जाते हैं बेताब*
*तुम अपने दिलरूबा को गोद में लो*
*ख़ुदारा बद निगाहों से बचाओ*
*छिपा कर मुस्तफ़ा को गोद में लो*
*है जन्नत का चमन क़ुरबान इस पर*
*गुले रंगीं अदा को गोद में लो*



*वह कहती थीं मुहब्बत से यह अक्बर*
*हबीबे किबरिया को गोद में लो*

आप की वालिदा माजिदा फ़रमाती हैं कि मैं ने गोद में लिया, आप उस वक़्त मेरी गोद से उतरे और सिज्दे में जाकर अर्ज़ करने लगे "या रब्बे हबली उम्मती" (या अल्लाह मेरी उम्मत को बख़्श दे। या अल्लाह मेरी उम्मत को बख़्श दे।)

*सर सिज्दए माबूद में रखकर यह अर्ज़ की*
*या रब्बे हबली उम्मती या रब्बे हबली उम्मती*

ग़ैब से आवाज़ आई, "वहबतु के उम्मतों के व अला हिम्मते के।" (बख़्श दी तुझ को तेरी उम्मत ब सबब बुलंद हिम्मत के)

*आवाज़ आई ऐ नबी बख़्शी तुझे उम्मत तेरी*
*तुझ पे हुई रहमत मेरी आला हुई हिम्मत तेरी*

हुक्मे बारी हुआ कि गवाह रहो ऐ फ़रिश्तो कि मेरा हबीब पैदाइश के वक़्त भी अपनी उम्मत को नहीं भूला, फिर क़ियामत में क्यों कर भूल जाएगा, मुसलमानो! क़ुरबान हो जाओ उस महबूब पर कि जिसने दुनिया में आते ही हमारी नजात व बख़शिश की फ़िक्र फ़रमाई।

*पढ़ो दुरूद पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ो*
*दुरूद से कभी ग़ाफ़िल न हो दुरूद पढ़ो*

## रिवायत

आप जिस रोज़ पैदा हुए तमाम रुए ज़मान पर एक नूर था, और अजीब शाहाना ज़हूर था हर जगह हर मज़हब व मिल्लत में जो अपनी क़ौम का आलिम व हादी था वह अपने अपने तरीक़े से आप की ख़बर देता था। यानी अहले किताब अपनी किताब से और नजूमी सितारों

के हिसाब से काहन लोग अपने ज़वाबित व आईन से असहाबे फ़ाल अपने क़वानीन से।

बीबी सुफ़िया आप की फूफी फ़रमाती हैं कि आप की विलादत के वक़्त मैं हाज़िर थी उस वक़्त तमाम मकान रौशन हो गया और उसकी रौशनी में छः चीज़ें अजीबो ग़रीब देखी एक तो यह कि आप ने पैदा होते ही सिज्दा किया, और या रब मेरी उम्मत को बख़्श दे'' फ़रमाया। दूसरे यह कि आप का नूर चिराग़ के नूर पर ग़ालिब था, तीसरे यह कि मैंने चाहा कि आप को नहलाऊं ग़ैब से आवाज़ आई, "ऐ सुफ़िया यह पाक व साफ़ हैं, तुम तकलीफ़ न करो'' चौथे यह कि आप ख़तने किये हुये पैदा हुऐ, पांचवें यह कि आप के दोनों शानों के बीच में सितारा रौशन की तरह एक मोहर चमकती हुई देखी जिस पर नूरानी ख़त से लाइलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह लिखा था, छटे यह कि उस वक़्त आप ने फ़साहत के साथ शहादत की उंगली उठा कर यह फ़रमाया अशहदु अन लाइलाह इल्लल्लाहु व इन्नी रसूलुल्लाह।

*पढ़ो दुरूद पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ो*
*दुरूदसे कभी ग़ाफ़िल न हो दुरूद पढ़ो*

हज़रत अब्दुल मुत्तलिब आप के दादा फ़रमाते हैं उस वक़्त मैं काबे शरीफ़ में था और एक बारगी देखा कि काबतुल्लाह अपनी जगह से हिला और ख़ूशी में झूमा फिर चार दीवारी के साथ झुका और मुक़ामे इब्राहीम में सिज्दा किया और फिर अपनी जगह दीवारें खड़ी हो गईं और दफ़अतन दीवारों से यह आवाज़े तकबीर बुलंद हुई। बड़ा रब है मुहम्मद का जिसने अब मुझे बुतों की नजासत और मुश्रिक़ों की नापाकी से पाक किया, और आवाज़ आई कि अल्लाह के मक़बूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल० पैदा हुए जिस-ने उनकी ज़ियारत की उसके लिये सआदत है और अपनी मुराद को पहुंचा। फिर हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने कहा सफ़ा की तरफ़ निगाह की तो वह भी कभी बुलंद



कभी पस्त मारे ख़ुशी के होता है और कोहे मरवा की तरफ़ देखा तो वह भी जोशे मुसर्रत से इसी तरह मुज़तरिब है अब यह ग़ैब की आवाज़ सुन कर और कैफ़ियते अजीबो ग़रीब देखकर हैरान व परेशान खड़े थे कि एक आदमी घर से बुलाने आया और कहा कि ऐ मक्के के सरदार बशारत हो तुम को कि तुम्हारे यहां लड़का पैदा हुआ है कि जिसके नूर से तमाम मकान रौशन हो गया और ख़ुशबू से बस गया और मक्के की गली-गली चमक गई और महक गई यह सुनकर हज़रत अब्दुल मुत्तलिब मकान की तरफ़ ख़ुशी ख़ुशी दौड़ कर आये और हज़रत आमिना से पूछा कि " मैं इस वाक़ए से हैरान हूं ख़्याल किया कि शायद ख़्वाब देखता हूं लेकिन नींद का असर आंखों में बिल्कुल नहीं इसलिए कि यह बात सच है या मेरा ख़्वाबो ख़्याल है "हज़रत आमिना ने फ़रमाया कि "सब सच है'' और जो अजाएबात नज़र से गुज़रे थे वह सब बयान किये तो हज़रत आमिना ने फ़रमाया कि अभी तुम्हारे देखने की इजाज़त नहीं है, मुहाफ़िज़ाने ग़ैब से ताकीद है कि जब तक तमाम फ़रिश्ते उन की ज़ियारत से मुशर्रफ़ न होलें। उस वक़्त तक और किसी को इजाज़त न होगी यह सुनकर हज़रत अब्दुल मुत्तलिब नाख़ुश होने लगे नाचार हज़रत आमिना ने उस तरफ़ इशारा किया। जहां आप जल्वा फ़रमा थे अब्दुल मुत्तलिब ने उस तरफ़ क़दम बढ़ाया फ़ौरन एक शख़्स ग़ैब से तलवार खींच कर सामने आया और ऐसी सख़्त आवाज़ से धमकाया कि अब्दुल मुत्तलिब डरकर कांपने लगे, और उलटे हट आये हर चंद यह माजरा अहले क़ुरैश से बयान करना चाहा लेकिन ज़बान ने काम न दिया मजबूरन चुप रहे।

आप के पैदाइश के वक़्त तमाम बुत उंधे मुंह गिर पड़े, नौशेरवां बादशाहे आज़म के महल में ज़लज़ला आ गया और शक हो गया। चौदह कंगूरे उसके टूट गये। शयातीन के तख़्त उलट दिये गये सलातीन की क़ुव्वते नातेका सल्ब हो गई। और पारसियों का आतिश कदा

जिसमें हज़ारों बरस से आग जलती थी बिलकुल बुझ गई। दरियाए सादा जो ईराक़ व अजम के दरमियान हमदान और कम के छ: कोस चौड़ा बहता था यकलख़्त सूख गया। सहराए शामावा जिसमें हज़ारों बरस से पानी की बूंद न थी, उसमें एक नदी जारी हो गई कि वह अब भी एक बड़ी नहर मुल्क शाम में मशहूर है, अल्लाह ! अल्लाह !

## कसीदा

*जब अरब के चमन में वह नूरे ख़ुदा*
*हर तरफ़ अपना जल्वा दिखाने लगा*
*कुफ़र ग़ारत हुआ बुत गिरे टूट कर*
*मुंह पहाड़ों में शैतां छुपाने लगा*
*क्या बशर क्या मलक क्या ज़मीं क्या फ़लक*
*अर्शसे फ़र्श तक शर्क़ से ग़र्ब तक*
*देख कर नूरे हक़ कोई यक ब यक*
*आमद आमद का मुज़दा सुनाने लगा*
*बदलियां रहमतों की गरजने लगीं*
*नौबतें शादमानी की बजने लगीं*
*दीन की फ़ौज हर सिम्त सजने लगीं*
*परचम इस्लाम का जगमगाने लगा*
*हर तरफ़ नूरे एज़द हवैदा हुआ*
*जिसने देखा वहीं दिल से शैदा हुआ*
*जब अरब में वह महबूब पैदा हुआ*
*सब को जितने हसीं थे घटाने लगा*
*फिर तो बहरे शरीअत में मौजें उठीं*
*चार जानिब नबुवत की फ़ौजें उठीं*



*ख़ूब अल्लाह से बातें होने लगीं*
*पास रुहुल अमीं आने जाने लगे*
*कंगूरे कसरा के गिरने लगे*
*डूबते कलिमा पढ़ पढ़ के तिरने लगे*
*आग आतिश कदों की बुझाने लगा*
*ख़ुश्क सहरा भी पानी बहाने लगा*
*सुंघाकर भीनी भीनी वह ख़ुश्बूए तन*
*देखकर रंगे रहमत चमन दर चमन*
*कह के अनता नबी पढ़ के सल्ले अला*
*बुलबुले ख़ुशनवा चह चहाने लगा*
*मोम पत्थर हुआ बोल उठे जानवर*
*उल्टा सूरज फिरा, हो गया शक क़मर*
*रफ़ए हाजत को एकजा किया दो शजर*
*उंगलियों में से चशमे बहाने लगा*
*साथ अबूबकर उमर और उस्मान अली*
*पंजतन पाक पहुंचे गली दर गली*
*दिल में यह मुद्दआ ऐ ख़ुदा कर भली*
*मुंह से हर एक कलिमा पढ़ने लगा*
*अक्बरे ख़सता की है यह चार इलतिजा*
*इनमें कोई तो पूरी हो बहरे ख़ुदा*
*या तो जल्वा दिखा या मदीने बुला*
*वरना ख़िदमत में रख दिल ठिकाने लगा*

हज़रत अब्दुल रहमान बिन ओफ़ रज़ि० की वालिदा फ़रमाती हैं कि जिसने पैदा होते ही सबसे पहले हाथों पर हज़रत को लिया वह मैं थी आप ने उसी वक़्त अलहम्दु लिल्लाह फ़रमाया, उस के जवाब में ग़ैब से किसी ने "यरहमुकु मुल्लाह" कहा और उसी वक़्त एक नूर ऐसा

चमका कि उस की रौशनी में मुल्के शाम के शाही महल नज़र आने लगे।

## ❋ रिवायत ❋

उस्मान अबिल आस की मां फ़ातिमा से मरवी है कि आप की पैदाइश के वक़्त मैं वहीं थी मैं ने एक ऐसा नूर देखा कि तमाम घर उससे रौशन हो गया और तारे आसमान से इतना झुके कि मैं समझती थी कि अब ज़मीन पर गिर पड़ेगा।

## ❋ रिवायत ❋

सुफ़ियान हजली से रिवायत है, कि क़ाफ़िला हमारा उस रात मुल्के शाम में था। सुबह होते आराम के लिए एक मुक़ाम पर क़ियाम किया और क़स्द किया कि सो रहें, सबने देखा कि दफ़अतन एक सवार ज़मीन व आसमान के दरमियान में मुअल्लक़ हुआ और निदा दी कि ऐ सोने वालो उठ बैठो यह वक़्त सोने का नहीं है क्या तुम नहीं जानते कि इस वक़्त सैयदे काएनात अलैहिस्सलात ने ज़ुहूर इजल्लाल फ़रमाया। इस्लाम का सितारा चमका और कुफ़्र की तारीकी दूर हुई रावी कहता है कि इस वारदात से हम सब को ख़ौफ़ मालूम हुआ, जब मक्के में सब अपने घर आए तो मालूम हुआ कि अब्दुल मुत्तलिब के यहां एक लड़का पैदा हुआ है और उस का नाम मुहम्मद सल्ल० है।

*दुरूदो सलाम ऐ ख़ुदा भेज बेहद*
*बरूहे मुहम्मद व आले मुहम्मद*
*पढ़ो दुरुद पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ो*
*दुरूद से कभी ग़ाफ़िल न हो दुरूद पढ़ो*

आपकी वालिदा फ़रमाती हैं कि पैदा होते ही एक सुफ़ेद अब्र का



टुकड़ा नूरानी आसमान से ज़मीन पर उतरा कि जिसमें से आवाज़ें आदमियों की और कई घोड़ों की आती थीं। वह बादल हज़रत को मेरे पास से उठाकर ले गया और कोई कहता है कि सैर कराओ मुहम्मद सल्ल० को तमाम ज़मीन की और मशरिक़ व मग़रिब की तरफ़ फिराओ और आदमियों और फ़रिश्तों और जानवरों वग़ैरह पर ज़ाहिर करो ताकि इनका नाम और सूरत पहचानें, और कोई पुकारने वाला पुकारता था कि उन को कुन्जियां नबुवत नुसरत और ख़ज़ानए आलम की, इख़लाक़ सब पैग़म्बरों के दो, आपकी वालिदा फ़रमाती हैं कि बाद एक साअत के आपको मेरे पास फिर लाए और ग़ैब से आवाज़ आई क्या ख़ूब क्या ख़ूब! मुहम्मद सल्ल० तमाम दुनिया पर मुक़र्रर हुए और कोई मख़लूक़ ऐसी बाक़ी न रही जो आप के क़ब्ज़े से बाहर हो और जो कमालात ज़ाहिरी व बातिनी और मरातिबे सुरी व मानवी सब अम्बिया को अलग-अलग इनायत हुऐ थे। वह सब आप की ज़ात वाला सिफ़ात में मौजूद हैं हक़ीक़त यह है कि अल्लाह तआला ने तमाम मख़लूक़ में से बनी आदम को अशरफ़ व अफ़ज़ल बनाया, वलक़द करमना बनी आदम और उन सब में से मोमिनीन सालेहीन और औलिया को इन्तेख़ाब किया और इन कुल में से जनाब अहमद मुजतबा मुहम्मद सल्ल० को छांट लिया अज़ल से लेकर अबद तक तमाम ख़ूबियों की ख़ुशबूओं से महकता हुआ कोई ऐसा फूल गुलशने कायनात में खिला है न खिलेगा।

## ❋ रिवायत ❋

*जब बाग़े जहां के मालिक ने की देखा भाली फूलों की*
*एक फूल उसमें से छांट लिया, थी जितनी डाली फूलों की*
*वह फूल अरब के गुल्शन का सब फूलों से ख़ुशबू वाला*
*जिसने खिलकर इस आलम में एक शान निकाली फूलों की*
*उस गुल का मुहम्मद नाम हुआ जिससे ताज़ा इस्लाम हुआ*

*शाख़ उसने काटी कांटों की बेल उसने डाली फूलों की*
*उसकी ही महक से महकी है उसकी ही चमक से चमकी है*
*है जितनी नकहत गुंचों की है जितनी लाली फूलों की*
*जन्नत से इसे निस्बत क्या है यह मेरे गुल का रौज़ा है*
*या रंग जुदा है पत्तों का या शान निराली फूलों की*
*है रश्क जिगर के ज़ख़्मों को हसरत है दिल के दाग़ों को*
*रौज़े पे शह के चढ़ते हैं क्या शान है आली फूलों की*
*तैबा का माली कहलाऊं रौज़े पर चढ़ाने को जाऊं*
*एक हाथ में गजरा कलियों का एक हाथ में डाली फूलों की*
*यह मदह सराए हज़रत है इस से उसको क्या निस्बत है*
*अक्बर मतवाला मौला का बुलबुल मतवाली फूलों की*

## ४ वाक़िआते रिज़ाअत

इसमें सबका इत्तेफ़ाक़ है कि सात दिन आप की वालिदा ने दूध पिलाया फिर चंद रोज़ सुफ़िया अबूलहब की लौंडी ने दूध पिलाया और आप की खिलाई मुक़र्रर हुई, और यह वही लौंडी है कि जो अबू लहबने मुज़दा विलादत शरीफ़ उस से सुनकर आज़ाद कर दिया था, और कह दिया था कि जा मुहम्मद सल्ल० को दूध पिलाना।

## ❋ रिवायत ❋

हज़रत अब्बास रज़ि० ने अबू लहब को ख़्वाब में देखा और दरियाफ़्त किया कि ऐ दुश्मने रसूल तेरा बाद मरने के क्या हाल हुआ? अबू लहब ने बयान किया कि "हमेशा सख़्त अज़ाबों में मुबलिता रहता हूं, लेकिन पीर की रात को उन दो उंगलियों से दोज़ख़ में पानी पीने को मिलता है। जिसने मिलादे मुहम्मद सल्ल० की ख़ुशी में सुफ़िया को आज़ाद करने का इशारा किया था। और इस रात को मुझे ऐसी राहत नसीब



होती है, कि छ: दिन का अज़ाब भूल जाता हूं'। मुसलमानों! इन्साफ़ करो कि जब ऐसे काफ़िर दुश्मने रसूल कि जिसकी मज़म्मत का कलामुल्लाह गवाह है। मिलादे मुहम्मद सल्ल० की ख़ुशी में अज़ाब से नजात पाए तो जो मुसलमान कि अपनी जान व माल इस मिलाद शरीफ़ की ख़ुशी में सर्फ़ करे वह अल्लाह तआला के इनआम व इकराम और अतीयात से महरूम रह सकता है ? यह रिवायत अहया उल-उलूम और मुवाहि उल दुनिया और शरेअ शिफ़ाए क़ाज़ी अयाज़ रह० में मौजूद और मनक़ूल है।

*पढ़ो दुरूद पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ो*
*दुरूद से कभी ग़ाफ़िल न हो दुरूद पढ़ो*

सुफ़िया के बाद वह दौलत अबदी व सआदत सरमदी हज़रत हलीमा सअदिया को इनायत हुई हलीमा से रिवायत है कि, जब आप पैदा हुए एक रात हमारे क़बीले में ग़ैब से आवाज़ आई कि ऐ बनी सआद की औरतों ख़बरदार हो अल्लाह तआला ने बरकत नाज़िल फ़रमाई है कि एक लड़का क़ुरैश में पैदा हुआ है और वह दिन का सूरज और रात का चांद है दौड़ो और जल्दी करो और शिताबी से दौलत को लो ख़ुश तक़दीर उस औरत की जो उस को दूध पिलाए हलीमा सादिया फ़रमाती हैं कि मेरे क़बीले की औरतों ने जो सुना तो अपने ख़ाविंदों को साथ लेकर मक्के की तरफ़ रवाना हुई मगर मेरी ऊंटनी निहायत ज़ईफ़ और सुस्त थी हरचंद कि उस को हांकती थी लेकिन आहिस्ता चलती थी इस वजह से मैं पीछे रह गई जब मक्के में पहुंची तो मेरे क़बीले की औरतें जो मुझसे पहले पहुंच चुकी थीं उन्होंने क़ुरैश के लड़के जो सब सरदारों और मालदारों के थे ले लिये और मैंने हरचंद तलाश किया कोई लड़का मुझको न मिला तो निहायत रंजीदा और ग़मनाक बैठी थी दफ़अतन क्या देखती हूं कि एक मर्द बड़ी शान वाले जिनके

चेहरे से सरदारी ज़ाहिर थी खड़े हैं मैंने पूछा यह शख़्स कौन हैं ? आदमियों ने कहा कि मक्के शरीफ़ के सरदार अब्दुल मुत्तलिब हैं। फिर हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने ब आवाज़े बुलंद कहा, "ऐ बनी सआदत की औरतों ! तुम में से कोई बाक़ी है जो हमारे पोते को ले ? हलीमा फ़रमाती हैं कि मैं जल्दी से बोल उठी कि "फ़क़त मैं बाक़ी हूं" उन्होंने मेरा नाम पूछा मैं ने कहा "हलीमा" तो बोले "ऐ हलीमा ! मेरा यह पोता है और इसका नाम मुहम्मद सल्ल० है बनी सआदत की औरतों ने इसे यतीम जानकर नहीं लिया तू इसे ले ले" हलीमा फ़रमाती हैं कि मैं उनके हमराह मकान में पहुंची तो क्या देखती हूं कि एक बीबी कि चेहरा उनका जैसे चौदहवीं रात का चांद रोशन है बैठी हैं मालूम हुआ आपकी मां हैं हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने मेरा हाल बयान किया हंसकर निहायत ख़ुश हुए और बहुत ताज़ीम की और उस मकान में ले गये जहां हज़रत आराम फ़रमाते थे हरे रेशम का बिछोना और सफ़ेद रेशम का रूमाल ओढ़े हुए थे और उस नूरानी जिस्म में से ख़ुश्बू महक रही थी जिस वक़्त मेरी नज़र आप के जमाले बाकमाल पर पड़ी हज़ार जान से आशिक़ हो गई और चाहा कि जगाऊं क़रीब हो कर अपना हाथ आहिस्ता से सीन-ए-मुबारक पर रखा आपने आंखें खोलदीं और मेरी तरफ़ देख कर मुस्कुराए मैंने दोनों आंखों के बीच में बोसे देकर गोद में उठा लिया और अपने दाएं तरफ़ से दूध पेश किया आप ने पिया मैं ने चाहा कि बाएं जानिब का भी पिलाऊं लेकिन आप ने नहीं पिया और अपने भाई के लिए छोड़ दिया अल्लाह अल्लाह ! यह इन्साफ़ और यह उमर।

*तिफ़ली में भी इंसाफ़ ही से दूध पिया है*
*निस्फ़ आप लिया निस्फ़ बिरादर को दिया है*
*पढ़ो दुरूद पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ो*
*दुरूद से कभी ग़ाफ़िल न हो दुरूद पढ़ो*



# ❁ रिवायत ❁

बीबी हलीमा आप को लेकर तीन दिन मक्का मुअज़्ज़मा में रहीं फिर रूख़सत हुईं जब अपने मकान पर आईं और उनके शौहर ने हज़रत को देखा तो बहुत ख़ुश हुए और सिज्दए शुक्र अदा किया, हज़रत हलीमा फ़रमाती हैं कि हमारा क़ाफ़िला रवाना हुआ और हज़रत को लेकर मैं भी चली तो ऊंटनी पर आगे हज़रत को लिये और पीछे शौहर को बिठाकर क़सद किया तो उसी ऊंटनी ने काबे की तरफ़ सिज्दे किये और ऐसी चुश्ती व चालाकी से चली कि सब साथीयों की सवारियां बहुत पीछे रह गईं और ऊंटनी उस दौलते उज़्मा और नेअमते कुबरा को ले कर इतराई हुई ज़बांने हाल से यह कहती हुई चलती थी:-

*मैं आज अपने प्यारे को लेकर चली हूं*
*ख़ुदा के दुलारे को लेकर चली हूं*
*नसीबा मेरा नाज़ करता है मुझ पर*
*कि रौशन सितारे को लेकर चली हूं*
*हैं सब अम्बीया उनका मुंह तकने वाले*
*मैं कुल के सहारे को लेकर चली हूं*
*हुए दो जहां जिसके जलवों से रौशन*
*उसी माह पारे को लेकर चली हूं*
*चली मुस्कुराती वह यह कहके अक्बर*
*मैं आज अपने प्यारे को लेकर चली हूं*

पीछे जो रह गईं थीं यह हाल देखकर वह सब क़बीले वालियां कहने लगीं कि ऐ हलीमा यह क्या बात है कि आते वक़्त तो तेरी ऊंटनी चल भी नहीं सकती थी और अब यह सबसे आगे-आगे जाती है, और अब तो तेरी ऊंटनी की कुछ और ही शान मालूम होती है। अब ख़ुदा

की क़ुदरत देखिये कि वह ऊंटनी और कहने लगी, "क़सम ख़ुदा की मेरे ऊपर ख़ातिमुल अम्बीया हबीबे परवर दिगार सल्ल० सवार हैं।"

*जिस क़दर नाज़ करुं आज मुझे ज़ेबा है*
*कि मेरी पुश्त पे सरदार रसूलों का है*
*रहमते आम को मक्के से चली हूं ले कर*
*मैं भी यकता हूं राक़िब जो मेरा यकता है*
*आज वह दिन है कि गरदों पे ज़मीं हंसती है*
*उसपे इस शान से यह चांद जो आनिकला है*
*ऐसे बन्दे के भला क्यों नहीं सेहरे गाऊं*
*सब नबी जिसके बराती हैं यह वह दुल्हा है*
*पढ़ो दुरूद पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ो*
*दुरूद से कभी ग़ाफ़िल न हो दुरूद पढ़ो*

फिर हज़रत हलीमा फ़रमाती हैं कि, मेरे कान में **ग़ैब से आवाज़** आई कि ऐ हलीमा ! अब तेरे नसीब जागे क्योंकि **तेरी गोद में हबीबे** ख़ुदा अहमद मुजतबा मुहम्मद सल्ल० हैं जो तमाम **मख़लूक़ात जिन्नो** बशर के सरदार होंगे और उनकी सब कायनात **फ़रमां बरदार होगी** और कहती हैं कि जिस मनज़िल में जाकर क़याम करती **आपके बरकत** से अल्लाह तआला उस मुक़ाम की घास और दरख़्तों को **सरसब्ज़ व** शादाब कर देता, जब मैं घर में पहुंची तो आप के क़दम की बरकत से मेरे घर में और सारी बस्ती में बहुत बरकत हुई और मेरी सब बकरियां बियाई और कसरत से दूध देने लगीं और मेरे सब जानवर मोटे ताज़े हो गए जब मेरी क़ौम ने यह हाल देखा तो अपनी बकरियों को साथ चराने लगे और मेरे यहां से हज़रत के पावं का धोवन ले जाकर अपने जानवरों के हौज़ में डालने लगे तो उनके जानवर भी मोटे ताज़े हो गए और **कसरत से** दूध देने लगे और मेरे क़बीले की



बकरियां हज़रत को अकसर सिज्दा करती थीं और पाए मुबारक को चूमती थीं और अल्लाह तआला ने सबके दिल में आप की मुहब्बत डाल दी और सब को आप पे ऐतिक़ाद बढ़ गया जिस किसी को कोई बीमारी होती तो **आप का हाथ** अपने जिस्म से लगाता मरज़ दूर हो जाता और जिस जगह **हाथ लगाता** था ख़ुशबू आने लगती और हलीमा फ़रमाती हैं कि, जिस **रोज़ से** आप मेरे यहां तशरीफ़ लाये मुझे चिराग़ जलाने की ज़रूरत न रही आप के चेहरे अनवर के नूर से मकान रोशन रहता था और जब किसी अंधेरी कोठरी में रात को जाने की ज़रूरत होती तो हज़रत को गोद में ले जाती तो वह कोठरी रोशन हो जाती और जो चीज़ मुझे लेनी होती बे तकल्लुफ़ उस नूर की रोशनी में ले लेती।

## ❋ क़सीदा ❋

*मुबारक तुझे यह बड़ाई हलीमा*
*बड़े इल्म वाले को लाई हलीमा*
*मिला दोनों दुनिया का सरदार तुझ को*
*तेरी बात हक़ ने बनाई हलीमा*
*यह इल्मे सवाब उनके हिस्से में आया*
*कहलाई सोबिया है दाई हलीमा*
*बनी सअद का दस्त रश्के चमन है*
*गुले हाशमी चुन के लाई हलीमा*
*वह अल्लाह वाला तेरी गोद में है*
*सनागर है जिसकी ख़ुदाई हलीमा*
*दिये की ज़रूरत न मशअल की हाजत*
*अजब रौशनी तू ने पाई हलीमा*
*बनी सअद की औरतों को हसद है*
*बड़ी दौलतें लूट लाई हलीमा*

*जो हूरो मलक को मयस्सर नहीं है*
*वह नेमत तेरे हाथ आई हलीमा*
*तेरी गोद में वह गुले मुत्तलिब है*
*कि तालिब है जिसकी ख़ुदाई हलीमा*
*नबी तुझ से राज़ी ख़ुदा तुझ से राज़ी*
*बड़ी की यह तूने कमाई हलीमा*
*हुई मुश्किलें सारी आसान अक्बर*
*बनी जब मुहम्मद की दाई हलीमा*

और जैसे बच्चों की आदतें होती हैं कि बिछोने पर पेशाब या पाखाना कर देते हैं आप ने अपने बिस्तर पर पेशाब पाखाना नहीं किया और हमेशा नजासत से कपड़े पाक रहे बल्कि मामूल था कि वक़्त मुक़र्ररा पर पेशाब पाखाने से फ़राग़त फ़रमाते और पहले से इशारा कर देते थे और जब ज़मीन पर पेशाब पाखाना वाक़े होता था तो फ़ौरन ज़मीन शक हो जाती थी। और जब मैं चाहती कि हज़रत का मुंह धुलाऊं तो ख़ुदबख़ुद ग़ैब से साफ़ हो जाता था। मुझे नहलाने धुलाने पूछने की हाजत न होती थी। और एक महीने में इतना बढ़ते थे कि और लड़के एक बरस में इतना बढ़ते थे चुनांचे दूसरे महीने आप अपने हाथों के ज़ोर से घुटनों चलने लगे और पांचवें महीने अपनी पावं की क़ुव्वत से अच्छी तरह चलने फिरने लगे और नौवें महीने बफ़साहत तमाम कलाम करने लगे और सबसे पहले यह कलाम फ़रमाया अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर अल्हम्दु लिल्लाहे रब्बील आलमीन व सुबहानल्लाहे बुकरतवं व असलीन। फिर निहायत अक़लमंदी की बातें फ़रमाने लगे और कहीं लड़कों को खेलते देखते तो उनको मना करते और अगर लड़के खेलने को आप से कहते तो आप फ़रमाते कि "हमें अल्लाह तआला ने खेलने को पैदा नहीं किया।"



## कसीदा

*जो लड़के बाहम जा बजा खेलते थे*
*न उनमें कभी मुस्तफ़ा खेलते थे*
*रिवायत है अक्सर मोहल्लों के लड़के*
*जो मक्के की गलियों में आ खेलते थे*
*समझाते थे उनको भी राहे हिदायत*
*अजब खेल वह रहे नुमा खेलते थे*
*कहीं लात मारी कोई तोड़ डाला*
*बुतों में रसूले ख़ुदा खेलते थे*
*सनम तोड़े तख्ते शयातीन उलटे*
*वह हर खेल क़ुदरत नुमा खेलते थे*
*खिलौने बने चांद सूरज नबी के*
*इशारों पे सुए शमा खेलते थे*
*किया मेहरए कुफ़्र को मात शह ने*
*अजब बाज़ीए हक़ नुमा खेलते थे*
*थी इरफ़ान की गेंद वहदत का बल्ला*
*वह मैदाने हू में सदा खेलते थे*
*न खेले थे वह खेल नबीयों ने अक्बर*
*जो यह ख़ातिमुल अम्बिया खेलते थे*

और बचपन से ही यह आदत थी कि जो चीज़ खाते सीधे हाथ में बिस्मिल्लाह कह कर उठाते। और तमाम शजर व हजर आप पर दुरूदो सलाम भेजते थे।

*पढ़ो दुरूद पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ो*
*दुरूद से कभी ग़ाफ़िल न हो दुरूद पढ़ो*

हलीमा फ़रमाती हैं कि कभी चांद से बातें करते थे और जिस तरफ़ उंगली से इशारा करते थे चांद उसी तरफ़ फिर जाता था। फ़रिश्ते आप को झूला झुलाते थे यह हलीमा सादिया क़बीला बनी सअद से थीं और यह ख़ानदान व बलाग़त में ज़रबुल मिस्ल हैं। चुनांचे फ़रमाया है रसूले अकरम सल्ल० ने कि मैं फ़सीहुल अरब हूं इसलिये कि क़ुरैश में पैदा हुआ और बनी सआद में नश्व नुमा पाई।

## ❁ रिवायत ❁

हलीमा से एक दिन आपने दरियाफ़्त किया कि "क्या सबब है कि मेरे भाई दिन को घर में नहीं रहते। "हलीमा बोली "दिन को बकरियां चराने जाते हैं" फ़रमाया कल से हम भी बकरियां चराने जाया करेंगे।" हज़रत हलीमा सादीया को आप के कमालात बा बरकात देखकर बेहद मुहब्बत हो गई थी यह चाहती थीं कि एक घड़ी को जुदा न हों इसलिए बहलाती थीं और प्यारे प्यारे अलफ़ाज़ से आपको लोरियां देकर सुलाती थीं और ज़बाने हाल से यह फ़रमाती थीं।

## लोरी

*यह हलीमा कह रही थी मेरे गुंल ज़ार सोजा*
*तेरे जागने के सदक़े मेरे जां नेसार सोंजा*
*तुझे दे रही हूं लोरी करती हूं प्यार सोजा*
*रातों को जागता है मेरे होशियार सोजा*
*बनी साद का क़बीला हुआ बाग़ बाग़ तुझ से*
*मेरा दूध पीने वाले गुले नौबहार सोजा*
*मेरा दिल हो तुझ पे वारी मेरी जान तुझ पे सदक़े*
*मेरे नूरे ऐन सोजा मेरे शीर ख़्वार सोजा*



*है यह ऐन वक़्ते राहत मेरे सीने से लिपट जा*
*आंखों में नींद का है तेरी ख़ुमार सोजा*
*है यह गरमियों का मौसम कड़ी धूप पड़ रही है*
*न जा बकरियां चराने सुए कोहसार सोजा*
*झूला झुला रहे थे कह कहके यह फ़रिश्ते*
*आराम कर हबीबे परवरदिगार सोजा*
*तेरी चांदसी जबीं पर मेरी रुह हो तसददुक़*
*तेरी मस्त अंखड़ीयों पर मेरी जां निसार सोजा*
*क्या जाने क्या करेगी तेरी शरमगीं निगाहें*
*है यह ग़ाफ़िलों के हक़ में बड़ी होशियार सोजा*
*है यह वादा उसका सच्चा अल्लाह बख़्श देगा*
*उम्मत के मारे इतना न हो बेक़रार सोजा*
*हुआ वर्म पाए शह पर तो कहा ख़ुदा ने अक्बर*
*तेरा इतना जागना है मुझे ना गवार सोजा*

लेकिन हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने मनज़ूर न फ़रमाया और हज़रत हलीमा की दिल शिकनी भीं पसंद न हुई आप का मुंह धुलाया बालों में कंघी की सुरमा लगाया कपड़े सफ़ेद पहनाए और एक हार मोहरे यामनीका नज़रे बद के ख़्याल से गले में डाला आप ने उस वक़्त वह हार निकाल कर फेंक दिया और फ़रमाया कि "मेरा हाफ़िज़े हक़ीक़ी मेरे साथ है और निगहबान है।" फिर आप असा लेकर भाईयों के साथ हो लिए और जंगल में आबादी के क़रीब ही बकरियां चराने में मशग़ूल हुए। दोपहर के वक़्त बेटा हलीमा सादिया का दौड़ता रोता पीटता बद हवास घर में आया और कहा कि ऐ अम्मा ? भाई हिजाज़ी की जल्द चलकर खबर ले शायद ही तू ज़िन्दा पा सके, हलीमा यह सुनकर घबरा गई और कहा कि "तू उसका मुफ़स्सल हाल बयान कर" उसने कहा

कि वह हमारे साथ चरागाह में थे नागाह दो शख़्स आए और उनको उठा ले गए और पहाड़ पर ले जाकर उनका पेट चाक किया और आगे का कुछ हाल मुझे मालूम नहीं कि क्या गुज़रा सुन कर हलीमा और उस का शौहर सख़्त हैरान व परेशान हुए और दोनों बेताबाना पहाड़ की तरफ़ दौड़े जब आप के पास पहुंचे तो सही व सलामत पाया और देखा कि आसमान की तरफ़ देख रहे हैं और चेहराए मुबारक मुतग़ैयिर हो रहा है हलीमा को देख कर आपने तबस्सुम फ़रमाया हलीमा दौड़ कर लिपट गई और ख़ूब प्यार किया और माजरा दरियाफ़्त किया आपने फ़रमाया कि 'ऐ मादरे मेहरबान ! मैं भाईयों के साथ चरागाह में खड़ा था कि दफ़अतन दो शख़्स हैबतनाक सूरत सफ़ेद कपड़े पहने हुए थे कहते हैं कि वह जिब्रईल व मिकाईल थे भाईयों के पास से मुझे पहाड़ की तरफ़ उठा लाए। एक के हाथ में अबरीक नुकरा दूसरे के हाथ में तरत ज़ुमुर्रदेन था कि जो बरफ़ से लबरेज़ था एक ने ब लुत्फ़ व मेहरबानी तकीया देकर मेरा सीना नाफ़ तक चाक किया और मैं देखता था कि कुछ दर्द व अलम मुझे मालूम नहीं हुआ फिर पेट में हाथ डाल कर आंतें निकाली और बरफ़ के पानी से धोकर अपनी जगह पर रख दिया फिर दूसरा शख़्स अपने साथी से बोला कि बस हट जाओ अब जो हुक्म मेरे लिए है उसकी तामील करूं उसने भी मेरे पेट में हाथ डाला और मेरे दिल को अपने मुक़ाम से निकाला और चाक करके एक नुकतए सियाह ख़ून आलूद इसमें से निकाल कर फेंक दियां और कहा हाज़ा हजजुश शैताने मिनक या हबीबल्लाह यानी "ऐ ख़ुदा के हबीब यह शैतान का हिस्सा है तुझ से दूर किया बाद इसके मेरे दिल के मार फ़ते, हक़ यक़ीन सादिक़ व नूरे ईमान से भर कर अपने मुक़ाम पर रख दिया और एक नूरानी खातम (अंगूठी) से मोहर की और हाथ मेरे सीने के शिगाफ़ पर फेरा जिसका असर मेरे जिस्म की रगों और जोड़ों में अब तक मालूम होता है और वह शिगाफ़ फ़ौरन भर गया ख़ैर मेरा सीना जैसा था वैसा ही हो गया और एक खत सीने से



नाफ़ तक बाक़ी है।"

*पढ़ो दुरूद पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ो*
*दुरूद से कभी ग़ाफ़िल न हो दुरूद पढ़ो*

बीबी हलीमा आप को पहाड़ पर से घर ले गईं और यह इरादा किया कि, आप को मक्के पहुंचा दिया जाए हलीमा कहती हैं कि रात के वक़्त ग़ैब से आवाज़ आई कि अब ख़ैरो बरकत बनी साअद से जाती है और बतहाए मक्का तुझे ख़ुश ख़बरी हो कि नूर और रोशनी ज़ेब और ज़ीनत तुझ में फिर आती हैं अल क़िस्सा आप को मक्के पहुंचा दिया हज़रत अब्दुल मुत्तलिब आप को देखकर बहुत मसरूर हुए और हलीमा के साथ कमाले एहसान और इन्आम व एज़ाज़ से पेश आए और इस क़द्र माल व ज़र दिया कि माला माल कर दिया, लिखा है हज़रत हलीमा सादीया फिर दोबारा ख़िदमत में हाज़िर हुई एक दफ़ा नबुव्वत से पहले हज़रत ख़दी जतुल कुबरा के ज़माने में और हज़रत ने उनको बहुत कुछ देकर रूख़सत किया और दूसरी बार जंगे हुनैन के दिन हज़रत सल्ल० ताज़ीम के लिये खड़े हुए और अपनी चादर मुबारक का उनके लिये बीछोना किया और बहुत ख़ुश हुए और बहुत एहसान और बख़शिश की फिर हज़रत हलीमा अपने ख़ाविन्द और लड़कियों समेत मुसलमान हुईं।

*पढ़ो दुरूद पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ो*
*दुरूद से कभी ग़ाफ़िल न हो दुरूद पढ़ो*

## ⑦ हुलीया शरीफ़ #

ख़िलक़त तमाम आज़ाए मुबारक की एतिदाल पुरथी और आज़ा का एतिदाल मिज़ाजे अक़दस के एतिदाल पर दलालत करता है क़द आप का मियाना गोया बोस्ताने **लताफ़त** का एक निहायत ज़ेबा नौ निहाल

है और उसमें मोजिज़ा यह था कि, जब सामने आप तशरीफ़ लाते तो सब आदमी आपके मुक़ाबले में छोटे नज़र आते और जब तनहा होते मियाना क़द मालूम होते और जब सबके बीच में बैठते तो आप के मोंढे सबसे बुलंद होते दूसरे यह कि आप के क़दे मुक़द्दस का साया न था चांदनी में सूरज की धूप में रिवायत तिर्मिज़ी वहाकिम सर आप का बड़ा था लेकिन उस क़ामते ज़ेबा पर निहायत मौज़ूं और ख़ुशनुमा था बाल आप के घुंगर वाले और नूरानी ऐसे थे कि चकमते थे और ख़ुशबू की लपटें आती थीं और एक मोजिज़ा बालों का यह भी है कि अगर इन्हें धोकर बीमारों को पिलाते तो शिफ़ा पाते थे। पेशानी ऐसी नूरानी थी कि जैसे अंधेरी रात में चांद रोशन हो चेहराए अनवर आप का साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ और रोशन था कि हर चीज़ का अक्स उसमें मालूम होता था और गोल था हज़रत मौलाना अब्दुल समी साहब 'बेदिल' रह० ने ख़ूब लिखा है कि :-

## ❁ कसीदा ❁

*पतली पतली भवें थीं ख़ुशमन्ज़र*
*हुए क़ुरबान हिलाले ईद इन पर*
*नाक अलाएशों से पाक ऐसी*
*शमा की लो बुलन्द हो जैसी*
*रहती आंखें बग़ैर सुरमा सियाह*
*करते शर्म से ज़मीं पे निगाह*
*दोनों आंखों में सुर्ख़ डोरे थे*
*और रूख़सार गोरे-गोरे थे*
*गोल चेहरा प्यारी सूरत थी*
*सुर्ख़ी आमेज़ गोरी रंगत थी*



*ख़ते मुश्कीं था आप का गुनजान*
*और कुशादा थे आप के दनदान*
*लब से गोया टपकती रहमत थी*
*पुश्त पर ख़ातमे नबुवत थी*
*ख़ुशनुमा ऐसी साफ़ थी गर्दन*
*गोया चांदी की थी ढली गर्दन*
*सीना चौड़ा था आप का हमवार*
*और शिकम साफ़ मतलए अनवार*
*था बदन साफ़ आप का बे मू*
*थी पसीने में इतर की ख़ुश्बू*
*जोड़ आज़ा के थे बहुत मज़बूत*
*एक से एक ख़ुशनुमा मरबूत*
*लंबी-लंबी थी उंगलियां ज़ेबा*
*हाथ नरमी में ग़ैरते देबा*
*तलवा पांव का था बहुत गहरा*
*रहता चलने में ख़ाक से ऊंचा*

आपके हुस्न बे मिसाल और जमाले बा कमाल का यह आलम था कि, सहाबा क़सम खाकर फ़रमाते थे।

यानी क़सम ख़ुदा की आपसे पहले और आप से पीछे आप की मानिंद नहीं देखा और हज़रत अबूहुरैरा रज़ि० फ़रमाते हैं कि :-

मैंने हज़रत रसूल सल्ल० से ख़ूबतर कोई शै नहीं देखी गोया आफ़ताब का नूर आप के चेहरे पे जारी हो रहा है अल्लाह अल्लाह आप के हुस्न व जमाल को देख कर दिले बेताब हो जाते थे निगाहें तड़प जाती थीं।

## कसीदा

देखे तेरा जल्वा तो तड़प जाए नज़र भी
रौशन हैं तेरे नूर से सूरज भी क़मर भी

दी ताएरों ने तेरी रिसालत की शहादत
बोल उठे तेरे हुक्म से पत्थर भी शजर भी

जिस वक़्त चले तुम हुए ख़ुशबू से मोअत्तर
कुचे भी मकानात भी दीवार भी दर भी

महबूबे दो आलम हैं किधर देखिये देखे
मुश्ताक़ निगाहों के इधर भी हैं उधर भी

हां ओ क़दे अंदाज़ हमें छोड़ न बिस्मिल
सदक़े तेरे एक तीरे नज़र और इधर भी

दे डालेंगे जां शरबते दीदार के बदले
मरने पे तू मिलता है तो हम जाएंगे मर भी

एक मैं ही नहीं सब हैं तेरे चाहने वाले
अल्लाह भी हुरें भी फ़रिश्ते भी बशर भी

हक्का है तेरी याद से आबाद ज़माना
गुलज़ार भी आबादीयां भी बहर भी बर भी

उफ़ उफ़ यह तेरी गरमीए रफ़तार सुए अर्श
जल जाते हैं इस आग में जिबरील के पर भी

फिरता हूं तसव्वुर से मदीने के चमन में
घर बैठे हुए सैर भी करता हूं सफ़र भी

एक दम में वह हल करते हैं हर उक़दए लाहल
वाबस्ता इशारों में क़ज़ा भी हैं क़दर भी

डेवढ़ी पे भिकारी हैं खड़े आस लगाये
या शाहे दो आलम नज़रे लुत्फ़ इधर भी



क्या वक़्ते इबादत है सुहाना उठो अक्बर
है नग़मा सरा हम्द में मुरग़ाने सहर भी

वल लैले इज़ा यग़शा यन नहारे इज़ा तजल्ला अल्लाह पाक का इर्शाद है कि क़सम है रात की, जब पर्दा डाले और क़सम है दिन की कि जब रोशन हो हक़ीक़त यह कि अल्लाह तआला ने जनाब रसूले अकरम सल्ल० के अंधेरी रात से ज़्यादा काले गेसूओं और उजले दिन से ज़्यादा रौशन रुख़सारों की क़सम खाई है और उनकी बहार और उनके फ़बन उनके दर्दमंदों से पूछो जिनकी निगाहों ने यह मज़े लूटे हैं।

## कसीदा

वल लैल की ख़ुशबू से महकते हैं यहकाले ऐ गेसूओं वाले
हर मुए तन अपना तेरे गैसू की बलाले ऐ गेसूओं वाले

कितना ही गुनाहगार हो कैसा ही सीयाहकार पुरसिश न हो जिनहार
रहमत से जिसे अपनी तू कमली में छुपा ले ऐ गेसूओं वाले

आंखों को नज़र आएं फिर अहमद के कुल अंदाज़ खुल जाएं यह सब राज़
दम भर के लिए मीम का पर्दा जो उठाले ऐ गेसूओं वाले

अब बारिशे रहमत के लिये आके झुका है पहचान लिया है
साया है तेरे क़द का यह बादल नहीं काले ऐ गेसूओं वाले

जो उम्मते आसी के गुनाहों का है दफ़तर रख दे मेरे सर पर
यह बोझ है भारी इसे सर तेरी बलाले ऐ गेसूओं वाले

चल चलके तेरी राह में क़ीमत हुई अफ़ज़ूं अब देने लगे ख़ूं
गोहर से बने लाल मेरे पावं के छाले ऐ गेसूओं वाले

कहती है ख़ुदाई तुझे कौनेन का ख़्वाजा इमदाद को आजा
कौन आई हुई सर से बलाएं मेरी टाले ऐ गेसूओं वाले

*यह गोरकी मनज़िल बड़ी पुर ख़ौफ़ो ख़तर है, हर तरहकाडर है*
*बेकस की यहां कौन ख़बर तेरे सिवा ले, ऐ गेसूओं वाले*
*ऐबों से मेरे हिंद वह तारीक हुआ है, एक दामे बला है*
*सदक़े तेरे अकबर को मदीने में बुलाले, ऐ गेसूओं वाले*

*पढ़ो दुरूद पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ो*
*दुरूद से कभी ग़ाफ़िल न हो दुरूद पढ़ो*
*दुरूदो सलाम ऐ ख़ुदा भेज बेहद*
*बरूहे मुहम्मद व आले मुहम्मद*

अज़रुए अहादीस कुल मुक़द्दस व मुतबररिक मुक़ामों से चार मुक़ाम अफ़ज़ल और आला माने गए हैं एक मक्का शरीफ़ एक मदीना शरीफ़ एक अर्शे मुअल्ला एक बैतुल मुक़द्दस और इन चारों में यह मदीना मुनव्वरा अफ़ज़ल माना गया है और यह फ़ज़ीलत और अज़मत मदीने की ज़मीन के उस टुकड़े की वजह से है कि जिसमें जिस्मे पाक जनाब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० का मिला है यह टुकड़ा सबसे अफ़ज़ल व आला अनवारे अतहर हैं और यह तमाम ख़ूबियां और सारी बरकतें हुज़ूर पुरनूर जनाबे रसूले अकरम सल्ल० ही के पाक क़दम की बदौलत हैं।

## कसीदा

*नबी के क़दम आए सुए मदीना*
*बढ़ी अर्श से आबरुए मदीना*
*नहीं भाती वाइज़ मुझे और बातें*
*किये जाईये गुफ़तगूए मदीना*
*अदब सीखो रिज़वां यह जन्नत नहीं है*
*चलो सरके बल है यह कूए मदीना*
*सफ़ेदो सियाह में है जिसका उजाला*
*है इसमें वही माहरूए मदीना*



*ख़ुदा की क़सम खाएं सब और ख़ुदा ख़ुद*
*क़सम जिसकी खाए है कुए मदीना*
*गिरेबां में मुंह डाल कर अपने देखो*
*है फ़िरदौस क्या रूबरूए मदीना*
*मुबारक हो लेकर मुझे किस अदा से*
*मदीने चली आरज़ूए मदीना*
*हो दिल तेरे सदक़े नज़र तेरे क़ुरबाँ*
*हबीबे ख़ुदा माहरूए मदीना*
*दिखा बुलबुले रूहे अक्बर को यारब*
*बहारे गुलिस्ताने कूए मदीना*

इर्शाद फ़ैज़े बुनियाद "व रफ़अन लक ज़िकरक" और हमने तुम्हारा ज़िक्र बुलंद किया इस आयते मुक़द्दस से भी अल्लाह तआला को जनाब रसूले करीम सल्ल० की जैसी मुहब्बत है उसका ख़ूब पता चलता है आप के ज़िक्रे पाक की रफ़अत अल्लाह अल्लाह यानी तमाम क़ुरआन शरीफ़ में आप के अलक़ाबों आप के ख़िताबों आप के असमाए पाक से आराइश है जन्नत के दरख़्तों के पत्तों कुब्बों, ख़ैमों, अर्श की पेशानी पर आप के ज़िक्रे ख़ैर की ज़ेबाइश है। और ज़मीन पर मस्जिदों में आप के नामे पाक की पांचों वक़्त पुकार मिम्बरों पर ख़ुतबों में आपकी मदह का इज़हार हर मुल्क में आप का शोहरा हर ज़बान में आप का ज़ायक़ा ख़ानक़ाहों में आप के अवराद व अशग़ाल ज़िकरो फ़िक़र की हू हक़। दरसगाहों में आप के तज़किरे और मुनाजातें मौलूद शरीफ़ की महफ़िलों में आप की सवानेह और नातें हैं।

## कसीदा

*नातों के मज़ामीं को हो जल्वानुमा डाली*
*अक्बर इन्हीं फूलों को चुन चुन के सजा डाली*

इस शान से हज़रत के रौज़े पे चढ़ा डाली
कलियों के बना गजरे फूलों की बना डाली
दीवान का हर सफ़हा कश्ती है जवाहिर की
तौसीफ़ मुहम्मद की है सब से सिवा डाली
बीमारिए इसयां का पता न लगा रखा
जब तेरी शफ़ाअत ने सेहत की हवा डाली
मसरुर हुईं आंखें पुरनूर हुईं आंखें
जिस जिसने मुहम्मद की ख़ाके कफ़े पा डाली
रिज़वां तेरी जन्नत के तैबा से हैं कब अच्छे
पत्तों से मिला पत्ते डाली से मिला डाली
नाज़ां न हो क्यों आसी हज़रत की शफ़ाअत पर
सब आग गुनाहों की रहमत से बुझा डाली
ऐ मुनकीरो देखो तो हर नख़्ल को झुक झुक कर
तो जामे मुहम्मद का देती है पता डाली
सत्तार तेरे आगे क्या पेश करे आजिज़
ऐबों की जो गठरी थी रहमत ने छुपा डाली
अंगूर की जा दिल है बादाम की जा आंखें
मन्ज़ूर यह फ़रमा लो महबूबे ख़ुदा डाली
ऐ अब्रे करम अब तो रहमत का कोई छींटा
अरमानों की सब खेती हसरत ने जला डाली
इस रौज़े पे ऐ अक्बर फ़िरदौस के फूलों की
ताक़ों में बना जाली जाली में सजा डाली

## मोजिज़ाते जनाबे रसूले अकरम सल्ल०

है दोनों जहां ताबए फ़रमाने मुहम्मद
अल्लाह से कम सबसे बड़ी शाने मुहम्मद



रुतबे में है यह अर्शे मुअल्ला से भी ऊंची
अल्लाहु ग़नी कुरसीए ऐवाने मुहम्मद

## (10) ✯ मोजिज़ा ✯ #

एक औरत एक शख़्स को लाई जो पैदाइशी गूंगा था एक लफ़्ज़ कभी उसकी ज़बान से नहीं निकला था, जब हुज़ूर ने उससे दरियाफ़्त किया कि मैं कौन हूं तो गूंगा कहता है अशहदु अन लाइलाह इल्लल्लाहु वइन्नक रसूलुल्लाह

जब गूंगे ने की आप की तसदीक़े रिसालत
फिर क्यों न हो कौनैन सना ख़्वाने मुहम्मद

## ✯ मोंजिज़ा ✯

एक चरवाहा जंगल में बकरियां चरा रहा था, जनाब रसूले करीम सल्ल० जो उधर तशरीफ़ ले आए तो एक भेड़ीये ने उस चरवाहे को ख़बर दी कि तेरे जंगल में हबीबे खुदा तशरीफ़ लाए हैं तू उनके हुजूर में हाज़िर हो और तेरी बकरियों की इतने में हिफ़ाज़त मैं करूंगा, चरवाहा यह ख़बर सुनकर फ़ौरन हुज़ूर में हाज़िर हुआ और ईमान लाकर क़ुरबान होने लगा।

की भेड़ीये ने दश्त में गल्ले की हिफ़ाज़त
चरवाहा भी होने लगा क़ुरबाने मुहम्मद

## ✯ मोजिज़ा ✯

एक मरीज़ मुत्तक़ीने जिसको जलन्धर का मरज़ था हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि "या रसूलुल्लाह ? मैं ने बहुत इलाज किये लेकिन मेरे मरज़ को शिफ़ा नहीं होती" उसी वक़्त हुज़ूर ने थोड़ी खाक ज़मीन से लेकर और उसमें थोड़ा लुआबे दहन मिलाकर दिया उसने खाया

और खातेही सेहत हो गई इसी तरह एक नाबीना हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि "या रसूलुल्लाह ? मेरी आंखों के सदहा इलाज हुए लेकिन सेहत नहीं हुई" हुज़ूर ने कुछ पढ़कर आंखों पर दम किया तो आंखे उसी वक़्त पट से खुल गई।

*बीमार को अच्छा करे नाबीना को बीना*
*सदक़े तेरे ऐ चशमए फ़ैज़ाने मुहम्मद*

## ☆ मोजिज़ा ☆

हुज़ूर का एक ग़ुलाम सफ़ीना नाम कहीं जा रहा था जंगल में पहुंचकर रास्ता भूल गया परेशान था सामने से क्या देखता है कि एक शेर चला आ रहा है यह देखकर बहुत घबराया और कहने लगा कि मैं जनाब मुहम्मद सल्ल० का ग़ुलाम हूं और रास्ता भूल गया हूं शेर ने हज़रत का नाम सुनते ही गर्दन झुका ली और दुम हिलाकर आगे आगे हो लिया यहां तक कि रास्ते पर ला खड़ा किया और आहिस्ता आहिस्ता कुछ बोला और सलाम करके चल दिया।

*गुमराही के दरिया सफ़ीने को तीराया*
*है शेर ज़िया ख़िज़र ग़ुलामाने मुहम्मद*

## ☆ मोजिज़ा ☆

एक ऊंट ने हुज़ूर को सिज्दा करके अर्ज़ किया कि मेरा मालिक मुझ पर बोझ बहुत लादता है और चारा कम देता है हुज़ूर ने उसके मालिक को बुलाकर उसकी सिफ़ारिश कर दी कि, इस पर बोझ कम लाद और पेट भर चारा दिया कर।

एक रोज़ हुज़ूर एक बाग़ में तशरीफ़ ले गए वहां एक ऊंट निहायत शरीर था जो कोई बाग़ में जाता उसे काटने को दौड़ता हुज़ूर को जब उसने देखा सामने आकर सिज्दा किया और बैठ गया तो हुज़ूर ने उसकी नाक में नकेल डाल दी वह ऊंट हुज़ूर की बरकत से निहायत



शरीफ़ और सीधा हो गया।

## ☆ मोजिज़ा ☆

एक दिन बहुत से असहाब व अनसार हुज़ूर के साथ थे एक बकरियों के ग़ल्ले में क़रीब पहुंचे तो बकरियों ने हुज़ूर को सिज्दा किया।

*सिज्दा कोई करता था कोई पढ़ता था कलिमा*
*हैवान बयाबां थे मुसलमाने मुहम्मद*

## ☆ मोजिज़ा ☆

एक एराबी ने हुज़ूर से मोजिज़ा तलब किया कि अगर वाक़ई तुम नबी हो तो कोई मोजिज़ा दिखाओ हुज़ूर ने फ़रमाया अच्छा फलां दरख़्त को बुलाओ एराबी ने दरख़्त के क़रीब जाकर कहा तुझे वह शख़्स बुलाते हैं वह दरख़्त अपनी जगह से आकर बोला अस्सलामु अलैक रसूलुल्लाह यह देखकर वह एराबी हैरान हो गया और कहा अच्छा अब इसे अपनी जगह वापिस भेज दीजिए हुज़ूर ने फ़रमाया कि ऐ दरख़्त अपनी जगह चला जा यह सुनकर वह दरख़्त झुका और सिज्दा करके अपनी जगह जा लगा।

*सिज्दा किया और लौट गया अपनी जगह पेड़*
*अशजार भी पहचानते हैं शाने मुहम्मद*

## ☆ मोजिज़ा ☆

हुज़ूर के पाये मुबारक के नीचे पत्थर का मोम हो जाना तो मशहूर मोजिज़ा है एक मर्तबा रात को मक्का मोअज़्ज़मा के बड़े बड़े कुफ़्फ़ार हाज़िर थे और चौदहवीं रात का चांद रोशन था कुफ़्फ़ार ने अर्ज़ किया कि "हज़रत यह मोजिज़ा दिखलाईए कि इस चांद के आसमना पर दो टुकड़े हो जाएं तो हम आप पर ईमान लाएं" हज़रत ने उसी वक़्त

कलमे शरीफ़ उंगली उठा कर चांद की तरफ़ इशारा फ़रमाया फ़ौरन चांद के दो टुकड़े हो गए।

*पत्थर तो बने मोम हो माहताब के दो टुकड़े हैं*
*अरज़ो समावात में फ़रमाने मुहम्मद*

## ☆ मोजिज़ा ☆

एक मर्तबा हुज़ूर जंगल को तशरीफ़ ले जा रहे थे कि आवाज़ आई "या रसूलुल्लाह" आपने पीछे मुड़कर देखा तो मालूम हुआ एक हिरनी बंधी हुई है और शिकारी सोता पड़ा है हुज़ूर वहां तशरीफ़ ले गये और दरियाफ़्त फ़रमाया कि क्या कहती है हिरनी ने अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह ! मुझे इस शिकारी ने बांध रखा है और इस पहाड़ पे मेरे बच्चे भूके रो रहे हैं अगर मुझे थोड़ी सी देर के लिए छोड़ दो तो दूध पिला आऊं। हुज़ूर ने उसी वक़्त हिरनी को खोल दिया। इधर तो वह हिरनी दूध पिलाने गई और उधर शिकारी जागा और पूछा कि, वह मेरी हिरनी कहां गई है। हुज़ूर ने फ़रमाया कि, अपने बच्चों को दूध पिलाने गई है मैं ने छोड़ दिया है वह अभी दूध पिलाकर वापिस आती है असनाए गुफ़्तगू में क्या देखते हैं कि वह हिरनी अपने दोनों बच्चे साथ लेकर आ रही है शिकारी ने जो देखा कि हिरनी आ गई हैरान हो गया और पढ़ने लगा लाइलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह और इस तमन्ना में कि हुज़ूर मुझसे ख़ुश हो जाएं हिरनी को मऐ बच्चे के छोड़ दिया अब वह हिरनी मऐ बच्चों के कूदती उछलती फिरती थी और कहती थी लाइलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह सल्ल०।

*यह रहम के सैयाद से हिरनी को छुड़ाया*
*बच्चे न हों क्यों उसके सना ख़्वाने मुहम्मद*



## ☆ मोजिज़ा ☆

एक शख़्स एक लड़के को जो उसी दिन पैदा हुआ था हुज़ूर में लाया हुज़ूर ने इस बच्चे से दरियाफ़्त फ़रमाया "कि मैं कौन हूं" तो

*गोया हुआ तिफ़्ल कि तुम सच्चे नबी हो*
*क्या शान है ऐ सल्ले अला शाने मुहम्मद*

## ☆ मोजिज़ा ☆

गज़वए ख़नदक़ में हज़रत जाबिर रज़ि० ने एक बकरी का बच्चा ज़बह किया और उनकी बीबी ने पौने तीन सेर आटा जौ का तैयार किया जिस वक़्त गोश्त देग में चढ़ा दिया तो हज़रत जाबिर रज़ि० ने जनाब रसूले अकरम सल्ल० के हुज़ूर में हाज़िर होकर चुपके से अर्ज़ किया कि रसूलुल्लाह सल्ल० हमने आप की दावत का सामान किया है आप दो चार सहाबा एकराम के साथ तशरीफ़ ले चलें हुज़ूर ने ब आवाज़े बुलंद पुकार दिया और तमाम अहले ख़ंदक़ से कह दिया की आज जाबिर के यहां सबकी दावत है और हज़रत ने जाबिर से "फ़रमाया कि तुम चलो और मैं जब तक न पहुंचूं चुल्हे से देग न उतारना और रोटी न पकाना।" जिस वक़्त हुज़ूर तशरीफ़ लाये तो थोड़ा लुआबे दहन देग में और आटे के ख़मीर में डाल दिया और हुक्म दिया कि दस-दस आदमियों को बिठला के खिलाते जाओ। चुनांचे हज़रत जाबिर ने ऐसा ही किया उस लश्कर के तमाम आदमी जो कि एक हज़ार से ज़्यादा थे सब शिकम सेर होकर खा गए और हज़रत जाबिर का बयान है कि जब मैं ने देग को देखा तो ख़ुदा की क़सम उसी तरह भरी हुई जोश मारती थी और आटा जितना था उसी क़दर बर्तन में भरा हुआ नज़र आता था ज़रा भी कम मालूम नहीं होता था। इसी तरह एक ग़ज़वे में पानी नहीं रहा था हुज़ूर ने अपनी अंगुस्ते मुबारक एक जगह ज़मीन पर रखी वहां फ़ौरन चश्मा जारी हो गया

और लश्करने ख़ूब सैराब होकर पिया।

*ग़ज़वों में खिलाया भी पिलाया भी मगर पास*
*जुज़ नामे खुदा कुछ न था सामाने मुहम्मद*
*खुल जाएं तेरे ऐब यह मुमकिन नहीं अक्बर*
*काफ़ी है छुपा लेने को दामाने मुहम्मद*
*पढ़ो दुरूद पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ो*
*दुरूद से कभी ग़ाफ़िल न हो दुरूद पढ़ो*

और बे इन्तिहा मोजिज़े हुज़ूर सल्ल० के मशहूर व मारूफ़ हैं यानी मख़तून व नाफ़ बुरीदा पैदा हुए जन्नत की हुरें दाया बनकर और जिस्मे अतहर की ख़ुशबू और नूर से आलम मोअत्तर व मुनव्वर हो गया सतर मुबारक कभी न खुला। जो खुलता तो फ़रिश्ते छुपा देते चांद से गहवार में बातें की जिधर करवट ली उधर फिर गया पसीना वह ख़ुशबूदार कि दुल्हन को लगाया कई पुश्त तक उसकी औलाद से ख़ुशबू न गई और उसका घर "बैतुल अत्तार" मशहूर हुआ जिस कूचे में निकले मोअत्तर व मुनव्वर हो गया ढूंढने वालों को दरियाफ़्त करने की ज़रुरत न रही। कमर अक़दस से पटका निकल गया हिजरत की रात को काफ़िरों को देखते आंखों तशरीफ़ ले गए किसी को नज़र न आए हमेशा धूप में बादल साया किये रहता।

*कहीं गर धूप में महबूब जाता*
*तो अब्र आकर वहीं छाता लगाता*

और फ़रमाते हैं ज़ो मैं देखता हूं तुम नहीं देखते जो मैं सुनता हूं तुम नहीं सुनते आगे पीछे यकसाँ देखते थे सोते जागते यकसां सुनते थे आप का सोना जागने से बेहतर था दनदाने मुबारक से नूर झड़ता था ऐसा कि खोई हुई चीज़ मिल जाती थी।



# ☆ मोजिज़ा ☆

*तेरे दनदां हैं दुर्रे अदनी मेरे प्यारे रसूले मदनी*
*सदक़े क़ामत पे सरव चमनी मेरे प्यारे रसूले मदनी*
*तूने कांबे में जलवा दिखा कर दोनों आलम को शैदा बना कर*
*शान कर दी अयां ज़ुल मननी मेरे प्यारे रसूले मदनी*
*रश्के जन्नत है तेरा मदीना मुश्को अम्बर से बेहतर पसीना*
*तेरे क़द पे फ़िदा गुलबदनी मेरे प्यारे रसूले मदनी*
*लाके क़ुरआन रंग दी ख़ुदाई मिठे लफ़्ज़ों की लज़्ज़त चखाई*
*शहदे जन्नत थी शीरीं सुख़नी मेरे प्यारे रसूले मदनी*
*एक आलम को कलिमा पढ़ाया लात ठोकर से अपनी गिराया*
*बुतख़ानों में की बुतशिकनी मेरे प्यारे रसूले मदनी*
*ख़िज़र का फ़ख़र दुनिया में आया भूले भटकों को रस्ता बताया*
*दूर करदी ग़रीबुल वतनी मेरे प्यारे रसूले मदनी*
*हुआ रंजो अलम जब ज़्यादा किया उम्मत की बख़्शिश का वादा*
*न की हक़ ने तेरी दिल शिकनी मेरे प्यारे रसूले मदनी*
*मेरी आंखों के पर्दे में आकर तूर सिना यह सीना बनाकर*
*कीजिए दिल में जल्वा फ़िगनी मेरे प्यारे रसूले मदनी*
*एक दंदा के बदले में तोड़े दांत अपने दहन में न छोड़े*
*वे वह आशिक़ अवेस करनी मेरे प्यारे रसूले मदनी*
*तू वह ज़िल्ले ख़ुदाए जहां है तेरे साए में कौनों मकां है*
*कीजिए अक्बर पे परतो फ़िगनी मेरे प्यारे रसूले मदनी*

गुफ़्तार व बयानात को कि शहद से वह शीरीं के असल की क्या असल है। आवाज़ वहां पहुंची कि जहां बशर को पहुंचाना ना मुमकिन करीब व बईद (दूर) के लोग आप का वाअज़ यकसां सुनते थे सलमा

इब्ने अकु जंगे ख़ैबर में ऐसे ज़ख़मी हुए कि लोगों ने जाना मर गए और पिंडली टूट गई आपने दस्ते मुबारक फेर दिया टुटी हुई पिंडली जुड़ गई और खड़े हो गए। आप ने अनसबिन मालिक के खारी कुवें में थूक दिया वह मिठा हो गया। जिस बच्चे के मुंह में ज़रासा आबे दहन डाला वह दिन भर सेर रहा दूध न मांगता मौलाए कायनात हज़रत मौला अली कर० की आंखें जंगे ख़ैबर के रोज़ दुखती थीं, आबे दहन लगाया शिफ़ा हो गई वफ़ात शरीफ़ होने के एक अरसे के बाद मैदाने करबला में बड़ी धूप थी और जंगल तप रहा था और वहां हज़रत सैयदना इमाम हुसैन अलै० तीन रोज़ के प्यासे तशनगी से बेचैन थे आपने रौनक़ अफ़रोज़ होकर अपनी ज़बाने मुबारक उनके मुंह में दी फ़ौरन तसकीन हो गई।

## हदीस तिर्मिज़ी शरीफ़

इब्ने अब्बास फ़रमाते हैं कि जनाबे रसूले अकरम सल्ल० ने फ़रमाया कि मेरे पास मेरा रब निहायत हसीन सूरत व सिफ़त में आया और मुझे गुमान हुआ कि सोते में यह वाक़ेया हुआ और मेरे रब ने दरियाफ़्त किया कि "ऐ मुहम्मद सल्ल० क्या तू वाक़िफ़ है कि मलउल आला वाले मलायका किस बात में झगड़ते हैं" मैं ने कहा वाक़िफ़ नहीं" तो मेरे रब ने अपना दस्ते क़ुदरत मेरे दोनों शानों के बीच में रखा जिसकी सर्दी अपने सीने और गर्दन में महसूस हुई और जो कुछ ज़मीनों और आसमानों में है वह सब मैंने जान लिया फिर दरियाफ़्त किया कि "ऐ मुहम्द सल्ल० वाक़िफ़ है कि मलउल आला किस चीज़ में झगड़ते हैं" तो मैं ने अर्ज़ किया कि "मैं जानता हूं" इर्शाद फ़रमाया कि "ऐ मेरे महबूब और इल्म तलब कर" मैं ने अर्ज़ किया कि "ऐ मेरे रब मुझे और ज़्यादा इल्म अता फ़रमा तो यह शर्फ़ मरहमत हुआ कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया फ़अलिम्त इलमुल अव्वलीन वल आख़ेरीन (यानी



अगलों और पिछलों और अज़ल और अबद के इल्म से मुशर्रफ़ किया) अब हुज़ूर सल्ल० के इल्मे ग़ैब के मुनकीरों से कोई पूछे कि अब अल्लाह तआला ने तमाम ज़मीनों और आसमानों और अज़ल से अबद तक के तमाम उलूम अता फ़रमाए तो इल्मे ग़ैब और कौन से पर्दे की बू है और इन ज़मीनों और आसमानों और अबद से बाहर कहां के हिजाब में मख़फ़ी है जिसका इल्म हुज़ूर को नहीं दिया गया। और लीजिए अल्लाह तआला का इरशाद है व आख़िरत ख़ैरूल लक मिनल उला (यानी अलबत्ता तेरी इबतिदा से इन्तिहा बेहतर है हुज़ूर के मदारिज में हर लहजा हर साअत इबतिदा तरक़्क़ी होती हुई चली आई है और आख़िर तक मरातिब ज़्यादा होते चले जाएंगे इस इरशाद को साढ़े तेरह सौ बरस के क़रीब हुए उस वक़्त से अब तक क्या क्या तरक़्क़ी हुज़ूर ने मरतबों में फ़रमाई होंगी।

*पढ़ो दुरूद पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ो*
*दुरूद से कभी ग़ाफ़िल न हो दुरूद पढ़ो*

## (11) मोजिज़ात #

अबू राफ़े का पावं टूट गया आप ने अपना हाथ फेर दिया टूटी हुई हड्डी जुड़ गई, हारिसबिन अनीस के ऐसा ज़ख़्म हुआ कि ख़ून न थमता था हाथ लगा दिया फ़ौरन ख़ून बंद हो गया। जिस बच्चे के सर पर हाथ फेर दिया उसका सर मोअत्तर हो गया। जली हुई खजूर की गुठली ज़मीन में बोई वह हरा भरा दरख़्त हो गया फल आया। एक खुरमे का दरख्त दस्ते मुबारक से लगाया उसमें तिरयाक़ का असर हो गया जिसने उसे खाया जादू और ज़हरीले असर से महफ़ूज़ रहा होदैबीया के जंग में अंगुस्ते मुबारक से पानी की नहर जारी हो गई और पन्द्रह सौ आदमी सेराब हो गए। जंगे बद्र में हुनैन में कंकरियां जो मुट्ठी

में लेकर कुफ़्फ़ार पर फेंकी वह तलवारों का काम कर गई पुश्त पर मोहरे नबुवत सितारे की तरह रोशन यह शरफ़ किसी नबी को न मिला। जिस्मे पाक पर कभी मख्खे नहीं बैठी आप हैवानात की बोलियां ब ख़ुबी समझते थे तमाम ऊमर आप को जमाई न आई आप को कभी एहतिलाम न हुआ आप का बराज़ किसी ने ज़मीन कि मुश्क पर नहीं देखा ज़मीन निगल जाती और देर तक उस ज़मीन से ख़ुशबू आती फ़ुज़लात आप के पाक व ताहिर थे बहालते ग़ुस्ल भी आप को और हज़रत अली कर० को मस्जिद में बे तकल्लुफ़ आना जाना ठहरना जाइज़ था वह ख़ुसूसीयतें जो मौलाए कुल के साथ हुज़ूरे अनवर सल्ल० को हैं और किसी को नसीब नहीं।

**रिवायते तिर्मिज़ी-** इब्ने सईद ने कहा कि फ़रमाया हुज़ूर ने हज़रत अली कर० के वास्ते कि "ऐ अली! सिवाए मेरे और तेरे किसी को जाइज़ नहीं है कि जनाबत की हालत में इस मस्जिद में क़दम रखे" कि एक रोज़ मौला-ए- कायनात हज़रत अली कर० एक खजूर के दरख़्त की जानिब गुज़रे इस खजूर ने ब आवाज़ बुलंद कहा।

यानी यह जनाब क़िबला मुहम्मद सल्ल० रसूलों के सरदार हैं और यह हज़रत अली कर० वलीयों के सरदार और पाक इमामों के बाप हैं।

*दुरूदो सलाम ऐ ख़ुदा भेज बेहद*
*बरूहे मुहम्मद व आले मुहम्मद*
*पढ़ो दुरूद पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ो*
*दुरूद से कभी ग़ाफ़िल न हो दुरूद पढ़ो*

मौलाए काएनात हज़रत अली कर० की वह शान है कि फ़रमाया जनाब रसूले अकरम सल्ल० ने कि, "मैं इल्म का शहर हूं और अली इस शहर का दरवाज़ा हैं" इल्म से मुराद यहां मारफ़ते इलाही है यानी अल्लाह पाक के पहचानने का शहर जो जो इस शहर में दाख़िल होगा



वह ख़ुदा को पहचान लेगा और इस शहर में दाख़िल होने का दरवाज़ा अली हैं बग़ैर इस दरवाज़े के शहर में नहीं पहुंचेगा। मतलब यह है अली बग़ैर रसूल और रसूल बग़ैर ख़ुदा नहीं मिल सकता और इरशाद है बक़ौल बाज़ यह हदीस मोअ़ है।

*मन तूशुदम तू मनशुदी मन जाँ शुदम तू तनशुदी*
*तू कस निगोयद बाद अज़ीं मन दीगरम तू दीगरे*

और अल्लाह तआला का इरशाद है कि, यानी कह दो ऐ मुहम्मद कि ऐ मुसलमानों! मैं तुम से कारे रिसालत पर कोई अजर नहीं मांगता लेकिन मेरे अहले बैत से मुहब्बत करो। हज़रत इब्ने अब्बास से मनक़ूल है कि दिगर सहाबाने दरियाफ़्त फ़रमाया कि वह अहले बैत ख़ेशो क़रीब कौन कौन हैं जिनका मुहब्बत का हुक्म अल्लाह पाक ख़ुद फ़रमाता है इरशाद फ़रमाया कि वह अली फ़ातिमा हसन हुसैन रज़ि० हैं।

(सफ़हा 295 तफ़सीरे हुसेनी जिल्द सानी)

रिवायत है कि मिकदाद बिन असवद से कि फ़रमाया हज़रत सल्ल० ने कि मारेफ़त आले मुहम्मद की छुटकारा है आतिशे दोज़ख़ से और मुहब्बत वाले मुहम्मद की अमान है अज़ाब से किताब शिफ़ा में मरक़ूम है कहा अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने कि, जिसमें दो ख़सलतें होंगी वह अज़ाबे इलाही से नजात पायेगा एक सच बोलना दूसरे मुहब्बते आले मुहम्मद सल्ल०

*दुरूदो सलाम ऐ ख़ुदा भेज बेहद*
*बरुहे मुहम्मद व आले मुहम्मद*
*पढ़ो दुरूद पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ो*
*दुरूद से कभी ग़ाफ़िल न हो दुरूद पढ़ो*

और तफ़सीर अहमदी में है कि, जारी हुआ है तवारुस के साथ ज़िकर सलात आल के सलवा तुन्नबी सल्ल० हत्ता कि इस पर इजमा हो गया

है और बक़ौल तवारुस के दुरूद बग़ैर आल पर भेजने के क़बूल ही नहीं होता।

*दुरूदो सलाम ऐ ख़ुदा भेज बेहद*
*बरुहे मुहम्मद व आले मुहम्मद*
*पढ़ो दुरूद पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ो*
*दुरूद से कभी ग़ाफ़िल न हो दुरूद पढ़ो*

बे इन्तिहा आले पाक के फ़ज़ाईल हैं इस् मुख़तसर किताब में गुन्जाइश नहीं और मौलाए कायनात हज़रत अली मुश्किल कुशा कर० के नामे नामी और इस्मे गिरामी ने तो वह क़बूलियत पाई हैं कि हर क़ौम हर फ़िरक़े हर मज़हब में धूम है। "कोई मुश्किल कुशा" के नाम पर दोंने भरता है कोई अड़ी भीड़ में नियाज़ बोलता है पट्टा बाज़ों में बोलो "नारए हैदरी" या हुसैन का शोर है कुशती के अखाड़ों में इसी नाम की बरकत का ज़ोर लड़ाईयों में या अली मदद के नारे बुलन्द होते हैं बड़े बड़े पहलवान पछड़ते वक़्त यही नाम लेकर अरजुमन्द होते हैं। कूचा ब कूचा बच्चे बच्चे की ज़बान पर या अली या अली है फ़क़ीरों की सदाए या अली या अली हर गली हैं। किसी ने क्या ख़ूब कहा है:-

*अली का नाम भी नामे खुदा क्या राहते जां है*
*असाए पीर है तेग़े जवां है हिरजे तिफ़लाँ है*

जंग में जो अली अली करके चढ़ते हैं तो कामयाब हो जाते हैं दिहात में या अली कर भली के गीत गाते हैं कोई हैदर करार ग़ैर फ़रार के डन्के बजाता है कोई लाफ़ता इल्ला अली ला सैफ़ इल्लज़ुलफ़िक़ार की अज़मत के अलम उठाता है रसूले मक़बूल सल्ल० के हक़ीक़ी नाइब



यह ही हैं फ़िल हक़ीक़त मज़हरूल अजायब वल ग़रायब यही हैं इनकी अजीब व ग़रीब शानें क्या बताऊं कि क्या हैं कहीं शेरे ख़ुदा कहीं हाजतरवा किसी के मुश्किल कुशा कहीं किश्ती के नाख़ुदा मेरी तहक़ीक़ और तजरूबे में इबतेदा से आज तक हज़ारों ख़ूबियों के साथ तमाम कायनात में जैसा क़बूलीयत आम का सेहरा बांधकर इस दुल्हा का नाम अली निकला है किसी वली अल्लाह का नाम नहीं निकला।

*दुरूदो सलाम ऐ ख़ुदा भेज बेहद*
*बरुहे मुहम्मद व आले मुहम्मद*
*पढ़ो दुरूद पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ो*
*दुरूद से कभी ग़ाफ़िल न हो दुरूद पढ़ो*

Alahissalam

## (12) कसीदा शाने अली (रज़ि०) #

*ऐ बादशाहे ला फ़ता मौला अली मुश्किल कुशा*
*हमराज़े महबूबे ख़ुदा मौला अली मुश्किल कुशा*
*क्या असफ़ीया क्या अज़कीया क्या अतकीया क्या औलीया*
*है सबका तुम से सिलसिला मौला अली मुश्किल कुशा*
*शाहे जमन काबा वतन अज़दर फ़िगन ख़ैबर शिकन*
*मरहबा सद मरहबा मौला अली मुश्किल कुशा*
*क्या शान है शाने नबी क्या आन है आने नबी*
*क्या नाम है नामे ख़ुदा मौला अली मुश्किल कुशा*
*नूरे समद शेरे ऊहद माहे शरफ़ शाहे नजफ़*
*अबरे करम बहरे सख़ा मौला अली मुश्किल कुशा*
*तलवार दी अल्लाह ने दुख़्तर रसूलुल्लाह ने*
*ठहरे नसीरी के ख़ुदा मौला अली मुश्किल कुशा*
*उस आंख से जिस आंख ने मंख़मूर दो आलम किये*

*मेरी तरफ़ भी देखना मौला अली मुश्किल कुशा*
*रद हो गई उसकी बला जिसने अक़ीदत से कहा*
*मुश्किल में हूं आजाओ या मौला अली मुश्किल कुशा*
*कब तक मुसीबत में रहूं कब तक यह रंजोग़म सहूं*
*आख़िर तो हूं मैं आप का मौला अली मुश्किल कुशा*
*बे बस कड़ी मन्ज़िल में हूं बेबस बड़ी मुश्किल में हूं*
*कीजिए मेरी इमदाद या मौला अली मुश्किल कुशा*
*अक्बर जो चाहे मांगना वारिस का देदे वास्ता*
*फिर देखना देते हैं क्या मौला अली मुश्किल कुशा*

*दुरूदो सलाम ऐ ख़ुदा भेज बेहद*
*बरुहे मुहम्मद व आले मुहम्मद*
*पढ़ो दुरूद पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ो*
*दुरूद से कभी ग़ाफ़िल न हो दुरूद पढ़ो*

नासिरूल असरारफ़ी मनाक़िब अहले बैतुल अत्हार, में लिखा है कि, हुस्ने एतिक़ाद अहले बैत की जनाब में लाज़िमी ईमान और रुकने इस्लाम से है जो कोई इसमें क़ुसूर करेगा वह दाएर-ए-इस्लाम व ईमान से ख़ारिज हो जायेगा और वह हुस्ने एतिक़ाद यह है कि हज़रत सल्ल० पर ईमान लाने की तरह अहले बैत आले रसूल की मुहब्बत को फ़र्ज़ जानें और बुग़ज़ व कीना उनसे मिसले कुफ़र के हराम समझे और इनको यक़ीनन जन्नती जाने और जब उनका नाम ले तो ताज़ीम व तौक़ीर के साथ ले और इनकी बुज़ुर्गी और मरातिब का मोतरिफ़ रहे और उनके दोस्तों का दोस्त और दुश्मनों का दुश्मन बन जाए और मनाक़िब उनके जो क़ुरआन और अहादीस से साबित हों उन्हे दिलो जान से सुनें और सुनावें और तसानीफ़ में लिखे और सब सादात से अगरचे वह उम्मी हो और हज़रत के तरीक़े पर चलते हों ताज़ीम



व तौक़ीर से पेश आए।

*दुरूदो सलाम ऐ ख़ुदा भेज बेहद*
*बरुहे मुहम्मद व आले मुहम्मद*

इरशादे इलाही है कि, अल्लाह पाक इरादा करता है कि तुम से गुनाह दूर करदे ऐ अहले बैत अगर पूरे तरीक़े से तुम को पाक करदे हर मासीयत से, हज़रत सईद ख़ुदरी फ़रमाते हैं कि अहले बैत मुराद है हज़रत अली हज़रत फ़ातिमा व हज़रत इमाम हसन व हज़रत हुसैन से।

रिवायत है कि एक रोज़ हज़रत फ़ातिमा ज़ुहरा रज़ि० गोश्त के समोसे बनाकर हज़रत की ख़िदमत में लाई हज़रत ने फ़रमाया ले, 'ऐ जाने पिदर ? अली और हसन व हुसैन को भी बुलाओ ताकि हम सब मिलकर खायें' जब सब आ गए और खाना खा लिया तो हज़रत सल्ल० ने उन चारों नफ़स को कमली में दाख़िल करके फ़रमाया कि ऐ अल्लाह ! यह मेरे अहले बैत हैं इनसे रिजसे को दूर फ़रमा और इनको पाकीज़ा कर उसी वक़्त यह आयते ततहीर नाज़िल हुई। बाज़ तफ़सीरों में लिखा है कि जब रसूलुल्लाह सल्ल० नमाज़ के वक़्त दरे फ़ातिमा रज़ि० पर गुज़र फ़रमाते थे तो यह फ़रमाते थे।

(तफ़सिरे हुसैनी जिल्द सानी)

*दुरूदो सलाम ऐ ख़ुदा भेज बेहद*
*बरुहे मुहम्मद व आले मुहम्मद*
*पढ़ो दुरूद पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ो*
*दुरूद से कभी ग़ाफ़िल न हो दुरूद पढ़ो*

# #13 मेराजे रसूल #

सुबहानल्लज़ी असर बे अबदे ही लैलम मिनल मसज दिल हरामे मस्जेदिल अक़्सा (यानी पाक है वह ज़ात जिसने सैर कराई अपने बन्दे को मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा की तरफ़ रात में) बाक़ी इसकी तफ़सील अहादीस सहीह में मरक़ूम है कि जिस क़दर मुशतरक हददे तवारत तक पहुंच गया है अगरचे एक एक रिवायत ख़बर अहादीस है इस वास्ते उसके मुनकिर के लिए कुफ़र का ख़ौफ़ है अब हम इन शुकूक व शुबहात को और रफ़ा कर दें कि जो मुनकेरीन व मलाहदीन ने ज़ाहिर कीए हैं यानी मुलहिद मेराजे जिस्मानीका इनकार करते हैं और जिसमें से फ़क्त बैतुल मुक़द्दस तक आं हज़रत सल्ल० का जाना मानते हैं और आगे आसमानों पर रुह का जाना साबित करते हैं और यह दलील लाते हैं कि मआवीया मेराज की निस्बत यूं फ़रमाते हैं कि न रोअया सादिक़तन (यानी एक ख़्वाब सच्चा था) और हज़रत आइशा से यह मनक़ूल है मा फ़कद जिस्मु मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लैलतुल मेराज (यानी) मेराज की रात को जिस्मे मुबारक आं हज़रत का गुम न हुआ और क़ुरआन मजीद में भी अल्लाह पाक यह फ़रमाते हैं बम जअलनर रोलय लती अयरना इल्लाफ़िल न तल लिन्नास (यानी जो ख़्वाब कि ऐ नबी हमने तुझ को दिखाया था लोगों के हक़ में फ़ितना बना दिया) उनकी दलील का जवाब यह है कि, अव्वल तो यह रिवायतें कि जो हज़रत आइशा और मुआवीया से मनक़ूल हैं उन अहादीस सहीह के मुक़ाबिल में कि जिनमें साफ़ जिस्म के साथ आसमानों पर जाना मज़कूर है सलाहीयत नहीं रखतीं पस साज़ो नादिर क़रार दी जायेगी अगर उनको ब हमा वजूद तसलीम भी किया जाए तब भी मुख़ालिफ़ का मुददआ साबित नहीं होता क्योंकि हज़रत सल्ल० को सिवाए मेराज जिस्मानी के ख़्वाब में कई मर्तबा मेराज हुई है।



*ता अर्श कई बार गए आए मुहम्मद*
*बेकल रहे उम्मत के लिए हाए मुहम्मद*

पस हम यह कहते हैं कि तुम्हारी इन रिवायतों से यह साबित है कि, हज़रत सल्ल० को ख़्वाब में मेराज हुई और इससे यह साबित नहीं होता कि कभी बेदारी में जिस्म के साथ मेराज नहीं हुई सोयम मुआवीया फ़तह मक्के में एक मुद्दत के बाद ईमान लाए हैं और हज़रत को कई बरस पहले मेराज हुई सिवाए इनकी रिवायत इस मामले में उन सहाबा के मुक़ाबिले में जो उस वक्त मौजूद थे मोतबर नहीं बलहाज़ल क़यास हज़रत आइशा के क़ौल से मुख़ालिफ़ का मुददआ कि निकाह में आई यह भी उस वक्त नहीं थीं चहारुम हज़रत आइशा के क़ौल से मुख़ालिफ़ का मुददआ साबित नहीं होता क्या कहते हैं इसके यह मानी हैं कि जिस्म रूह से जुदा नहीं हुआ मय जिस्म के रूह ऊपर गई और क़ुरआन शरीफ़ की आयत का यह जवाब कि ख़ुद यही आयत हमारे मुददआ के लिये दलील हैं।

ज़ाहिर है कि हज़रत का ख़्वाब में आसमानों पर तशरीफ़ ले जाना फ़ितना नहीं हो सकता इसलिए कि ख़्वाब की बातों को ऐसा अजीब नहीं समझते कि उनकी तकज़ीब करके काफ़िर और मुरतदहो जाते और शोरो गुल मचाते, हां! अगर कोई जिस्म के साथ बेदारी में अफ़लाक पर जाना बयान करे तो उसको अलबत्ता! अवाम बईद और अजीब जाना करते हैं पस मालूम हुआ कि हज़रत ने जिस्म के साथ हालते बेदारी में अफ़लाक पर जाना बयान फ़रमाया था सो वह इन लोगों के हक़ में कि जो, ज़इफ़ुल ईमान थे फ़ितना हो गया पस ज़रूर हुआ कि रोया के मानी इस आयत में ख़्वाब के न लिए जाएं बल्कि रोयातेबसरी मुराद ली जाए फ़क्त रोया कुछ ख़्वाब ही के लिए मख़सूस नहीं है लफ़ज़ रोया से मुश्तक है जिस के मानी देखना है और मुलहिद

लोग इस दलील से आसमान पर जाना मुहाल समझते हैं आसमान में न तो दरवाज़े हैं और न तो आसमान टूट फूट सकते हैं कि जो आप तोड़ फोड़ कर ऊपर तशरीफ लेगए। हम कहते हैं कि कादिरे मुतलक ने एक कुन के साथ दोनों आलम को ज़ाहिर कर दिया और उसको अब भी हर तरह की कुदरत है और जब हर तरह की कुदरत है तो फिर क्या मुश्किल है जिस सूरत से चाहा बुला लिया और हुज़ूर सरवरे आलम सल्ल० मय जिस्मे अतहर के तशरीफ ले गए क्योंकि यह अज़खुद रफतन नहीं है बल्कि खुदन है। एक यह कि इन्सान में तज़किया और तसफीया करते करते यहां तक लताफत आ जाती है कि जिस्म ब मनज़ेला और लोगों की रुह के हो जाता है पस आं हज़रत सल्ल० के तमाम नुफूस से कामिल तर हैं आप का जिस्मे मुबारक रुह का असर रखता है और लतीफ चीज़ों का बे फटे टूटे आसमानों से पार निकल जाना ऐसा है जैसे नज़र का आईना से पार हो जाना।

और गायते तज़किया और तसफीया का कामिल सुबूत यह है कि आप का साया न था इसी वजह से थोड़े अरसे में आलमे बाला पर तशरीफ ले गए और दूसरे पटका भी कमर मुबारक से निकल जाता था और चूंकि और अम्बिया अलै० को यह लताफत और दर्जे तज़किया हासिल न था लिहाज़ा जिस्मानी मेराज नहीं हुई।

## आग़ाज़ वाकेआ मेराज

अरबाबे खबर ने वुकू वाकेआ मेराज में अजीब नुकात व लताएफ लिखे हैं मुखतसर यह है कि, अल्लाह पाक को अपने महबूब की अज़मत का फरिश्तों और इन्सानों और जमी मख्लूक को जताना और अपनी कुरबत का खिलअत खास अता फरमाना और तमाम नबीयों पर शरफे इमतियाज़ बख्शना मनज़ूर था चुनांचे आलमे बाला की सैर के बारे



में सुबहानल लज़ी असरा और क़ुरबते इलाही की दलील में काबा कवैसने अब अदना और दीदारे जमाल ज़ुल जलाल के सुबूत में माज़ा ग़ल बसरु वमा तग़ा और आगाही इसरारे इलाही की गवाही में रमज़ फ़आवद इला अबदेही मा अवहा और एक अनवा रुल इमतिनाही की शहादत में इशारा वलक़दर आमनि आयात रब्बेहिल कुबरा दलील नातिक़ और बुरहाने सादिक़ है एक यह जब अल्लाह पाक ने ज़मीनो आसमान को पैदा किया तो दोनों में बहस हुई और हर एक अपनी अपनी बड़ाई की दलील लाया आसमान ने कहा मैं रफ़अत रखता हूं वस्समाए रफ़अहा ज़मीन ने कहा मैं बसत रखती हूं वज़ अलले अरदा बे सातन।

## नज़्म (सवालो जवाब)

*फ़लक बोला कि मुझमें माहे ख़ुर्शीद दरख़शां हैं*
*ज़मीं बोली कि मुझ में लाल हैं गुलहाए ख़नदां हैं*
*फ़लक बोला ज़मीं से मुझ में अनवारे इलाही हैं*
*ज़मीं बोली फ़लक से मुझ में असरारे इलाही हैं*

*फ़लक बोला कि मुझ में कहकशां तारों जड़ी होगी*
*ज़मीं हंस कर यह बोली मुझ में मोती की लड़ी होगी*
*फ़लक बोला घटा उड़ कर मेरी तुझ को घटा देगी*
*ज़मीं बोली कि मुझ को आजिज़ी तुझ से बढ़ा देगी*

*फ़लक बोला बुलन्दी दी ख़ुदा ने हर तरफ़ मुझ को*
*ज़मीं बोली मिला है ख़ाकसारी से शरफ़ मुझको*
*फ़लक बोला कि तारे मुझ में हैं तारों में ज़ीनत है*
*ज़मीं बोली कि गुन्चे मुझ में हैं गुन्चों में निकहत है*
*फ़लक बोला मेरे ऊपर मलाएक के महल होंगे*
*ज़मीं बोली कि मुझ पर बेल बूटे फूल फल होंगे*

*फ़लक बोला सितारों से मुज़य्यन मेरा सीना है*
*ज़मीं बोली कि मुझ पर तूर है मक्का मदीना है*
*फ़लक बोला कि मुझ पर कुरसी व अर्शेऊला होंगे*
*ज़मीं बोली कि मुझ पर औलिया व अंबिया होंगे*
*फ़लक बोला सितारों का मेरी मन्ज़िल में लश्कर है*
*ज़मीं बोली कि मस्जिद में मेरी अल्लाहु अक्बर है*

यह सुनकर आसमान ने कहा कि मैं हूं किलए फ़लक महल, अशरफ़ीए मकानेकुरसी, वसीए बामे जिब्रईल व मिकाईल, मसकन इसराफ़ील व इज़राईल, मए पेसरे मरयम मुक़ामे लौहो क़लम, मदरसए ईदरीस, बैतुल मामूर तक़दीस फिरतो ख़ाके नमनाक निहायत शर्मिंदा हुई और कई हज़ार साल बई हाल रही लेकिन जिस वक़्त जनाब सरवरे आलम सल्ल० पैदा हुए तो ज़मीन हज़ार नाज़ो इफ़तिख़ार से बोली कि ऐ फ़लक देख अब इस सुलताने दो जहां नबी आख़िरूज़ ज़मां के क़दमे पाक मुझ पर आए हैं कि जिसके सबब से अल्लाह पाक ने दोनों जहां बनाए हैं अब कह कि, मैं बड़ी हूं या तू अब बता कि, शराफ़त मुझे है या तुझे।

*मुझ पे पैदा हुए महबूबे खुदा या तुझ पर*
*अब हूं मैं रहमते आलम से सरफ़राज़ कि तू*
*मुझ पे हैं फ़ख़रे दो आलम के क़दम या तुझ पर*
*अब करूँ तालए बेदार पे मैं नाज़ कि तू*

आसमान ला जवाब हुआ और जनाबे इलाही में दुआ करने लगा कि, या रब्बुल आलमीन उस ख़ातिमुल मुरसलीन को यहां जलवागर फ़रमा और मेरी बुलन्दी को जो तूने बख़्शी है ख़ाक में न मिला अब मैं इस शराफ़त से ख़ाली हूं अगरचे लाख तरह ज़ाहिर में ज़मीन से



आला हूं। अल्लाह तआला ने आसमान की दुआ क़बूल फ़रमाई और आं हज़रत सल्ल० को मेराज में तलब करके आसमानों को भी शरफ़ बख़्शा। तो यह रात अजीब रात है इस रात की क्या बात है, अल्लाह पाक की रहमतों को बेहद वुजूल है हर किसी को नक़द मुददआ वुसूल है दोनों जहां में शाने करम का ज़हूर है, तबक़ाते ज़मीनो आसमान में नूर ही नूर है आज नेरगी का दुल्हा बेरंगी की दुल्हन से हम आग़ोश है ख़िलवतख़ाना तौहीद में फ़रहत व इमबिसात का जोश है जिस महबूब पर वादीए ऐमन में हज़ारों पर्दे थे आज बे नक़ाब है वह माशूक़ जिसकी अदना झलक से हज़रत मूसा को बेहोश किया था इस रात बे हिजाब है तालिब से मतलूब। मतलूब से तालिब मुसर्रत की ईद मिलते हैं गुनचहाए वस्ल इस तरह चटक चटक कर खिलते हैं।

*कमली ओढ़े हुए ऐ नाज़ के पाले आजा*
*सुरमा माजाग का आंखों में लगा ले आजा*
*ऐ मेरे आलमे रोया के उजाले आजा*
*ख़्वाब में ज़ुल्फ़ को मुखड़े से हटाले आजा*
*बेनक़ाब आज तो ऐ गेसूओं वाले आजा*
*अंबिया में से किसी ने न यह रुतबा पाया*
*तुझ पे अल्लाह है युसूफ़ पे ज़ुलेख़ा शैदा*
*कौन है अर्शे मकां कौन है शाहे दूसरा*
*कौन है माहे अरब कौन है महबूबे खुदा*
*ऐ दो आलम के हसीनों से निराले आजा*

सुबहानल्लाह क्या रुतबा है अल्लाह अल्लाह क्या बात है युसल्लून अलन नबी की हर तरफ़ धूम है बारिश अलताफ़े करम अलल असूम है ख़ुदा को चाहत चाहत को नबुवत, नबुवत को उम्मत, उम्मत को शफ़ाअत, शफ़ाअत को रहमत, रहमत को जन्नत, जन्नत को इशरत,

इशरत को हुरो ग़िलमान मुबारक बाद दे रहे हैं। नबी से वसलत, वसलत से ख़िलवत, ख़िलवत से जलवत, जलवत से राहत, राहत से फ़रहत फ़रहत से लज़्ज़त, लज़्ज़त से हैरत हैरत से मलए आला यह कह रहे हैं इलाहुल आलमीन आज क्या बात है जो दोनों जहां नुरून अलानूर हो रहा है।

## कसीदा मेराज शरीफ़

*दोनों आलम है नुरून अलानूर क्यों*
*कैसी रौनक़ फ़िज़ा आज की रात है*
*यह मुसर्रत है किसकी मुलाक़ात की*
*ईद का दिन है या आज की रात है*
*दिन भले हों तो दिल उसका मजबूर है*
*ज़ुल्फ़ शबगूमें हररोज़ उलझा रहे*
*ओढ़नी चांद तारों की ओढ़े हुए*
*लेलिए दिल रुबा आज की रात है*
*तूर चोटी को अपनी झुकाने लगा*
*चांदनी चांद हरसू बिछाने लगा*
*अर्श से फ़र्श तक जग मगाने लगा*
*रश्क सुबहे सबा आज की रात है*
*फ़र्श कौनों मकां में है कम ख़ाब का*
*है यह मानी कि सोना नहीं है रवा*
*सोने वालों को अक्सीर है जागना*
*जाग लो रत जगा आज की रात है*
*उसकी सूंघी जो बू इसकी देखी ज़िया*
*दिन फिरे दोनों के और नसीबा फिरा*
*आरिज़े शह पे क़ुरबान दिन आज का*
*ज़ुल्फ़ पर मुबतिला आज की रात है*



*वह हबीबे ख़ुदा सैयदुल मुरसलीं*
*ख़ातिमुल अम्बीया शाहे दुनिया व दीं*
*बज़मे कौनैन में होंगे मसनद नशीं*
*जशन मेराज का आज की रात है*
*तूर पर रफ़अते ला मकानी कहां*
*लनतरानी कहां मन रआनी कहां*
*जिसका साया नहीं उसका सानी कहां*
*इसका एक मोजिज़ा आज की रात है*

रिवायत है कि, जिस साल आपको नबुवत अता हुई है उससे बारहवें बरस में रजब की सत्ताईस तारीख़ शबे दो शम्बा को जनाबे ख़्वाजए आलम (सल्ल०) उम्मेहानी के घर ब असबाबे ज़ाहिर ख़्वाबे राहत में थे।

*ख़्वाबे राहत में थे उम्मे हानी के घर*
*आके जिब्रईल ने यह सुनाई ख़बर*
*चलिये चलिये शहनशाहे वाला गोहर*
*हक़ को शौक़े लका आज की रात है*
*जागो जागो शहनशाहे दुनिया वदीं*
*उठो उठो ज़रा ला मकां के मकीं*
*देखो देखो यह हाज़िर है रूहुल अमीं*
*रुह तुम पर फ़िदा आज की रात है*
*हुआ जिब्रईल को इरशाद है औजे मकां*
*ला मकां पर मेरे महबूब को ले आजा*

और हुक्म हुआ जिब्रइल (अलै०) को कि सिवाये तेरे तमाम फ़रिश्ते अपनी अपनी हद पर इसतिक़बाल के वास्ते इसतादा रहें जन्नत की हुरें आरास्ता व पैरास्ता हो जाएं जब तक हुक्म न हो सूरज निकलने न

पाए और चांद पहले आसमान पर रोशन रहे अर्श से फ़र्श तक नूर ही नूर हो जाए हरजड़ी और बूटी सर गर्म मुबारक बाद रहें कोह से काह तक शाद रहें।

*कोह से काह तक दिल में मसरूर हो*
*शर्क़ से ग़र्ब तक जलवए तूर हो*
*अर्शसे फ़र्श तक नूर ही नूर हो*
*लाख दिन से सिवा आज की रात है*

और ऐ जिब्रईल तमाम औलादे आदम की क़ब्रों से अज़ाब मौक़ूफ़ हो जाए और हज़रत आदम से हज़रत ईसा तक तमाम अंबिया हमारे महबूब की पेशवाई के वास्ते आमादा और मुस्तइद रहें।

*बुलावा है शबे मेराज है तफ़सील से कह दो*
*कहा हक़ ने मुहम्मद से कहे जिब्रईल से कह दो*
*कहो यूसुफ़ से आशिक़ हो ज़ुलेख़ा की तरह उस पर*
*हो क़ुरबां अबरुओं की उन पर इस्माईल से कह दो*
*पए ताज़ीम हाज़िर हो कि आता है मेरा प्यारा*
*रखे हाथों से अपने सूर इसराफ़ील से कह दो*
*करे सामाने तशरीफ़ आवरीए सरवरे आलम*
*न बांटें रिज़्क़ इतनी देर मिकाईल से कह दो*
*मेरा महबूब आता है क़दम बोसी को हाज़िर हो*
*करे मौक़ूफ़ क़ब्ज़े रूह इज़राईल से कह दो*
*मेरे महबूब की उम्मत उतर कर जाए जन्नत में*
*बिछा दे पर पुल सिराते हश्र पर जिब्रईल से कह दो*
*दो चंदाँ रोशनी होगी मेरा चांद आने वाला है*
*रहे रोशन यह हर एक अर्श पर कंदील से कह दो*
*बुलावे पर बुलावे आ रहे थे अर्श से अक्बर*



*मुहम्मद को यहां लायें बहुत ताज़ीम से कह दो*

अल हासिल जिब्रईल अमीन हुक्मे ख़ुदावंदी बजा लाए गुलज़ारे जन्नत से एक बुराक़ इन्तिख़ाब किया और वह बुराक़।

*हूर का चेहरा परी के पर तजल्ली बर्क़ की*
*दस्ते क़ुदरत से ख़ुदा ने ख़ुद बनाया था बुराक़*

## सिफते बुराक़

जैसा कि मेराजुन नबुवत में तहरीर है यानी बर्क़ रफ़्तार, आतिश किरदार, ज़ुहरा जबीं, ज़ररीनी, सियाहमुए मुबारकख़ू, आहू चश्म, अतारद मनज़र, सुरैया पैकर, दराज़ मिज़गां, गौहर दनदां, तंग दहन, सीमीं तन, सुबुकअनां, तेज़जोलां, ख़ुरशीद तलअत, कमर हैयत, आस्मां सैर गरदूं, तेर याक़ूत गरदन, मोसफ़्फ़ा बदन, ज़ुमुर्रद गोश, सरापा होश।

*आसमानों से नज़र बन के गुज़रने वाला*
*सबज़ए गुलशने फ़िरदौस का चरने वाला*
*नाज़नीन माहे जबीं, लाबतेचीं, ज़ीनतेदीं*
*गुल बदन रश्केचमन सैबे ज़क़न गुनचा दहन*
*हश्र भी बैठ गया पावं दबाने के लिये*
*इस ख़ुशामद में कि सिखूंगा तेरा चाल चलन*

बहज़ार अदब बेदार करके यह बुराक़ हज़रत जिब्रईल (अलै०) ने हुज़ूर में पेश किया और अर्ज़ किया।

*बर्क़ से तेज़ है यह बुराक़ आप का*
*क्योंकि ख़ालिक़ को है इशतेयाक़ आप का*

*अब नहीं देखा जाता है फ़िराक़ आप का*
*जल्द चलना रवा आज की रात है*

यह मुज़्दा सुन कर हज़रत ने तहारत का इरादा फ़रमाया हुक्म पहुंचा कि ऐ जिब्रईल हमारे महबूब के वास्ते हौज़े कौसर से पानी लाओ अभी बंदे कबा और तुक मए गिरेबां दानए हौज़ के रिज़वां दो सुराहियां याक़ूत की आबे कौसर से भरी हुई और एक तशत ज़ुमुर्रुदिन लेकर हाज़िर हुआ हज़रत ने आबे कौसर से ग़ुस्ल फ़रमाया। जिब्रईल ने हुल्लए नूरानी पहनाया अमामा नूरानी सर पर बांध रिदाए नूरानी उढ़ाई नालेन सब्ज़ पाए मुबारक में पहनाई पटका याक़ूत सुर्ख़ का कमर से बांधा, ताज़ीयाना सब्ज़ ज़ुमुर्रद का हाथ में दिया और हुज़ूर मस्जिदे हराम में तशरीफ़ ले गए मिकाईल व इसराफ़ील मय फ़रिश्तगाने हमराही ताज़ीम व तकरीम बजा लाए और जिब्रईल ने बाग पकड़ी मिकाईल ने रिकाब थामी इसराफ़ील ने गाशिया कंधे पर रखा और हुज़ूर सवार हुए अस्सी अस्सी हज़ार फ़रिश्ते दाएं बाएं नूर की क़नदीलों में काफ़ूर की बत्तीयां रोशन किये हुए साथ चले उस वक़्त अजीब बहार आ रही थी जिस वक़्त हुज़ूर की सवारी जा रही थी।

*बाग़े आलम में बादे बहारी चली*
*सरवरे अम्बिया की सवारी चली*
*यह सवारी सुए ज़ाते बारी चली*
*अब्रे रहमत उठा आज की रात है*
*जज़्बे हुसने तलब हर क़दम साथ है*
*दाएं बाएं फ़रिश्तों की बारात है*
*सर पे नूरानी सेहरे की क्या बात है*
*शाह दुल्हा बना आज की रात है*
*घात वह घात जिस घात में बात हो*



*बात वह बात जिस बात में बात हो*
*रात वह रात जिस रात में बात हो*
*लुत्फ़ इस बात का आज की रात है*
*कौन जाता है सुलताने दुनिया व दीं*
*किस तरफ़ अर्श पर ज़ात हक़्के क़रीं*
*लेने आए हैं यह कौन रुहुल अमीं*
*कब है वस्ले ख़ुदा आज की रात है*
*अतरे रहमत फ़रिश्ते छिड़कते चले*
*जिसकी ख़ुशबू से रस्ते महकते चले*
*चांद तारे जलों में चमकते चले*
*कहकशां ज़ेरपा आज की रात है*

अल गरज़ इस तज़्को एहतिशाम और धूम धाम से बैतुल मुक़द्दस में सवारी पहुंची तमाम अम्बिया अलै० और बेशुमार फ़रिश्ते तो हुज़ूर की पेशवाई के मुन्तज़िर थे तहीय्यत व सलाम बजा लाए मस्जिदे अक़्सा में हुज़ूर ने शुकराना अदा किया और उन सब ने इक़्तिदार किया। फिर वहां से आने वाहिद में पांच सौ बरस की राह तै फ़रमाकर पहले आसमान पर रौनक़ अफ़रोज़ हुए बे शुमार फ़रिश्तों को देखा कि सर्व क़द खड़े हुए तसबीह व तहलील में मसरूफ़ हैं हुज़ूर ने यह इबादत पसन्द फ़रमाई और यहां नमाज़ में क़याम फ़र्ज़ हुआ। उसी आसमान पर हज़रत आदम अलै० से मुलाक़ात हुई बाद तहीय्यत व सलाम के हज़रत आदम अलै० ने ख़ुश होकर दुआएं दीं इसके बाद बे इन्तिहा अजाएबात मुलाहिज़ा फ़रमाते हुए दूसरे आसमान पर तशरीफ़ ले गए और एक जमाअत फ़रिश्तों की देखी कि रूकू में झुके हुए हैं रूहुल अमीन ने अर्ज़ किया कि "या रसूलुल्ला जब से यह फ़रिश्ते पैदा हुए

हैं इसी इबादत में मशग़ूल हैं कभी और तरफ़ निगाह नहीं की।'' इस मुक़ाम पर रुकू नमाज़ में फ़र्ज़ हुआ और यहीं हज़रत यहया अलै० से मुलाक़ात हुई फिर तीसरे आसमान पर पहुंचे और यहां सब फ़रिश्तों को सिज्दे में मसरुफ़ पाया और तमाम फ़रिश्तों ने सिज्दे से सर उठाकर हुजूर को सलाम किया फिर उसी तरह इबादत में मशग़ूल हो गए यहीं हज़रत यूसुफ़ अलै० और हज़रत दाऊद अलै० और हज़रत सुलैमान अलै० से मुलाक़ात हुई उनहोंने कहा मुबारक हो या रसूलुल्लाह आप भी शफ़ाअते उम्मत में कोताही न फ़रमावें। फिर हुज़ूर ने अपने पाए मुबारक से चौथे आसमान को शरफ़ बख़्शा और बहुत से फ़रिश्तों को दो ज़ानों बैठे हुए तसबीहे इलाही में मुतवज्जह देखा यहां नमाज़ में क़ायदा आख़ीरी फ़र्ज़ हुआ और उसी आसमान पर हज़रत ईसा अलै० से मुसाफ़ा हुआ और जनाब मूसा अलै० से मुलाक़ात हुई और हज़रत मूसा अलै० ने ब कमाले मुसर्रत आप से कहा कि "शुक्र है उस ख़ुदाए जलील का कि जिसने आप का जमाल बा क़माल मुझे दिखलाया और आज आप को वह रुतबा हासिल है कि पहले किसी को हुआ न आइन्दा हो सकता है।

*और नबीयों का यह मर्तबा ही नहीं*
*अर्शे आज़म पे कोई गया ही नहीं*
*ऐसा रुतबा किसी को मिला ही नहीं*
*जैसा रुतबा तेरा आज की रात है*

या रसूलुल्लाह इस वक़्त रहमते इलाही जोश पर है जो कुछ चाहो मांगलो और उम्मत पर जो इबादत फ़र्ज़ की जाए उसकी कोताही में कोशिश कीजिए। हुज़ूर ने वसीयते हज़रत कलीमुल्लाह को मुतवज्जह होकर सुनी और याद रखी इसी आसमान पर बैतुल मामूर सैर करके दो नमाज़ नफ़िल अदा की और जिस तरह बैतुल मुक़द्दस में अम्बिया अलै० की आपने इमामत की थी यहां तमाम फ़रिश्तों ने आपके पीछे



नमाज़ पढ़ी जब हुज़ूर ने यह इजतिमा मुलाहिज़ा फ़रमाया तो दिल में आया काश ? मेरी उम्मत में भी मिस्ल इसके ज़ाहिर होती चुनांचे ईदुल मोमिनीन यानी जुमा का दिन अता हुआ।

मुसलमानों ! साबित हुआ कि यह नमाज़ वह अतीयए इलाही है कि पहले आसमानों के फ़रिश्तों का क़याम दूसरे आसमान वालों का रूकू और तीसरे आसमान वालों का सिज्दा चौथे आसमान वालों का क़ायदा इसमें शामिल है इन तमाम फ़रिश्तों की फ़जीलतें तुम्हें हर नमाज़ में हासिल है सख़्त अफ़सोस है उन पर जो इससे ग़ाफ़िल हैं मेराजुल मोमिनीन है पांचों वक़्त मुसलमान नमाज़ी को मेराज होती है मगर नमाज़ की तरह होनी चाहिए और जो इसका मज़ा लेकर पढ़ोगे तो वह लुत्फ़ हासिल होगा कि फिर कभी न छुटेगा इससे यहां भी भला होगा और वहां भी भला दुनिया में आफ़ियत व इज़्ज़त आख़िरत में फ़रहत व जन्नत।

*जन्नत में मकां अपना बनाते हैं नमाज़ी*
*मस्जिद में बड़े शौक़ से जाते हैं नमाज़ी*
*माबूद भी ख़ुश होता है महबूब भी राज़ी*
*सिज्दे के लिए सर को झुकाते हैं नमाज़ी*
*ख़िदमत के लिए हूर सुकूनत के लिए ख़ुल्द*
*फूले नहीं जामे में समाते हैं नमाज़ी*
*कहता है यह दरवाज़े पे दरोग़ए जन्नत*
*हट जाओ कि फ़िरदौस में आते हैं नमाज़ी*
*हुरें हैं लिए हाथ में हर रंग के मेवे*
*फल अपनी नमाज़ों का यह पाते हैं नमाज़ी*
*ज़ुहर व सहर व अस्र को मग़रिब को इशा को*
*अल्लाह के दरबार में जाते हैं नमाज़ी*
*सिज्दे का निशां चांदसा रोशन है जबीं पर*

*हुराने बहिश्ती को लुभाते हैं नमाज़ी*
*डरते हैं क़ज़ा होने से मिटते हैं अदा पर*
*जान अपनी नमाज़ों में लड़ाते हैं नमाज़ी*
*हुराने जिनां कहती हैं अक्बर से कि सरकार*
*लो तुम भी चलो ख़ुल्द में जाते हैं नमाज़ी*

ख़ैर जब हुज़ूर पांचवें आसमान पर पहुंचे तो हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल और हज़रत ईस्हाक़ और हज़रत याक़ूब और हज़रत लूत अलै० से मुलाक़ात हुई और सबने मुसाफ़ा किया और ख़ुश होकर दुआ दी फिर हुज़ूर छटे आसमान पर हज़रत नूह और हज़रत इदरीस से मिले और मुसाफ़ा किया और ख़ुश होकर दुआ दी फिर हुज़ूर सातवें आसमान के अजायब व ग़रायब मुलाहिज़ा फ़रमाते हुए सिदरतुल मुनतहा तक पहुंचे हज़रत जिब्रईल अलै० अपने, मुक़ाम से रुख़सत होने लगे तो हुज़ूर ने फ़रमाया।

*चूं दर दोस्ती मुख लिसम याफ़ती*
*अनानम ज़े सुहबत चरा ताफ़ती*

जिब्रइल ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह अगर.....

*यकसरे मुए बरतर परम*
*फ़रोग़े तजल्ली बसोज़द परम*

फिर हुज़ूर ने सत्तर हज़ार पर्दे उसके तै किए यहां तक कि बुराक़ भी चलने से आरी हुआ फिर रफ़्ता रफ़्ता अर्श के क़रीब पहुंच कर ग़ायब हो गया। और निदाएं आने लगीं।

*हुक्म था ऐ फ़लक अब क़दम चूम ले*
*झुक के हर एक मलक अब क़दम चूम ले*
*अर्श से कह दियाअब क़दम चूम ले*



*तुझ पे शाहे दुना आज की रात है*
*चांद हाला है इस रुए बेदाग़ का*
*इसकी आंखों में सुरमा है माजाग का*
*यह वही गुल है तौहीद के बाग़ का*
*जिसकी ज़ुल्फ़े दुता आज की रात है*
*ख़िलवते ख़ास में यह हुज़ूरी हुई*
*क़ुर्ब ही क़ुर्ब था दूर दूरी हुई*
*थी जो दिल में तमन्ना वह पूरी हुई*
*दीदए शौक़ वा आज की रात है*

लिखा है कि जब हुज़ूर अर्श के क़रीब पहुंचे हुक्म हुआ कि ऐ 'मेरे महबूब आगे आओ।'' उस वक़्त हुज़ूर ने चाहा कि नालेन पाए मुबारक से उतारे अर्श हिलने लगा हुक्म हुआ "हबीब मेरे नालेन न उतारो बल्कि पहने चले आओ ताकि अर्श क़रार पकड़े।'' हुज़ूर ने अर्ज़ किया ख़ुदावन्दा। मूसा को हुक्म हुआ था कि पहले चालीस रोज़े रखो और नालेन उतार कर कोहेतूर पर आओ पस अर्श तो कोहे तूर से कहीं ज़्यादा मोअज़्ज़म और पुरनूर है फिर नालेन क्यों न उतारूं ख़िताब आया कि "महबूब मेरे मूसा को इस वास्ते नालेन उतारने का हुक्म दिया था कि ख़ाक वादीए मुक़द्दस की उसके पावं में लगे ताकि उसको बज़ुर्गी हासिल हो और तुझ को इस वास्ते नालेन उतारने का हुक्म नहीं कि तेरी नालेन की ख़ाक से अर्श मजीद को बुज़ुर्गी हासिल होगी। दूसरे यह कि जब मैं ने अर्श को बनाया था उसे क़रार न था और हमेशा जुम्बिश करता था मैं ने उससे वादा किया था कि एक रात हम अपने महबूब को बुलाएंगे और उसकी नालेन का गोशवारा तुझ को अता फ़रमायेंगे तब इसको क़रार हुआ और उसी वक़्त से अर्श **बरीं नालेन** का मुशताक़ है।''

*अल्लाह रे ज़ीनत तेरी ऐ अर्शे मोअल्ला*
*झूमर है तेरा नक़्शे कफ़े पाए मुहम्मद*
*सब नबियों के सर पर तो हुआ अर्श का पाया*
*और अर्श की चोटी पे कफ़े पाए मुहम्मद*

फिर इरशादे इलाही हुआ कि "महबूब आओ तुम्हें अपनी सलतनत का दुल्हा दिखाएं "और एक आलीशान मकान दिखाया शेह नसीं पर पर्दा पड़ा था जब हिजाब उठाया तो क्या देखते हैं कि कहां खुद हुज़ूर पुरनूर की तस्वीर जलवा अफ़रोज़ है। सुबहानल्लाह

## अशआर

*है एक मकां और एक मकीं तू और नहीं मैं और नहीं*
*फिर क्यों न हो दिल में साफ़ यक़ीं तू और नहीं मैं और नहीं*
*अब छुपने से होता है क्या पहचान लिया पहचान लिया*
*बस धोका न दे ओ पर्दा नशीं तू और नहीं मैं और नहीं*

ऐ आशिक़ाने मुहम्मद सल्ल० मुक़ामे ग़ौर है कि इस प्यारे मज़मून को किस पैराए में अदा किया है अगर यूंही इरशाद होता कि तुम सारी सलतनत के दुल्हा हो तो वह बात न होती कि अव्वल शौक़ यूं दिलाया जाए फिर तस्वीर दिखाई जाए अल्लाह अल्लाह।

## ❁ कसीदा ❁

*हुई अर्श आज़म पे जिस दम रसाई*
*न था कुछ बजुज़ जलवए किबरियाई*
*जलाले इलाही से हैबत जो छाई*
*रुके शहतो पर्दे से आवाज़ आई*



*कि परदे में आ तुझ से पर्दा नहीं है*
*शबे मेराज में क्या लुत्फ़ था अल्लाहु ग़नी*
*ख़ुद कहा ख़ालिक़े अकबर ने कि ऐ प्यारे नबी*
*दोनों आलम के ख़ज़ानों की तुझे दी कुन्जी*
*वक़्फ़ है तेरे लिए दौलते कन्जे मख़फ़ी*
*खुल गए हफ़्त समावात के ताले आजा*
*कि पर्दे में आ तुझ से पर्दा नहीं है*
*मुत्तसिल अर्श के जब वह शहे बतहा गुज़रा*
*बोले क़ुदसी कि वह अल्लाह का प्यारा आया*
*धूम थी चार तरफ़ सल्ले अला सल्ले अला*
*पहुंचा महबूब तो मशीयते रहमत ने कहा*
*ख़िलवते राज़ में ऐ नाज़ के पाले आजा*
*कि पर्दे में आ तुझ से पर्दा नहीं है*
*गुले ख़ूबी है तू और गुलशने वहदत है यहां*
*जिस की सूरत है तू उस हुस्न की सीरत है यहां*
*मायए नाज़ है तूआइए उलफ़त है यहां*
*रंगे वहदत है यहां गुनचए ख़िलवत है यहां*
*ऐ गुले गुलशने लौलाक़ लमा के आजा*
*कि पर्दे में आ तुझ से पर्दा नहीं है*
*ख़िलवते राज़ से फिर अर्श पे आवाज़ आई*
*मेरे महबूब ख़ुश असलूबे रसूले अरबी*
*ऐ मेरे लाडले ऐ हाशमी मुत्तलबी*
*हम ने ख़ुश होके तुझे सारी ख़ुदाई बख़्शी*
*अपने बंदों को किया तेरे हवाले आजा*
*कि पर्दे में आ तुझ से पर्दा नहीं है*
*हमने देखा तुझे तू देख हमारा जल्वा*
*बे तकल्लुफ़ यहां पहने हुए नालेन आजा*

आभी जा तालिब व मतलूब में पर्दा कैसा
ला मकां अपना मकां अर्श समझ फ़र्श अपना
तू हमारा तेरे हम चाहने वाले आजा
कि पर्दे में आ तुझ से पर्दा नहीं है
वह नूरे इलाही यह नूरे पयम्बर
यह सल्ले अला और वह अल्लाहु अक्बर
जो देखा तो है सब हसीनों से बेहतर
कहा फिर तो आग़ोशे रहमत में आजा
जो तेरा नहीं है वह मेरा नहीं है
उन्हें अर्श तक ले गई होश मंदी
हुई अर्श से फ़र्श तक नक़्श बन्दी
ख़ुदी से गुज़र कर मिली ख़ुद पसन्दी
यह कहती थी मेराज शेह की बुलन्दी
कि आलम कोई इससे बाला नहीं है
कहा हक़ ने फिर यहाँ जो चाहो सो है
सजी मसनदे अर्श आराम को है
दिया मैंने तुझ को मेरे पास जो है
पर क्या कहूं आलमे गोमगो है
ख़ुदा जाने क्या बात है क्या नहीं है
वह अर्शे बरीं पर गए चुपके चुपके
जो राज़े दिली थे कहे चुपके चुपके
कहा हक़ ने इक़रार दे चुपके चुपके
मज़ा नूरे मख़फ़ी का ले चुपके चुपके
घड़ी नेक है इसमें खटका नहीं है
है आशिक़ का ज़ेवर सदा दर्द सहना
पहन लो नबी की मुहब्बत का गहना



हमेशा नहीं बाग़े आलम में रहना
चलो वादीये इश्क़ में पा बरहना
यह जंगल वह है जिसमें कांटा नहीं है
सवा नेज़े पर हो गया मेहर रोशन
यह हंगामए हश्र है कहर अफ़गन
यहां नफ़सी नफ़सी में है मर्द और ज़न
क़ियामत में दूं किस तरह छोड़ दामन
कि इस भीड़ में कोई मेरा नहीं है

फ़रमातें हैं ख़्वाजाए दो आलम सल्ल० कि देखा मैं ने अर्श के क़रीब पहुंच कर एक अमरे अज़ीम के ज़बानें उसका वस्फ़ न कर सकें और इसी हालते शौक़ ज़ौक़ में मेरा रुंगटा रुंगटा महवे लक़ाए किबरीया था एक क़तरा अर्शे बरीं से मेरी ज़बान परगिरा जो कमाले शीरीं और बहुत सफ़ेद था उस वक़्त मुझ को इल्मे अव्वलीन व आख़ेरीन मरहमत हुआ और मेरा दिल इससे रौशन और नूरानी हो गया उस वक़्त मेरे परवर दिगार ने मुझ को वह दिखाया जो न देखा था किसी नज़र ने और न सुना था किसी गोशे बशर ने।

अर्श से एक क़तरा ज़बां पर गिरा
इल्म हर शै का उस वक़्त हासिल हुआ
फिर तो देखा जो देखा सुना जो सुना
गो मगो माजरा आज की रात है
जिस मकां पर फ़रिश्तों के जलते हैं पर
इसमें राज़ो न्याज़ो बशीरो बशर
नाज़ो अन्दाज़ इधर उनो मिन्नी उधर
हर अदा में अदा आज की रात है

*फिर कहा हक़ ने जलवा मेरा देख ले*
*वह मुझे देख ले जो तुझे देखले*
*मैं तुझे देख लूं तू मुझें देख ले*
*देखने का मज़ा आज की रात है*
*तू न मुझ से अलग मैं न तुझ से जुदा*
*तुझ से जो मिल चुका है वह मुझ से मिला*
*और जो तुझ से गया है वह मुझ से गया*
*बस यही फ़ैसला आज की रात है*

चूंकि उस वक़्त रहमते इलाही अपने जौहर दिखा रही थी तो हुज़ूर ने भी शफ़ाअत के दफ़्तर खोल दिये।

*इस तरफ़ रहमते हक़ के जौहर खुले*
*उस तरफ़ से शफ़ाअत के दफ़्तर खुले*
*कह दिया देख है फ़ैज़ के दर खुले*
*मांग जो मांगना आज की रात है*

अर्ज़ किया जनाबे सरवरे आलम सल्ल० ने कि इलाही उम्मते आसीकी मगफ़ेरत चाहता हूं। इरशाद हुआ "सत्तर हज़ार तेरे वास्ते बख़्शे और क्या चाहता है" अर्ज़ किया "या रब्बिल आलमीन उम्मते आसी की वख़्शिश फ़रमा" सत्तर हज़ार और बख़्शे अब और मांग क्या मांगते हो।"

*शह ने फ़रमाया उम्मत गुनहगार है*
*बख़्श दे मेरे मालिक तू ग़फ़्फ़ार है*
*तुझ को आसान है मुझ को दुशवार है*
*फ़िकर रोज़े जज़ा आज की रात है*
*फिर यह हक़ ने कहा माह पारे नबी*
*तू मेरा चांद है और तारे नबी*



*ऐसा घबरा न ऐ मेरे प्यारे नबी*
*ऐसी जल्दी ही क्या आज की रात है*

रावी लिखता है कि सात सौ बार जनाबे बारी से यही ख़िताब हुआ कि "हबीब मेरे और क्या चाहता है।" और हर बार हुज़ूर ने यही अर्ज़ किया "या ग़फ़ूरूर रहीम उम्मते गुनहगार की नजात फ़रमा" इरशाद हुआ "महबूब मेरे कब तक उम्मते आसीकी मग़फ़िरत तलब करोगे अर्ज़ किया हुज़ूर ने कि या इलाहुल आलमीन तलब, करने वाला मैं हूं और बख़्शने वाला तू है।" हुक्म हुआ महबूब मेरे अगर आज ही सब उम्मत बख़्श दूं तो क़ियामत में क्या लुत्फ़ आयेगा ऐ प्यारे।"

*लुत्फ़ जब है कि देखेंगे सारे नबी*
*तेरी उम्मत पर यह सब हैं रहमत मेरी*
*बख़्श दूंगा क़ियामत में उम्मत तेरी*
*तुझ से वादा मेरा आज की रात है*
*तुझसे बन्दा मेरा अगर कोई फिर गया*
*तबक़ए नारे दोज़ख में वह गिर गया*
*और जो ईमान लाया वही तिर गया*
*यह मेरा मुददआ आज की रात है*

हुज़ूर पुर नूर फ़रमाते हैं कि अल्लाह पाक ने अपनी सनामें इन कलिमों के कहने का हुक्म फ़रमाया (अत्तहीयातु लिल्लाहे वस सल वातु वत तैयेबातु जब यह तारीफ़ अर्ज़ की गई तो ख़िताब हुआ, अस्सलामु अलैक अइयु हन्नबीयु व रहमतुल्लाहे व बर कातुहू) उस वक़्त भी हुज़ूर ने अपनी उम्मत को याद फ़रमाकर उस सलाम के जवाब में अर्ज़ किया (अस्सलामु अलै ना व अला इबादिल्ला हिस्सा लेहीन)

*हाए अक्बर है गुनहगारों का किस दर्जे ख़्याल*
*ऐश में भी उन्हें उम्मत की पड़ी आज की रात है*

फिर जिस वक़्त मलाएक मुक़र्रबीन को आं हज़रत सल्ल० का रुतबए इख़तिसास मालूम हुआ तो सबने अशहदु अल ला इलाह इल्लल्लाहु व अश हदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू कहा

*लुत्फ़ दिल में ख़ुदा की मुलाक़ात के*
*ज़ायेका होंट पर अत्तहीय्यात के*
*ज़मज़मे ख़ुशज़बां पर मुनाजात के*
*फ़ैज़ का दर खुला आज की रात है*

फिर हुक्म हुआ हबीब मेरे जब कोई सफ़र से घर जाता है उनके लिये तोहफ़ा ज़रूर ले जाता है यह जो कुछ मैंने और तूने और फ़रिश्तों ने कहा यह मेरी तरफ़ से मेरे बन्दों को बे क़ीमत तोहफ़ा है हर नमाज़ में पढ़ा करें।

*सब नमाज़ और रोज़ा सिखा दीजिये*
*बाग़े जन्नत का मुज़दा सुना दीजिये*
*क़ायदे बंदगी के बता दीजिए*
*मैंने जो कुछ कहा आज की रात है*
*कहना आख़िर यहां भी है आना तुम्हें*
*एक दिन है मुझे मुंह दिखाना तुम्हें*
*फिर न सूझेगा हिला बहाना तुम्हें*
*देखो समझा दिया आज की रात है*

फिर हुज़ूर ने हज़रत मूसा अलै० की वसीयत को याद करके इबादत की तख़फ़ीफ़ में बहुत सई (कोशिश) की जो जनाबे बारी में क़बूल हुई और इस तरह दुआ की, दुआ यह है:-

"रब्बना ला तुआख़िज़ना इन नसीना अव अख़ताना रब्बना वला तहमिल अलैना इसरन कमा हमल तहू अलल्लज़ीन मिन क़बलेना रब्बना वला तुहममिलना माला ता कत लना बेही, वअफ़ु अन्ना वग़फ़िर लना



वर हमना अन्त मौलाना फ़न सुरना अलल क़ौमिल काफ़ेरीन।"

*फिर हुआ हुक्म कि सैरे जन्नत करो*
*और मकानात उम्मत के सब देखलो*
*और जो कुछ ज़रूरत हो हमसे कहो*
*बाबे रहमत खुला आज की रात है*
*दोनों आलम में सल्ले अला का है गुल*
*कलिमा सुन कर दरे ख़ुल्द जाते हैं खुल*
*बाग़े जन्नत में जाता है वहदत का गुल*
*ठन्डी ठन्डी हवा आज की रात है*
*आमद आमद की जन्नत में धूमें मचीं*
*हुरें ताज़ीम के वास्ते झुक गईं*
*बुलबुलें फूल की डालियां ले चलीं*
*हर तरफ़ मरहबा आज की रात है*
*देखा जन्नत में जाकर हैं नहरें रवां*
*मोतियों के मुर्सलए मुकल्लफ़ मकां*
*उन मकानात में याक़ूत के साएबान*
*बोले क्या क्या अता आज की रात है*

जन्नत में हुज़ूर तरह तरह की नेमतें देख कर शुक्र बजा लाए और जब तमाम अजायब व ग़रायब आसमानों के और जन्नत के ऐवानों के मुलाहिज़ा फ़रमा चुके और हर मक़सदे दिल पा चुके तो।

*हर मुरादे दिली हक़ से मिलती रही*
*वापिस आए कली दिल की खिलती रही*
*बिसतरा गर्म ज़न्जीर हिलती रही*
*यह अजब मोजिज़ा आज की रात है*
*मोजिज़ा यह मुहम्मद का तहक़ीक़ है*
*जिसने तसदीक़ की है वह सिद्दीक़ है*

*और जो मुनकिर है जाहिल है जिनदीक है*
*वह अदुए ख़ुदा आज की रात है*
*नेज़अमें क़ब्र में हश्र में ऐ ख़ुदा*
*सख़्ती व तंगी व पुरसिशे जुर्म का*
*ख़ौफ़ अक्बर को रहता है बे इन्तिहा*
*फ़ज़्ल करना दुआ आज की रात है*

जब हुज़ूर वापिस तशरीफ़ लाए तो हरमे नबवी में दरो दीवार शजर व हजर व मलाइका सर गर्म मुबारक बाद थे।

## (14) बयान वफ़ात रसूले करीम

### सल्लल्लाहु अलैह व सल्लम

ख़ुलासा हाल बयाने वफ़ात हज़रत ख़्वाजए कायनात सल्लल्लाहु अलैहे व सल्लम यह है कि जब आप की उम्र शरीफ़ तिरसठ बरस की हुई तो बारह रोज़ बुख़ार और सर के दर्द से बीमार हुए एक रिवायत में 14 दिन और एक में 19 दिन तबीयत मुबारिक अलील रही- इस अरसे में तीन मर्तबा जिब्रईल अलैहिस्सलाम अयादत को आये और कहा कि हक़ तआला ने आप को सलाम भेजा है और मिज़ाज पूछा है- और बहिश्त का अनार आप को लाकर दिया-और बीमारी की हालत में भी आपने नमाज़े जमाअत तर्क न की- मगर तीन रोज़ जब दर्दे सर और बुख़ार की बहुत शिद्दत हुई तो आप मकान से बाहर तशरीफ़ नहीं लाए और हुक्म दिया कि अबूबकर नमाज़ पढ़ायें और चालीस लौंडी ग़ुलाम अल्लाह के वास्ते आज़ाद किये और सात अशरफ़ियां लिल्लाह तक़सीम कर दी।

जब इन्तिक़ाल के तीन रोज़ बाक़ी रहे - जुमेरात के रोज़ आप मकान के बाहर तशरीफ़ लाए उस वक़्त सरे मुबारक में पट्टी बंधी थी और चेहरे मुबारक ज़र्द था फिर मस्जिद में आकर मिम्बर पर



रौनक़ अफ़रोज़ हुए और हज़रत बिलाल को हुक्म दिया कि लोगों में मनादी कर दो ताकि सब लोग जमा हों और आख़िरी वसीयत सुन लें- बिलाल ज़ारो क़तार रोते हुए शहर में मनादी करने लगे यह बात सुनते ही तमाम छोटे बड़े मकानों के खुले दरवाज़े छोड़ कर दौड़ पड़े' आप ने मिम्बर पर चढ़ कर ख़ुतबा बलीग़ पढ़ा और फ़रमाया मुसलमानों मैं ने तुम को ख़ुदा के सुपुर्द किया और ताकीदे नमाज़ फ़रमाई और फ़रमाया कि मैं अन्क़रीब दुनिया से जाने वाला हूं - यह बात सुनकर तमाम लोग रोने लगे आपने तसल्ली फ़रमाई रिवायत है कि इन्तिक़ाल के वक़्त जिब्रईल आए और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह मलकुल मौत दर्वाज़े पर खड़ा है और आने की इजाज़त मांगता है, फ़रमाया आने दो- मलकुल मौत हाज़िर हुए और कहा अस्सलामु अलैकुम या रसूलुल्लाह अलैहे व सल्लम हक़ तआला ने मुझ को आप का फ़रमां बरदार करके भेजा है हुक्म हो तो रूह क़ब्ज़ करूं वरना उलटा वापिस जाऊं- आप ने फ़रमाया- नहीं शौक़ से अपना काम कर।

**रिवायत है** जब मलकुल मौत क़ब्ज़ रूह के वास्त हाज़िर हुए उस वक़्त जनाब सैयदना सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत आइशा सिद्दीक़ा के सीन-ए-मुबारक से तकिया लगाए हुए थे और प्याला पानी का आप के सामने रखा था बार बार उसमें हाथ डालते और मुंह पर मलते थे और फ़रमाते थे.....

**लाइलाह इल्लल्लाह इन्नल मौत**

**यानी :-** नहीं कोई माबूद सिवाये अल्लाह के बेशक मौत की सख़्तियां हैं। फिर हाथ उठाया और दुआ मांगते हुये जन्नत को सिधारे।

**इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजेऊन**

उस दिन शहर मदीना बल्कि तमाम आलम में अंधेरा छा गया और वफ़ात के वक़्त हज़रत अबूबकर हाज़िर न थे बाद वफ़ात आए और हुज़ूर के चेहरे अनवर से कपड़ा हटा कर पेशानी मुबारक को चूम लिया फिर उस वक़्त फ़रिश्तों ने आप को चादर उढ़ा दी मलकुल मौत रोये और चिल्ला कर कहा वा मुहम्मद उस वक़्त अहले बैत और सहाबा-एकराम पर जो आपके फ़िराक़ का सदमा गुज़रा उसका

तो क्या बयान हो सके जानवरों का यह हाल था कि खाना पीना छोड़ दिया था यहां तक कि ग़ज़बा आप की ऊंटनी जो हज़रत फ़ातिमा के पास थी उसने खाना पीना छोड़ दिया और एक रात को ख़ातूने महशर मकान से बाहर तशरीफ़ लाई जैसे रसूलुल्लाह रात को नमाज़ के वास्ते उठा करते थे उस वक़्त ऊंटनी ने बीबी फ़ातिमा को देखकर सलाम किया फिर बोली ऐ बीबी जब से हज़रत रसूलुल्लाह दुनिया से सिधारे हैं मैंने न चारा खाया न पानी पिया और मेरी मौत आन पहुंची तुम्हारे बाप के पास जाती हूं जो कुछ पैग़ाम कहना हो फ़रमा दीजिए बीबी फ़ातिमा यह बात सुनकर रोने लगीं और ऊंटनी को गले से लगाया ऊंटनी ने उसी दम आप की गोद में अपना सर रखकर इन्तिक़ाल किया सुबह को हज़रत फ़ातिमा ने उसको कफ़न दिलवाया और क़ब्र में दफ़न करा दिया सात रोज़ बाद लोगों ने खोद कर देखा तो उसकी हड्डी चमड़े का निशान कहीं न पाया।

*रब्बे सल्लिम अला रसूलुल्लाह*
*मरहबा मरहबा रसूलुल्लाह*

और अहले बैत उज़्ज़ाम और सहाबा एकराम का हाल तो बयान से बाहर है- कि बाज़े मारे ग़म के दीवाने हो गए और बाज़े जंगल को निकल गए और बाज़े सुन हो गए। जैसे अली मुरतज़ा और हज़रत उस्मान को चुप लग गई दीवानों की तरह हर एक का मुंह तकते थे- और उमर फ़ारूक़ ने नंगी तल्वार हाथ में लेकर फ़रमाया कि कोई कहेगा कि पैग़म्बरे ख़ुदा ने इन्तिक़ाल किया तो उसको क़त्ल कर डालूंगा हज़रत सिद्दीक़ अक्बर ने बहुत समझाया और यह आयत पढ़ी (इन्नक मय्यत: व अन्तुम मय्यतून) यानी बेशक तू इन्तिक़ाल करेगा और वह लोग भी मरेंगे तब हज़रत उमर ने तल्वार म्यान में की।

हज़रत हसन और हुसैन शहीदे करबला की बेक़रारी और सदमे के बयान की किसकी ताक़त है जो लिखे- हज़रत बिलाल का आप की फ़ुर्क़त में यह हाल था कि मदीना मुनव्वरा से मुल्के शाम को जाते और बेक़रार होकर वापस आते ग़रज़ कि हर एक की हालत जो हबीबे ख़ुदा के फ़िराक़ और जुदाई में थी बयान से बाहर है।

*भेज ऐ रब मेरे दुरूदो सलाम,*
*बर गुज़ीदह नबी पर अपने मुदाम*



# अशआर

मिसकी तू पढ़ ले आज मुहम्मद पे फ़ातिहा
ख़ुश होगी तुझ से रह जनाबे रसूल आज
या रब फ़ैले ज़ाते मुहम्मद शफ़ीए ख़ैर
होवे हमें सआदते उक़बा हुसूल आज
ज़िकरे नबी में दौलते उकबा कमायेंगे
दुनिया में क्या कमायेंगे हम खाक धूल आज
या रब मेरे नसीब कुछ ऐसे नसीब हैं
दरगाहे मुस्तफ़ा पे चढ़ाऊं मैं फूल आज
सिज्दे में हक़ के जाके करूं यह बदिल दुआ
सदक़े में मुस्तफ़ा के हो शायद क़बूल आज

## मुनाजात बदरगाहे काज़ीउल हाजात

*मोमीनों वक़्त रहमते रब है*
*अब वह मांगो जो दिल का मतलब है*
*सबको रब्बे ग़फ़ूर देता है*
*है वह दाता ज़रूर देता है*
*यूं करो अर्ज़ ऐ करम वाले*
*हाथ फैला रहे हैं ग़म वाले*
*है ग़फ़ूरूर रहीम तेरा नाम*
*बख़्शना है क़दीम तेरा काम*
*तू ही दैरो हरम का है वाली*
*तुझ से कोई जगह नहीं खाली*
*दर्द मन्दों के दुख में साथ है तू*
*कुल का हल्लाले मुश्किलात है तू*
*है तू दुखे दिलों का चारा साज़*
*वारिसे बेकसां ग़रीब नवाज़*

बात बिगड़ी हुई बनाता है
नाव डूबी हुई तिराता है
मैकदों वाले मारेफ़त वाले
सब तेरे इश्क़ में हैं मतवाले
बतुफ़ैले मुहम्मदे अरबी
बहरे असहाब पाक व आले नबी
बख़्श अक़ले हलाल व सिदक़े मकाल
नेक खू साफ़ क़ल्ब पाक ख़्याल
नाज़ है तुझपे तेरे बन्दों को
दे मुरादें मुराद मन्दों को
दोनों आलम में आबरू देना
अपने बन्दों के ऐब ढक लेना
जो कि औलाद के हैं ख़्वाहिशमंद
दे खुदा उनको दुख़्तरो फ़रज़न्द
भर के पैमानए शरीअत दे
अपने महबूब की मुहब्बत दे
ले ख़बर हम तबाह कारोंकी
मग़फ़िरत कर गुनाहगारों की
हां दिखा दे बहार जीने की
हो ज़ियारत हमें मदीने की
नज़अ में राहज़न नहो शैतां
नाम हज़रत का लेके देदूं जां
बाप, माँ भाई और कुल मोमिन
बख़्श देना ख़ुदा जज़ाके दिन
तेरे महबूब की हैं उम्मत में
शर्म रख लीजियो क़ियामत में
जिस जगह मोमिनों का मदफ़न हो
वहां मुहम्मद का नूर रौशन हो



हों न मीज़ाने अदल पर हलके
पुल से एक पल में पार हों चल के
हो क़ियामत में क़ाज़ीयुल हाजात
आल व असहाबे मुस्तफ़ा का साथ
गर मुहम्मद का साथ हो जाए
फिर तो बेशक नजात हो जाए
या मुहम्मद मैं लूं अदमकी राह
कहते ही लाइलाह इल्लल्लाह
आपके नाम पर मैं मर जाऊं
आशिक़ोंमें यह नाम कर जाऊं
पूरा या रब तुफ़ैले अहमद हो
बानीए बज़्मका जो मक़सद हो
जिस क़दर हाज़रीने महफ़िल हों
सबकी या रब मुरादें हासिल हों
यहां फूले फले चमन सबका
वहां जन्नत में हो वतन सबका
पढ़ने वाले भी शाद ख़ुर्रम हों
दीन दुनियाके ग़म से बे ग़म हों
ऐ ख़ुदा सदक़ा आले अतहर का
ख़ातिमा हो बख़ैर अकबर का
रब्बे सल्लिम अला रसूलुल्लाह
मरहबा मरहबा रसूलुल्लाह

## ❋ क़सीदा ❋

मदीना हमारा वतन हो इलाही
मेरी रूह वां और तन हो इलाही
मदीने में लाशा पड़ा हो हमारा
मुयस्सर न गोरोकफ़न हो इलाही

उठे झूमता अब्र उन के करम का
शफ़ाअत की पड़ती भरन हो इलाही
क़ियामत में साया नबी के करम का
मेरे सर पे साया फ़िगन हो इलाही
वह आराम पाऊं कि मर्कदकी मंज़िल
मुझे पहले शब की दुल्हन हो इलाही

## ❁ क़सीदा ❁

नार में नूर जलवा नुमा हा गया
था जो दोज़ख़ चमन खुल्द का हो गया
एक की खाल मुल्तां में खींची गई
एक कल्यर में हक़ पर फ़िदा हो गया
एक देहली में जाकर निज़ामी बना
एक गंजे शकर बा ख़ुदा हो गया
एक का जिस्म कीड़ों ने छलनी किया
एक आरे से चिरकर फ़ना हो गया
एक दारे शरीअत पे खींचा गया
एक का तेग़ा से सर जुदा हो गया
एक अर्शेबरीं पर ख़ुदा से मिला
एक का तूर पर सामना हो गया
एक क़लंदर हुआ एक ख़्वाजा क़ुतुब
एक को मर्तबा ग़ौस का हो गया
एक लैला के ग़म में हुआ मुबतिला
एक शीरीं के ग़म में फ़ना हो गया
जो न देखा था हक़ने वह दिखला दिया
एक पैदा हुआ एक फ़ना हो गया
एक के हलक़ तिश्ना पे ख़ंजर चला
एक का ज़हर से ख़ातमा हो गया